

विश्व कल्याणकारी बनने के लिए सर्व स्मृतियों से सम्पन्न बन सर्व को सहयोग दो

सदा विश्व कल्याणकारी अव्यक्त बाप दादा अपने बच्चों प्रति बोले :

आज समर्थ बाप अपने स्मृति स्वरूप बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। विश्व के देश एवं विदेश के सर्व बच्चे स्मृति दिवस मना रहे हैं। आज का स्मृति दिवस बच्चों को अपने ब्राह्मण जीवन अर्थात् समर्थ जीवन की स्मृति दिलाते हैं क्योंकि ब्रह्मा बाप की जीवन कहानी के साथ ब्राह्मण बच्चों की भी जीवन कहानी है। निराकार बाप ने साकार ब्रह्मा के साथ ब्राह्मण रचे। तब ही ब्राह्मणों द्वारा अविनाशी यज्ञ की रचना हुई। ब्रह्मा बाप आप ब्राह्मणों के साथ-साथ स्थापना के निमित्त बने, तो ब्रह्मा बाप के साथ आदि ब्राह्मणों की भी जीवन कहानी है। आदि देव ब्रह्मा और आदि ब्राह्मण दोनों का महत्व यज्ञ स्थापना में रहा। अनादि बाप ने आदि देव ब्रह्मा द्वारा आदि ब्राह्मणों की रचना की। और आदि ब्राह्मणों ने अनेक ब्राह्मणों की वृद्धि की। यही स्थापना की, ब्रह्मा बाप की कहानी आज के स्मृति दिवस पर वर्णन करते हो। स्मृति दिवस कहते हो तो सिर्फ ब्रह्मा बाप को याद किया वा ब्रह्मा बाप द्वारा जो बाप ने स्मृतियाँ दिलाई हैं वह सर्व स्मृतियाँ स्मृति में आई? आदि से अब तक क्या-क्या और कितनी स्मृतियाँ दिलाई है – याद है? अमृतवेले से लेकर रात तक भी सर्व स्मृतियों को सामने लाओ – एक दिन में पूरी हो जायेगी! लम्बी लिस्ट है ना! स्मृति सप्ताह भी मनाओ तो भी विस्तार ज्यादा है, क्योंकि सिर्फ रिवाइज़ नहीं करना है लेकिन रियलाइज़ करते हो। इसलिए कहते ही हो स्मृति स्वरूप। स्वरूप अर्थात् हर स्मृति की अनुभूति। आप स्मृति स्वरूप बनते हो और भक्त सिर्फ सिमरण करते हैं। तो क्या-क्या स्मृतियाँ अनुभव की हैं – इसका विस्तार तो बहुत बड़ा है। जैसे बाप का परिचय कितना बड़ा है लेकिन आप लोग सार रूप में पांच बातों में परिचय देते हो। ऐसे स्मृतियों के विस्तार को भी 5 बातों में भी सार रूप में लाओ कि आदि से अब तक बापदादा ने कितने नाम स्मृति में दिलाये! कितने नाम होंगे! विस्तार है ना। एक-एक नाम को स्मृति में लाओ और स्वरूप बन अनुभव करो, सिर्फ रिपीट नहीं करना। स्मृति स्वरूप बनने का आनन्द अति न्यारा और प्यारा है। जैसे बाप आप बच्चों को नूरे रत्न नाम की स्मृति दिलाते हैं। बाप के नयनों के नूर। नूर की क्या विशेषता होती है, नूर का कर्तव्य क्या होता है, नूर की शक्ति क्या होती है? ऐसी अनुभूतियाँ करो अर्थात् स्मृति स्वरूप बनो। इसी प्रकार हर एक नाम की स्मृति अनुभव करते रहो। यह एक दृष्टान्त रूप सुनाया। ऐसे ही श्रेष्ठ स्वरूप की स्मृतियाँ कितनी हैं? आप ब्राह्मणों के कितने रूप हैं जो बाप के रूप वह ब्राह्मणों के रूप हैं। उन सभी रूपों के स्मृति की अनुभूति करो। नाम, रूप, गुण – अनादि, आदि और अब, ब्राह्मण जीवन के सर्वगुण स्मृति स्वरूप बनो।

ऐसे ही कर्तव्य। कितने श्रेष्ठ कर्तव्य के निमित्त बने हो! उन कर्तव्यों की स्मृति इमर्ज करो। पांचवी बात बापदादा ने अनादि-आदि देश की स्मृति दिलाई। देश की स्मृति से वापस घर जाने की समर्थी आ गई, अपने राज्य में राज्य अधिकारी बनने की हिम्मत आ गई और वर्तमान संगमयुगी ब्राह्मण संसार में खुशियों के जीवन जीने की कला स्मृति में आ गई। जीने की कला अच्छी रीति आ गई है ना? दुनिया मरने की कला में तेज जा रही है और आप ब्राह्मण सुखमय खुशियों के जीवन की कला में उड़ रहे हो। कितना अन्तर है!

तो स्मृति दिवस अर्थात् सर्व स्मृतियों के रूहानी नशे का अनुभव करना। इस स्मृति दिवस पर दुनिया के समान आप सभी यह शब्द नहीं कहते कि ऐसे हमारा ब्रह्मा बाप था। उन्होंने यह कहा था, यह किया था, दुनिया वाले था.. था.. करते हैं और दुःख की लहर फैलाते हैं लेकिन आप ब्राह्मणों की यह विशेषता है – आप कहेंगे अब भी साथ है। साथ का अनुभव करते हैं। तो आप लोगों में यह विशेषता है। आप ऐसे नहीं कहेंगे कि ब्रह्मा बाप चले गये। जो वायदा किया है – साथ रहेंगे, साथ चलेंगे। अगर आदि आत्मा भी वायदा नहीं निभाये तो कौन वायदा निभायेगा? सिर्फ रूप और सेवा की विधि परिवर्तन हुई है। आप सभी का लक्ष्य है – 'फरिश्ता सो देवता।' फरिश्ता रूप का सैम्पल ब्रह्मा बाप बना है। सर्व बच्चों की पालना अब भी ब्रह्मा द्वारा ही हो रही है। इसलिए ब्रह्मा कुमार और ब्रह्मा कुमारियाँ कहलाते हो। समझा? स्मृति दिवस का महत्व क्या है? इन स्मृतियों में सदा ही लवलीन रहो। इसको ही कहते हैं – बाप समान बनने की अनुभूति। आप आत्माओं ने बाप समान अनुभव किया। इसी 'समान' शब्द को लोगों ने 'समाना' शब्द कह दिया है। आत्मा परमात्मा में समा नहीं जाती, लेकिन बाप समान बनती है। सभी बच्चों ने अपने-अपने नाम से स्मृति दिवस की याद भेजी है। कई सन्देश बनकर यादप्यार ले आये और हर एक कहता है मेरी खास याद देना। तो एक एक को अलग याद पत्र लिखने की बजाए दिल से पत्र लिख रहे हैं। हर एक के दिल का प्यार बापदादा के नयनों में, दिल में समाया हुआ है और अब विशेष समाया है। खास याद करने वालों को बापदादा खास अब भी इमर्ज करके यादप्यार दे रहे हैं। हर एक के दिल के उमंग और दिल की रूहरिहान, दिल के हालचाल, दिलाराम बाप के पास पहुँच गये। बापदादा सभी बच्चों को यही स्मृति दिला रहे हैं कि सदा दिल के साथ हो, सेवा में साथ हो और स्थिति में सदा साक्षी हो। तो सदा ही मायाजीत का झण्डा लहराता रहेगा। सभी बच्चों को नर्थिंग न्यु का पाठ हर परिस्थिति में सदा स्मृति में रहे। ब्राह्मण जीवन अर्थात् क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की रेखा हो नहीं सकती। कितने बार यह समाचार भी सुना होगा। नया समाचार है क्या? नहीं। ब्राह्मण जीवन अर्थात् हर समाचार सुनते कल्प पहले की स्मृति

में समर्थ रहे – जो होना है वह हो रहा है, इसलिए क्या होगा - यह क्वेश्चन उठ नहीं सकता। त्रिकालदर्शी हो, ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानने वाले हो तो क्या वर्तमान को नहीं जानते हैं? घबराते तो नहीं हो ना! ब्राह्मण जीवन में हर कदम में कल्याण है। घबराने की बात नहीं है। आप सबका कर्तव्य है अपने शान्ति की शक्ति से अशान्त आत्माओं को शान्ति की किरणें देना। अपने ही आपके भाई-बहिन हैं, तो अपने ईश्वरीय परिवार के सम्बन्ध से सहयोगी बनो। जितना ही युद्ध में तीव्र गति है, आप योगी आत्माओं का योग उन्हें शान्ति का सहयोग देगा। इसलिए और विशेष समय निकाल शान्ति का सहयोग दो – यह है आप ब्राह्मण आत्माओं का कर्तव्य। अच्छा।

सर्व स्मृति स्वरूप श्रेष्ठ आत्माओं को सदा बाप समान बनने के लक्ष्य और लक्षण धारण करने वाली आत्माओं को, सदा स्वयं को बाप के साथ अनुभव करने वाले समीप आत्माओं को, सदा नर्थांग न्यु पाठ को सहज स्वरूप में लाने वाले, सदा विश्व कल्याणकारी बन विश्व की आत्माओं को सहयोग देने वाले – ऐसे सदा विजयी रत्नों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

दादियों से :- आदि ब्राह्मणों की माला ब्रह्मा बाप के साथ आदि ब्राह्मण निमित्त बने ना। आदि ब्राह्मणों का बहुत बड़ा महत्व है। स्थापना पालना और परिवर्तन। विनाश शब्द थोड़ा ऑफिशल लगता है तो स्थापना, पालना और विश्व परिवर्तन करने में आदि ब्राह्मणों का विशेष पार्ट है। शक्तियों की पूजा बहुत धूमधाम से होती है। निराकार बाप व ब्रह्मा बाप की पूजा इतनी धूमधाम से नहीं होती। ब्रह्मा के मन्दिर भी बहुत गुप्त ही हैं। लेकिन शक्ति सेना भक्ति में भी नामीग्रामी है। इसलिए अन्त तक स्टेज पर विशेष बच्चों का पार्ट है। ब्रह्मा का भी गुप्त पार्ट है – अव्यक्त रूप अर्थात् गुप्त। ब्राह्मणों को तैयार किया और ब्रह्मा का पार्ट गुप्त हो गया। सर-स्वती को भी गुप्त दिखाते हैं क्योंकि उनका भी ड्रामा में गुप्त पार्ट चल रहा है। आदि ब्राह्मण आत्माएं सभी एक दो के समीप और शक्तिशाली हैं। शरीर भी कमजोर नहीं है, शक्तिशाली है। (दादी जानकी से) यह तो थोड़ा सा बीच में रेस्ट दिलाने का साधन बन गया। बाकी कुछ भी नहीं है। वैसे तो रेस्ट करती नहीं हो। कोई कारण बनता है रेस्ट करने का। सभी दादियों में बहुत प्यार है ना! बाप के साथ-साथ निमित्त आदि ब्राह्मणों से भी प्यार है। तो आप सबके प्यार की दुआएं, शुभ भावनाएं आदि ब्राह्मण आत्माओं को तन्दरुस्त रखती है। अच्छा है – साइलेन्स की सेवा का पार्ट अच्छा मिला है। कितनी आत्माएं अशान्त हैं, कितनी प्रेयर कर रही हैं! उन्हीं को कुछ न कुछ अंचली तो देंगे ना? देवियों से जाकर शक्ति मांगते हैं ना! तो शक्ति देना आप विशेष आत्माओं का कर्तव्य है ना? दिन प्रतिदिन यह अनुभव करेंगे कि कहाँ से शान्ति की किरणें आ रही है। फिर ढूँढेंगे, सबकी नज़र भारत भूमि पर आयेगी। अच्छा-

गुप नं. 1 :- निश्चय बुद्धि विजयी आत्माएं हैं – ऐसा अनुभव करते हो? सदा निश्चय अटल रहता है? वा कभी डगमग भी होते हो? निश्चयबुद्धि की निशानी है – वो हर कार्य में, चाहे व्यावहारिक हो, चाहे परमार्थी हो, लेकिन हर कार्य में विजय का अनुभव करेगा। कैसा भी साधारण कर्म हो, लेकिन विजय का अधिकार उसको अवश्य प्राप्त होगा, क्योंकि ब्राह्मण जीवन का विशेष जन्म सिद्ध अधिकार विजय है। कोई भी कार्य में स्वयं से दिल शिकस्त नहीं होगा, क्योंकि उसे निश्चय है कि विजय जन्म सिद्ध अधिकार है। तो इतना अधिकार का नशा रहता है। जिसका भगवान मददगार है उसकी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी! कल्प पहले का यादगार भी दिखाते हैं कि जहाँ भगवान है वहाँ विजय है। चाहे पांच पाण्डव दिखाते हैं, लेकिन विजय क्यों हुई? भगवान साथ है, तो जब कल्प पहले यादगार में विजयी बने हो तो अभी भी विजयी होंगे ना? कभी भी कोई कार्य में संकल्प नहीं उठना चाहिए कि ये होगा, नहीं होगा, विजय होगी या नहीं, होगी.. – यह क्वेश्चन उठ नहीं सकता। कभी भी बाप के साथ वाले की हार हो नहीं सकती। यह कल्प-कल्प की नूध निश्चित है। इस भावी को कोई टाल नहीं सकता। इतना दृढ़ निश्चय सदा आगे उड़ाता रहेगा। तो सदा विजय की खुशी में नाचते गाते रहो।

(2) सदा अपने को भाग्य विधाता के भाग्यवान बच्चे हैं – ऐसा अनुभव करते हो? पद्मापद्म भाग्यवान हो या सौभाग्यवान हो? जिसका इतना श्रेष्ठ भाग्य है वह सदा हर्षित रहेंगे। क्योंकि भाग्यवान आत्मा को कोई अप्राप्ति है ही नहीं। तो जहाँ सर्व प्राप्ति होंगी, वहाँ सदा हर्षित होंगे। कोई को अल्पकाल की लॉटरी भी मिलती है तो उसका चेहरा भी दिखाता है कि उसको कुछ मिला है। तो जिसको पद्मापद्म भाग्य प्राप्त हो जाए वह क्या रहेगा? सदा हर्षित। ऐसे हर्षित रहे जो कोई भी देखकर पूछे कि क्या मिला है? जितना-जितना पुरुषार्थ में आगे बढ़ते जायेंगे उतना आपको बोलने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। आपका चेहरा बोलेगा कि इनको कुछ मिला है, क्योंकि चेहरा दर्पण होता है। जैसे दर्पण में जो चीज जैसी होती है, वैसी दिखाई देती है। तो आपका चेहरा दर्पण का काम करे। इतनी आत्माओं को जो सन्देश मिला है तो इतना समय कहाँ मिलेगा जो आप लोग बैठकर सुनाओ। समय भी नाजुक होता जायेगा, तो सुनाने का भी समय नहीं मिलेगा। तो फिर सेवा कैसे करेंगे? अपने चेहरे से। जैसे म्युजियम के चित्रों से सेवा करते हो। चित्र देखकर प्रभावित होते हैं ना। तो आपका चैतन्य चित्र सेवा के निमित्त बन जाये – ऐसे तैयार चित्र हो? इतने चैतन्य

चित्र तैयार हो जायें तो आवाज बुलन्द कर देंगे। सदैव चलते-फिरते, उठते-बैठते यह स्मृति रखो कि हम चैतन्य चित्र हैं। सारे विश्व की आत्माओं की हमारे तरफ नज़र है। चैतन्य चित्र में सबके आकर्षण की बात कौन सी होती है? सदा खुशी होगी। तो सदा खुश रहते हो या कभी उलझन आती है? या वहाँ जाकर कहेंगे – यह हो गया इसलिए खुशी कम हो गई। क्या भी हो जाये, खुशी नहीं जानी चाहिए। ऐसे पक्के हो? अगर बड़ा पेपर आये तो भी पास हो जायेंगे? बापदादा सबका फोटो निकाल रहे हैं कि कौन-कौन हॉ कह रहा है। ऐसे नहीं कहना कि उस समय कह दिया। मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे वैसे कोई भी बड़ी बात नहीं है। दूसरी बात आपको निश्चय है कि हमारी विजय हुई ही पड़ी है। इसलिए कोई बड़ी बात नहीं है। जिसके पास सर्वशक्तियों का खजाना है तो जिस भी शक्ति को ऑर्डर करेंगे वह शक्ति मददगार बनेगी। सिर्फ आर्डर करने वाला हिम्मत वाला चाहिए। तो आर्डर करना आता है या आर्डर पर चलना आता है? कभी माया के आर्डर पर तो नहीं चलते हो? ऐसे तो नहीं कि कोई बात आती है और समाप्त हो जाती है? पीछे सोचते हो – ऐसे करते थे तो बहुत अच्छा होता। ऐसे तो नहीं? समय पर सर्वशक्तियाँ काम में आती हैं या थोड़ा पीछे से आती हैं? अगर मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट हो तो कोई भी शक्ति आर्डर नहीं माने – यह हो नहीं सकता। अगर सीट से नीचे आते हो और फिर आर्डर करते हो तो वो नहीं मानेंगे। लौकिक रीति से भी कोई कुर्सी से उतरता है तो उसका आर्डर कोई नहीं मानता। अगर कोई शक्ति आर्डर नहीं मानती है तो अवश्य पोजीशन की सीट से नीचे आते हो। तो सदा मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट रहो, सदा अचल अडोल रहो, हलचल में आने वाले नहीं। बापदादा कहते हैं शरीर भी चला जाये लेकिन खुशी नहीं जाये। पैसा तो उसके आगे कुछ भी नहीं है। जिसके पास खुशी का खजाना है उसके आगे कोई बड़ी बात नहीं और बापदादा का सदा सहयोगी सेवाधारी बच्चों का साथ है। बच्चा बाप के साथ है तो बड़ी बात क्या है? इसलिए घबराने की कोई बात नहीं। बाप बैठा है, बच्चों को क्या फिकर है। बाप तो है ही मालामाल। किसी भी युक्ति से बच्चों की पालना करनी ही है, इसलिए बेफिकर। दुःखधाम में सुखधाम स्थापन कर रहे हो तो दुःखधाम में हलचल तो होगी ही। गर्मी की सीज़न में गर्मी होगी ना! लेकिन बाप के बच्चे सदा ही सेफ हैं, क्योंकि बाप का साथ है।

सर्व बच्चों प्रति बापदादा का सन्देश

सर्व तपस्वी बच्चों प्रति यादप्यार। देखो बच्चे, समय के समाचार सुनते ऊंचे ते ऊंचे साक्षीपन के आसन और बेफिकर बादशाह के सिंहासन पर बैठ सब खेल देख रहे हो ना? इस ब्राह्मण जीवन में घबराने का तो स्वप्न में भी संकल्प उठ नहीं सकता। यह तो तपस्या वर्ष के निरन्तर लगन की अग्नि में बेहद की वैराग-वृत्ति प्रज्ज्वलित करने का पंखा लग रहा है। आपने बाप समान सम्पन्न बनने का संकल्प किया अर्थात् विजय का झण्डा लहराने का प्लान बनाया, तो दूसरे तरफ समाप्ति की हलचल भी तो साथ-साथ नूँधी है ना? रिहर्सल ही ड्रामा के रील को समाप्त करने का साधन है, इसलिए नर्थिंग न्यु।

समय के सरकमस्टांस प्रमाण आने-जाने में व किसी वस्तु के मिलने में कुछ खींचातान हो, मन के संकल्प की खींचातान में नहीं आना। जहाँ जिस परिस्थिति में रहो, दिलखुश मिठाई खाते रहो। खुशहाल रहो, फरिश्तों की चाल में उड़ो। साथ2 इस समय हरेक सेन्टर पर विशेष तपस्या का प्रोग्राम चलता रहे। जो जितना ज्यादा समय निकाल सकते हैं, उतना साइलेन्स का सहयोग दो। अच्छा। ओम् शान्ति।

13.2.91

विश्व परिवर्तन में तीव्रता लाने का साधन एकाग्रता की शक्ति एवं एकरस स्थिति

कल्याणकारी शिव बाबा अपने कल्याणकारी बच्चों प्रति बोले :

आज दूरदेशी बाप अपने दूरदेशी और देशी बच्चों को मिलन मुबारक देने आये हैं। आप सभी भी दूरदेश से आये हैं। बाप भी दूर-देश से आये हैं। बच्चे बाप को मुबारक देने आये हैं और बाप बच्चों को पद्म गुना मुबारक देते हैं। मनाना अर्थात् समान बनाना। दुनिया में सिर्फ मनाते हैं लेकिन बाप मनाते अर्थात् बनाते हैं। सभी बच्चे, चाहे साकार रूप में सम्मुख हो, चाहे आकार रूप में सम्मुख हैं, सब बच्चे विश्व के कोने कोने में बाप की हीरे तुल्य जयन्ती मना रहे हैं। बापदादा आकारी रूप में सम्मुख बच्चों को भी हीरे तुल्य जयन्ती की हीरे तुल्य पद्मापद्म मुबारक दे रहे हैं। इस महान अवतरित होने की जयन्ती को आप सभी बच्चे मनाते स्वयं भी हीरे तुल्य बन गये हो। इसको कहा जाता है मनाना अर्थात् बनाना। हर एक बच्चे के मस्तक पर पदमापदम भाग्यवान बनने का सितारा चमक रहा है। तो मनाते मनाते सदा के लिए भाग्यवान बन गये। ऐसी अलौकिक जयन्ती सारे कल्प में कोई भी नहीं मनाते हैं। चाहे महान आत्माओं की भी जयन्ती मनाते हैं, लेकिन वह महान आत्माएं मनाने वालों को महान बनाते नहीं हैं। इस संगम पर ही आप बच्चे परमात्म जयन्ती मनाते महान बन जाते हो। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ आत्माएं बन जाते हो। ऐसे हीरे तुल्य जीवन बनाते जो जन्म जन्मान्तर हीरे और रतनों से खेलते रहते। आज का यादगार दिवस सिर्फ बाप का नहीं है लेकिन बच्चों का भी बर्थ डे है, क्योंकि जब बाप अवतरित होते हैं तो बाप के साथ ब्रह्मा दादा भी परिवर्तित आत्मा अवतरित होते हैं। बाप और दादा दोनों का साथ-साथ

अवतरण होता है। सिवाए ब्राह्मणों के बापदादा स्थापना का यज्ञ रच नहीं सकते, इसलिए बापदादा और ब्राह्मण बच्चे साथ-साथ अवतरित होते हैं। तो किसका जन्म दिन कहेंगे – आपका या बाप का? आपका भी है ना! तो आप बाप को मुबारक देते और बाप आपको मुबारक देते।

शिव जयन्ती अर्थात् परमात्म जयन्ती को महाशिवरात्रि क्यों कहते हैं? सिर्फ शिव रात्रि नहीं कहते लेकिन महाशिवरात्रि कहते हैं क्योंकि इस अवतरित दिवस पर शिव बाप ब्रह्मा दादा और ब्राह्मणों ने महान संकल्प का व्रत लिया कि विश्व को पवित्रता के व्रत से महान श्रेष्ठ बनायेंगे। विशेष आदि देव ब्रह्मा अपने निमित्त ब्राह्मण आदि बच्चों के साथ इस महान व्रत लेने के निमित्त बने, तो महान बनाने के व्रत लेने का दिव्य दिवस है। इसलिए महा शिवरात्रि कहा जाता है। और आप ब्राह्मण बच्चों ने यह महान व्रत लिया इसके यादगार स्वरूप में आज तक भी भक्त लोग व्रत रखते हैं। यह महान जयन्ती प्रतिज्ञा लेने की जयन्ती है। एक तरफ प्रत्यक्ष होने की जयन्ती है, दूसरी तरफ प्रतिज्ञा लेने की जयन्ती है। आदि समय में आप सभी जो भी निमित्त बने, आदि देव के साथ आदि रत्न निकले उन्हीं की प्रतिज्ञा का प्रत्यक्ष फल आप सभी प्रत्यक्ष हुए। देखो कहाँ कहाँ कोनों में चले गये थे। कितने कोने में चले गये लेकिन बाप ने मिट्टी में छिपे हुए अपने हीरे-तुल्य बच्चों को ढूँढ लिया ना। अभी तो विश्व के कोने-कोने में आप होलीएस्ट और हाइ-एस्ट हीरे चमक रहे हो। तो यह परमात्म जयन्ती के व्रत और प्रतिज्ञा का फल है। आप सभी अब भी चारों ओर शिव बाप के झण्डे के आगे प्रतिज्ञा लेते हो ना। तो यह आदि रसम की विधि अब तक आप भी करते रहते हो। यह परमात्म जयन्ती जिसको शिव रात्रि भी कहते हैं। रात्रि अर्थात् अंधकार। अंधकार में जो व्यक्ति वा वस्तु जैसी होती है वैसी दिखाई नहीं देती है। होते हुए भी दिखाई नहीं देती। जब बाप अवतरित होते हैं तो आप भी जो आप हैं, जो हैं, जैसे हैं, न अपने आपको देख सकते थे, न बाप को देख वा जान सकते थे। मैं आत्मा हूँ यह होते हुए भी ज्ञान व अनुभव के नेत्र द्वारा देख नहीं सकते थे। नेत्र होते हुए भी अंधकार में थे। नेत्र यथार्थ कार्य नहीं करते थे। स्पष्ट दिखाई नहीं देता। तो आप भी अंधकार में थे ना। अपने को ही नहीं देख सकते थे। इसलिए बाप पहले इस अंधकार को मिटाते हैं। तो शिवरात्रि अर्थात् अंधकार को मिटाए यथार्थ का प्रकाश प्रज्ज्वलित होना। इसलिये शिवरात्रि कहकर मनाते हैं। भक्ति मार्ग की विधियाँ भी आपकी यथार्थ विधियों का यादगार है। एक तरफ भक्तों की विधि और दूसरे तरफ है बच्चों की सम्पूर्ण विधि। दोनों ही देख बाप हर्षित होते हैं। आप लोग भी हर्षित होते हो ना कि हमारे भक्त फालो करने में कितने होशियार हैं। लास्ट जन्म तक भी अपनी भक्ति की विधियाँ निभाते आते हैं। यह सब है बाप और आप बिन्दु रूप की कमाल। शिव बाबा के साथ सालिग्राम भी साथ-साथ पूजे जाते हैं। आप सभी बिन्दु स्वरूप के महत्व को जानते हो। इसलिए आज तक भक्तों में शिव अर्थात् बिन्दु स्वरूप का महत्व है। वह सिर्फ बिन्दु रूप को जानते हैं, यथार्थ नहीं जानते हैं, अपने रूप से जानते हैं। लेकिन आप बाप को सिर्फ बिन्दु रूप से नहीं लेकिन बिन्दु के साथ जो सर्व खजानों का सिन्धु है, तो बिन्दु के साथ सिन्धु रूप को भी जानते हो। दोनों रूप से जाना है ना? सिन्धु स्वरूप को जानते आप भी मास्टर सिन्धु बन गये। आपमें कितने खजाने भरे हुए हैं – हिसाब लगा सकते हो! अनगिनत, अथाह और अविनाशी खजाने हैं। सभी मास्टर सिन्धु बने हो ना कि अब बनना है?

तपस्या वर्ष में क्या करेंगे? तपस्या अर्थात् जो भी संकल्प करेंगे वह दृढ़ता से। तपस्या अर्थात् एकाग्रता और दृढ़ता। योगी जीवन में तो अभी भी हो। आप सब योगी जीवन वाले हो ना? कि 8 घण्टा, 6 घण्टा या कुछ घण्टे योग लगाने वाले हो? योगी जीवन तो है ही, फिर खास तपस्या वर्ष क्यों रखा है? बापदादा सभी बच्चों को योगी जीवन वाले योगी आत्माओं के रूप में देखते हैं और हो भी योगी जीवन में। और जीवन तो समाप्त हो गई। भटकी हुई भोगी जीवन से थककर निराश होकर सोच समझकर योगी बने हो। सोच समझकर बने हो या किसके कहने से बन गये हो। अनुभव करके बने हो या सिर्फ अनुभव सुनकर बन गये हो? अनुभवी बन करके योगी बने हो या सिर्फ सुना और देखा तो अच्छा लग गया? सिर्फ देख करके सौदा किया है या सुनकर सौदा किया है? कहाँ किसके धोखे में तो नहीं आये हो? अच्छी तरह से देख लिया है? अभी भी देख लो। कोई जादू तो नहीं लग गया है? तीनों आंखे खोल कर सौदा किया है? क्योंकि बुद्धि भी आंख है। यह दो आंखे और बुद्धि की आंख, तीनों खोल कर सौदा किया है। सभी पक्के हैं?

सभी बच्चे मीठी-मीठी रूहरिहान करते हैं। कहते हैं – बाबा है तो आपके ही, और कहाँ तो जायेंगे ही नहीं। और ज्ञानी-योगी जीवन भी बहुत अच्छी लगती है लेकिन थोड़ा-थोड़ा किसी न किसी बात में सहन करना पड़ता है। उस समय मन और बुद्धि हलचल में आ जाती है यह कब तक होगा, कैसे होगा...? बीच-बीच में जो हलचल होती है – चाहे अपने से, चाहे सेवा से, चाहे साथियों से – यह हलचल निरन्तर में अन्तर ले आती है। तो सहन शक्ति की परसेन्टेज थोड़ी कम हो जाती है। हैं पक्के, लेकिन पक्के को भी कभी कभी ये बातें हिला देती हैं। तो तपस्या वर्ष अर्थात् सर्व गुणों में, सर्व शक्तियों में, सर्व सम्बन्धों में, सर्व स्वभाव-संस्कार में 100 पास होना। अभी पास हो लेकिन फुल पास नहीं। एक है पास, दूसरा है फुल पास और तीसरा है पास विद् ऑनर। तो तपस्या वर्ष में अगर पास विद् ऑनर थोड़े बने तो फुल पास तो सब बन सकते हैं। और फुल पास होने के लिए सबसे सहज साधन है जो भी कोई पेपर आते हैं और इस तपस्या वर्ष में भी पेपर आयेंगे। ऐसे नहीं कि नहीं, आयेंगे लेकिन पेपर समझकर पास करो। बात को बात

नहीं समझो, पेपर समझो। पेपर के क्वेश्चन के विस्तार में नहीं जाते – यह क्यों आया, कैसे आया, किसने किया? पास होने का सोच कर पेपर को पार करते हैं। तो पेपर समझकर पास करो। यह क्या हो गया, ऐसा होता है क्या, या अपनी कमजोरी में भी यह नहीं सोचो कि यह तो होता ही है। अपने लिए सोचते हो – यह तो होता ही है, इतना तो होगा ही और दूसरों के लिए सोचते हो यह क्यों किया, क्या किया। इन सब बातों को पेपर समझकर फुल पास होने का लक्ष्य रख करके पास करो। पास होना है, पास करना है और बाप के पास रहना है तो फुल पास हो जायेंगे। समझा।

अभी मैजस्ट्री रिजल्ट में देखा जाता है कई बातों में तो अच्छी तरह से पास हो गये हैं। सिर्फ अपने पुराने स्वभाव और संस्कार, जो कभी-कभी नये जीवन में इमर्ज हो जाते हैं। अपने व दूसरों के स्वभाव-संस्कार भी टक्कर खाते हैं। अपना कमजोर संस्कार दूसरे के संस्कार से टक्कर खाता है। यह कमजोरी अभी विशेष लक्ष्य को पहुँचने में विघ्न डालती है। फुल पास के बजाए पास मार्क दिला देती है। न अपने स्वभाव-संस्कार को संकल्प व कर्म में लाओ, न दूसरों के स्वभाव व संस्कार से टक्कर खाओ। दोनों में सहन शक्ति और समाने की शक्ति की आवश्यकता है। यह फुल पास के समीप लाने नहीं देती और यही कारण है जो कहाँ अलबेलापन, कहाँ आलस्य आ जाता है। तपस्या वर्ष में मन-बुद्धि को एकाग्र करना अर्थात् एक ही संकल्प में रहना है कि मुझे फुल पास होना ही है। अगर मन-बुद्धि जरा भी विचलित हो तो दृढ़ता से फिर से उसको एकाग्र करो। करना ही है, होना ही है। यह सब जो भी कमजोरियाँ हैं उनको तपस्या की योग अग्नि में भस्म करो। योग अग्नि प्रज्ज्वलित हो गई है? लगन की अग्नि में अभी भी रहते हो लेकिन कभी कभी अग्नि थोड़ी सी परसेन्टेज में कम हो जाती है। बुझती नहीं है, कम होती है। तेज आग में जो भी चीज डालो तो या तो परिवर्तन या भस्म होगी। परिवर्तन और भस्म करने, दोनों में तेज आग चाहिए। योग अग्नि है। लगन की अग्नि भी जगी हुई है लेकिन सदा ही तेज रहे। कभी तेज, कभी कम नहीं। जैसे यहाँ स्थूल अग्नि में भी अगर कोई चीज अच्छी बनाने चाहते हो और टाइम पर बनाने चाहते हो तो अग्नि को उसी रूप में रखेंगे जो चीज समय पर और अच्छी रीति तैयार हो जाए। अगर बीच में आग बुझ जाये तो समय पर चीज तैयार हो सकेगी? भल तैयार होगी परन्तु समय पर नहीं। तो आपकी योग अग्नि भी बीच-बीच में ढीली हो जाती है तो सम्पन्न बनेंगे लेकिन लास्ट में बनेंगे। लास्ट में सम्पन्न बनने वाले को फास्ट और फर्स्ट राज्य भाग्य का अधिकार नहीं मिल सकता। आप सभी का लक्ष्य फर्स्ट जन्म में राज्य भाग्य करने का है या दूसरे-तीसरे जन्म में आयेंगे। पहले जन्म में आना है ना?

तपस्या वर्ष अर्थात् फास्ट पुरुषार्थ कर फर्स्ट जन्म में फर्स्ट नम्बर आत्माओं के साथ राज्य में आना। घर में साथ चलना है ना? फिर राज्य में भी ब्रह्मा बाप के साथ आना है। तो समझा तपस्या वर्ष क्यों रखा है? एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ। अभी भी न चाहते भी व्यर्थ चल जाता है। व्यर्थ का तरफ कोई-कोई समय शुद्ध-श्रेष्ठ संकल्प से भारी हो जाता है। तपस्या अर्थात् व्यर्थ संकल्प की समाप्ति। क्योंकि यह समाप्ति ही सम्पूर्णता को लायेगी। समाप्ति के बिना सम्पूर्णता नहीं आयेगी। तो आज के दिन से तपस्या वर्ष आरम्भ कर रहे हो। उमंग-उत्साह के लिए बापदादा मुबारक देते हैं। चारों ही सब्जेक्ट में फुल पास होने की मार्क्स लेनी है। ऐसे नहीं समझना कि मेरी तीन सब्जेक्ट तो ठीक है, सिर्फ एक में कमी है। फुल पास हो जायेंगे? नहीं, फिर भी पास की लिस्ट में आयेंगे। फुल पास अर्थात् चारों सब्जेक्ट में फुल मार्क्स हो। सदा हर आत्मा के प्रति कल्याण की भावना, चाहे वह आपकी स्थिति को हिलाने की भी कोशिश करे लेकिन अकल्याण करने वाले के ऊपर भी कल्याण की भावना, कल्याण की दृष्टि, कल्याण की वृत्ति, कल्याणमय कृति। इसको कहा जाता है – कल्याणकारी आत्मा। शिव का अर्थ भी कल्याणकारी है ना? तो शिव जयन्ती अर्थात् कल्याणकारी भावना। कल्याण करने वाले के ऊपर कल्याण करना यह तो अज्ञानी भी करते हैं। अच्छे के साथ अच्छा चलना यह तो सभी जानते हैं। लेकिन अकल्याण के वृत्ति वाले को अपने कल्याण की वृत्ति से परिवर्तन करो या क्षमा करो। परिवर्तन न भी कर सकते, क्षमा तो कर सकते हो ना! मास्टर क्षमा के सागर तो हो ना! तो आपकी क्षमा उस आत्मा के लिए शिक्षा हो जायेगी। आजकल शिक्षा देने से कोई समझता, कोई नहीं समझता। यह करो तो यह शिक्षा हो जायेगी। क्षमा अर्थात् शुभ भावना की दुवाएं देना, सहयोग देना। शिक्षा देने का समय अभी चला गया। अभी स्नेह दो, सम्मान दो, क्षमा करो। शुभ भावना रखो, शुभ कामना रखो – यही शिक्षा की विधि है। वह विधि अब पुरानी हो गई। तो नई विधि आती है ना? तपस्या वर्ष में इस नई विधि से सर्व को और समीप लाओ। सुनाया था ना कि दाने कुछ तैयार हो भी गये हैं लेकिन माला अभी तैयार नहीं है। धागा भी है, दाने भी है लेकिन दाना दाने के समीप नहीं है इसलिए माला तैयार नहीं है। अपनी रीति से दाना तैयार है लेकिन संगठन में, समीपता में तैयार नहीं है। तो तपस्या वर्ष में बाप समान तो बनना ही है लेकिन दाना दाने के समीप भी आना है। समझा। बाकी योगी थे, योगी है, सदा योगी जीवन में ही रहना है। ड्रामा के हर सीन को प्यारा देखते हुए चलो। हर सीन प्यारी है। दुनिया के लिए जो अप्यारी सीन है, वह आपके लिए प्यारी है। जो भी होता है उसमें कोई राज़ भरा हुआ होता है। राज़ को जानने से कभी किसी बात में, किसी दृश्य में नाराज नहीं होंगे। राज़ को जानने वाले नाराज नहीं होते। राज़ को न जानने वाले नाराज होते हैं।

डबल विदेशी भी इस बारी शिव जयन्ती मनाने टाइम पर पहुँच गये हैं। दृढ़ निश्चय रखा कि जाना ही है तो पहुँच गये ना? जाये न

जाये – यह सोचने वाले रह गये। अभी तो यह कुछ भी नहीं है, अभी तो होना है। अभी प्रकृति ने फुल फोर्स की हलचल शुरु नहीं की है। करती है लेकिन फिर आप लोगों को देखकर थोड़ा ठन्डी हो जाती है। वह भी डर जाती है कि मेरे मालिक तैयार नहीं हैं। किसकी दासी बनें? निर्भय हो ना? डरने वाले तो नहीं हो ना? लोग डरते हैं मरने से और आप तो है ही मरे हुए। पुरानी दुनिया से मरे हुए हो ना? नई दुनिया में जीते हो, पुरानी दुनिया से मरे हुए हो, तो मरे हुए को मरने से क्या डर लगेगा? और ट्रस्टी हो ना? अगर कोई भी मेरापन होगा तो माया बिल्ली म्याऊं म्याऊं करेगी। मैं आऊं, मैं आऊं...। आप तो हो ही ट्रस्टी। शरीर भी मेरा नहीं। लोगों को मरने का फिकर होता है या चीजों का या परिवार का फिकर होता है। आप तो हो ही ट्रस्टी। न्यारे हो ना, कि थोड़ा-थोड़ा लगाव है? बाँडी कान्सेसनेस है तो थोड़ा-थोड़ा लगाव है। इसलिए तपस्या अर्थात् ज्वाला स्वरूप, निर्भय। अच्छा।

दोनों मुरब्बी दादियाँ सुन रही हैं, देख रही हैं। कुछ नवीनता देखनी चाहिए ना। बापदादा ने पहले भी सुनाया कि एक है वाणी की सेवा, दूसरी है फरिश्ता मूत और शक्तिशाली स्नेहमयी दृष्टि की सेवा। कुछ समय इन्हों को यह सेवा का पार्ट मिला हुआ है। आदि से वाणी और कर्म की सेवा तो करती ही रही है। इस विधि की सेवा का यह भी ड्रामा में है, अन्त में यही सेवा रह जायेगी। यह पार्ट थोड़े समय के लिए इन्हों को मिला है। फिर भी मुरब्बी बच्चे हैं ना। इन्हों के हिसाब-किताब चुक्तु होने में भी सेवा है। निमित्त हिसाब है लेकिन राज़ सेवा का है। बेहद के खेल में यह भी एक वन्दरफुल खेल है। दोनों का पार्ट भी नवीनता है। यह जल्दी-जल्दी हिसाब-किताब चुक्तु कर सम्पन्नता और सम्पूर्णता के समीप जा रही हैं। अकेले नहीं जायेंगे – यह कोई नहीं सोचो। हर एक को चुक्तु तो करना ही है लेकिन कोई सिर्फ चुक्तु करता है, कोई चुक्तु करते भी सेवा करते हैं। सारे विजयी बन गये ना? सबकी दुवाओं की दवा भी सूली से कांटा कर देती है। हिसाब-किताब के प्रभाव में नहीं आईं। दोनों ठीक हो गये हैं। सिर्फ परहेज में है। रेस्ट भी परहेज है। जैसे खाने में परहेज होती है। यह फिर चलने फिरने बोलने की परहेज है। स्नेह क्या नहीं कर सकता है! कहावत है – स्नेह पत्थर को पानी कर सकता है, तो यह बीमारी नहीं बदल सकता है? बदल तो गई ना! हार्ट की बीमारी बदल गई। पत्थर से पानी तो हो गया ना! तो यह आप सबका प्यार है। बाकी अब सिर्फ पानी रह गया, पत्थर खत्म हो गया। रेस्ट में रहने से दोनों के चेहरे चमक गये हैं। परिवार का प्यार भी बहुत मदद देता है। अच्छा।

चारों ओर के सर्व विश्व कल्याण की श्रेष्ठ भावना रखने वाले, चारों ओर के ऐसे दृढ़ संकल्प करने वाले, तपस्या द्वारा स्वयं को, विश्व को परिवर्तन करने वाले, एकाग्रता की शक्ति से एकरस तीव्र स्थिति में रहने वाले, ऐसे तपस्वी आत्माओं को स्नेही आत्माओं को, सदा बाप के साथ रहने वाली आत्माओं को, सदा भिन्न-भिन्न विधि से सेवा में साथी रहने वाले बच्चों को महा-परमात्म जयन्ती की मुबारक और यादप्यार स्वीकार हो और साथ-साथ नमस्ते।

(दादी जी, दादी जानकी जी तथा मुख्य भाई-बहिनों के साथ बापदादा ने स्टेज पर खड़े होकर झण्डा फहराया तथा सर्व को मुबारक दी। 55 मोम बत्ती जलाई तथा तपस्या वर्ष के शुभारम्भ में 14 मास तपस्या के प्रतीक 14 मोम बत्ती और दो बापदादा के स्मृति की मोम बत्ती जलाते बापदादा ने केक काटी)

चारों ओर के सर्व अति स्नेही सहयोगी और सेवा के साथियों को निरन्तर उत्साह में रहने की इस शिव जयन्ती के उत्सव की मुबारक हो, मुबारक हो..। सदा सर्व खजानों से झोली भरपूर रहने की मुबारक हो।

25.2.91

सोच और कर्म में समानता लाना ही परमात्म प्यार निभाना है

दिलाराम बाप दादा अपने दिलतख्त नशील बच्चों प्रति बोले :

आज बापदादा अपने सर्व स्वराज्य अधिकारी बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं क्योंकि स्वराज्य अधिकारी वही अनेक जन्म विश्व राज्य अधिकारी बनते हैं। तो आज डबल विदेशी बच्चों से बापदादा स्वराज्य का समाचार पूछ रहे हैं। हर एक राज्य अधिकारी का राज्य अच्छी तरह से चल रहा है? आपके राज्य चलाने वाले साथी सहयोगी साथी, सदा समय पर यथार्थ रीति से सहयोग दे रहे हैं कि बीच-बीच में कभी धोखा भी दे देते हैं? जितने भी सहयोगी कर्मचारी कर्मेन्द्रियाँ, चाहे स्थूल हैं, चाहे सूक्ष्म हैं, सभी आपके आर्डर में है? जिसको जिस समय जो आर्डर करो उसी समय उसी विधि से आपके मददगार बनते हैं? रोज अपनी राज्य दरबार लगाते हो? राज्य कारोबारी सभी 100 आज्ञाकारी, वफादार, एवररेडी हैं? क्या हालचाल है? अच्छा है व बहुत अच्छा है व बहुत, बहुत, बहुत अच्छा है? राज्य दरबार अच्छी तरह से सदा सफलतापूर्वक होती है वा कभी-कभी कोई सहयोगी कर्मचारी हलचल तो नहीं करते हैं? इस पुरानी दुनिया की राज्य सभा का हालचाल तो अच्छी तरह से जानते हो – न लॉ है, न आर्डर है। लेकिन आपकी राज्य दरबार लॉ फुल भी है और सदा हाँ जी, जी हाजिर – इस आर्डर में चलती है। जितना राज्य अधिकारी शक्तिशाली है उतना राज्य सहयोगी कर्मचारी भी स्वतः भी सदा इशारे से चलते, राज्य अधिकारी ने आर्डर दिया कि यह नहीं सुनना है और यह नहीं

करना है, नहीं बोलना है, तो सेकेण्ड में इशारे प्रमाण कार्य करें। ऐसे नहीं कि आपने आर्डर किया – नहीं देखो और वह देख करके फिर माफी मांगे कि मेरी गलती हो गई। करने के बाद सोचे तो उसको समझदार साथी कहेंगे? मन को आर्डर दिया कि व्यर्थ नहीं सोचो, सेकेण्ड में फुल स्टॉप, दो सेकेण्ड भी नहीं लगने चाहिए। इसको कहा जाता है – युक्तियुक्त राज्य दरबार। ऐसे राज्य अधिकारी बने हो? रोज राज्य दरबार लगाते हो या जब याद आता है तब आर्डर देते हो? रोज दिन समाप्त होते अपने सहयोगी कर्मचारियों को चेक करो। अगर कोई भी कर्मिन्द्रियों से वा कर्मचारी से बार-बार गलती होती रहती है तो गलत कार्य करते-करते संस्कार पक्के हो जाते हैं। फिर चेंज करने में समय और मेहनत भी लगती है। उसी समय चेक किया और चेंज करने की शक्ति दी तो सदा के लिए ठीक हो जायेंगे। सिर्फ बार-बार चेक करते रहो कि यह रांग है, यह ठीक नहीं है और उसको चेंज करने की युक्ति व नॉलेज की शक्ति नहीं दी तो सिर्फ बार-बार चेक करने से भी परिवर्तन नहीं होता। इसलिए पहले सदा कर्मिन्द्रियों को नॉलेज की शक्ति से चेंज करो। सिर्फ यह नहीं सोचो कि यह रांग है। लेकिन राइट क्या है और राइट पर चलने की विधि स्पष्ट हो। अगर किसी को कहते रहेंगे तो कहने से परिवर्तन नहीं होगा लेकिन कहने के साथ-साथ विधि स्पष्ट करो तो सिद्धि हो। जो आत्मा स्वराज्य चलाने में सफल रहती है तो सफल राज्य अधिकारी की निशानी है वह सदा अपने पुरुषार्थ से और साथ-साथ जो भी सम्पर्क में आने वाली आत्माएं हैं वह भी सदा उस सफल आत्मा से सन्तुष्ट होंगी और सदा दिल से उस आत्मा के प्रति शुक्रिया निकलता रहेगा। सर्व के दिल से, सदा दिल के साज से वाह-वाह के गीत बजते रहेंगे, उनके कानों में सर्व द्वारा यह वाह-वाह का शुक्रिया का संगीत सुनाई देगा। यह गीत आटोमेटिक है। इसके लिए टेपरिकार्डर बजाना नहीं पड़ता। इसके लिए कोई साधनों की आवश्यकता नहीं। यह अनहद गीत है। तो ऐसे सफल राज्य अधिकारी बने हो? क्योंकि अभी के सफल राज्य अधिकारी भविष्य में सफलता का फल विश्व का राज्य प्राप्त करेंगे। अगर सम्पूर्ण सफलता नहीं, कभी कैसे हैं, कभी कैसे हैं, कभी 100 सफलता है, कभी सिर्फ सफलता है। 100 सफल नहीं हैं तो ऐसे राज्य अधिकारी आत्मा को विश्व का, राज्य का तख्त, ताज प्राप्त नहीं होता लेकिन रॉयल फैमिली में आ जाता है। एक हैं तख्तनशीन और दूसरे हैं तख्तनशीन रॉयल फैमिली। तख्त नशीन अर्थात् वर्तमान समय भी सदा डबल तख्तनशीन रहे। डबल तख्त कौन सा? एक अकाल तख्त और दूसरा बाप का दिल तख्त। तो जो अभी सदा डबल तख्त नशीन है, कभी-कभी वाला नहीं, ऐसे सदा दिलतख्तनशीन विश्व का भी तख्तनशीन होता है। तो चेक करो – सारे दिन में डबल तख्तनशीन रहे? अगर तख्तनशीन नहीं तो आपके सहयोगी कर्मचारी कर्मिन्द्रियाँ भी आपके आर्डर पर नहीं चल सकतीं। राजा का आर्डर माना जाता है। राज्य (तख्त) पर नहीं हो और वह आर्डर करे तो माना नहीं जाता है। आजकल तो तख्त के बजाए कुर्सी हो गई है, तख्त तो खत्म हो गया। योग्य नहीं है तो तख्त गायब हो गया है। कुर्सी पर हैं तो सब मानेंगे। अगर कुर्सी पर भी नहीं हैं तो सब नहीं मानेंगे। लेकिन आप तो कुर्सी वाले नेता नहीं हो। स्वराज्य अधिकारी राजे हो। सभी राजा हो कि कोई प्रजा भी है? राजयोगी अर्थात् राजा। देखो कितने पद्म पद्म भाग्यवान हो! दुनिया, उसमें भी विशेष विदेश हलचल में है। वह वार और हार की दुविधा में है। कोई हार रहा है, कोई वार कर रहा है और कोई हालचाल सुन करके उसी हलचल में है। तो वह है हार और वार की हलचल में और आप हो बापदादा के प्यार में। परमात्म प्यार दूर-दूर से खेंच कर लाया है। कैसी भी परिस्थितियाँ हो लेकिन परमात्मा प्यार के आगे परिस्थितियाँ रोक नहीं सकतीं। परमात्म प्यार बुद्धिवान की बुद्धि बन परिस्थिति को श्रेष्ठ स्थिति में बदल लेता है। डबल विदेशियों में भी देखो पहले पोलेण्ड वाले कितने प्रयत्न करते थे, असम्भव लगता था और अभी क्या लगता है? रशिया वाले भी असम्भव समझते थे, चाहे 24 घण्टा भी लाइन में खड़ा रहना पड़ा, पहुँच तो गये ना। मुश्किल सहज हो गया। तो शुक्रिया कहेंगे ना। ऐसे ही सदा होता रहेगा। कई सोचते हैं अन्त में विमान बन्द हो जायेंगे फिर हम कैसे जायेंगे? परमात्म प्यार में वह शक्ति है जो किसी की आंखों में ऐसा जादू कर देगी जो वह आपके भेजने लिए परवश हो जायेंगे लेकिन सिर्फ प्यार करने वाले नहीं, लेकिन निभाने वाले हों। निभाने वाली आत्माओं से बाप का भी वायदा है – अन्त तक हर समस्या को पार करने में प्रीति की रीति निभाते रहेंगे। कभी-कभी प्रीत करने वाले नहीं बनना। सदा निभाने वाले। प्रीत करना अनेकों को आता है लेकिन निभाना कोई-कोई को आता है इसलिए आप कोई में कोई हो।

बापदादा सदैव डबल विदेशी बच्चों को देख खुश होते हैं क्योंकि हिम्मत से बाप की मदद के पात्र बन अनेक प्रकार की माया के बान्डेज और अनेक प्रकार के रीति, रिवाज और रस्म के बाउन्ड्रीज़ को पार करके पहुँच गये हैं। यह हिम्मत भी कम नहीं है। हिम्मत सभी ने अच्छी रखी है। चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, दोनों बैठे हैं। बहुत पुराने से पुराने भी हैं और इस कल्प के नये भी हैं। दोनों की हिम्मत अच्छी है। इस हिम्मत में तो सभी नम्बरवन हो फिर नम्बर किस बात में है? डबल विदेशी विशेष पुरुषार्थ करते हैं और रूहरिहान में भी कहते हैं – 108 की माला में जरूर आयेंगे। कोई क्वेश्चन करते हैं कि आ सकते हैं? आने अवश्य हैं। डबल विदेशियों के लिए भी माला में सीट रिजर्व्ड है। लेकिन कौन और कितने – वह आगे चल सुनायेंगे। तो नम्बर क्यों बनते हैं? हर एक अपने अधिकार से कहते हो – मेरा बाबा है। तो अधिकार भी पूरा है फिर भी नम्बर क्यों? जो नम्बरवन होगा और नम्बर आठ होगा, दोनों में अन्तर तो होगा ना! इतना अन्तर क्यों पड़ता? 16 हजार की तो बात छोड़ो, 108 में भी देखो – कहाँ एक, कहाँ

108। तो क्या अन्तर हुआ ? हिम्मत में सब पास हो लेकिन हिम्मत के रिटर्न में जो बाप और ब्राह्मण परिवार द्वारा मदद मिलती है, उस मदद को प्राप्त कर कार्य में लगाना और समय पर मदद का यूज करना, जिस समय जो मदद अर्थात् शक्ति चाहिए उसी शक्ति द्वारा समय पर काम लेना, यह निर्णय शक्ति और कार्य में लगाने की कार्य शक्ति इसमें अन्तर हो जाता है। सर्वशक्तिवान बाप द्वारा सर्व शक्तियों का वर्सा सभी को मिलता है। कोई को 8 शक्ति, कोई को 6 शक्ति नहीं मिलती। सर्वशक्तियाँ मिलती हैं। पहले भी सुनाया ना कि विधि से सिद्धि होती है। कार्य शक्ति की विधि – एक है बाप के बनने की विधि, दूसरी है बाप से वर्सा प्राप्त करने की विधि और तीसरी है प्राप्त किये हुए वर्से को कार्य में लगाने की विधि। कार्य में लगाने की विधि में अन्तर हो जाता है। प्वाइन्ट्स सबके पास है। एक टॉपिक पर वर्कशॉप करते हो तो कितने प्वाइन्ट्स निकालते हो! तो एक प्वाइन्ट बुद्धि में रखना, यह है एक विधि, और दूसरा है प्वाइन्ट बन प्वाइन्ट को कार्य में लगाना। प्वाइन्ट रूप भी हो और प्वाइन्ट्स भी हों। दोनों का बैलेन्स हो। यह है नम्बरवन विधि से से नम्बरवन सिद्धि प्राप्त करना। कभी प्वाइन्ट के विस्तार में चले जाते हो। कभी प्वाइन्ट रूप में टिक जाते हैं। प्वाइन्ट रूप और प्वाइन्ट साथ-साथ चाहिए। कार्य शक्ति को बढ़ाओ। समझा। नम्बरवन आना है तो यह करना पड़ेगा।

आजकल साइन्स की शक्ति, साइन्स के साधनों द्वारा कार्य-शक्ति कितनी तेज कर रही है! जो चैतन्य मनुष्य कार्य कर सकता है, जितने समय और जितना यथार्थ चैतन्य मनुष्य कर सकता है उतना साइन्स के साधन कम्प्युटर कितना जल्दी काम करता है। चैतन्य मनुष्य को भी करेक्शन करता है। तो जब साइन्स के साधन कार्य-शक्ति को तीव्र बना सकते हैं, कई ऐसी इन्वेन्शन निकली भी हैं और निकल भी रही हैं, तो ब्राह्मण आत्माओं की साइलेन्स की शक्ति कितना तीव्र कार्य यथार्थ सफल कर सकती है। सेकेण्ड में निर्णय हो, सेकेण्ड में कार्य को प्रैक्टिकल में सफल करो। सोचना और करना – इसका भी बैलेन्स चाहिए। कई ब्राह्मण आत्माएं सोचती बहुत है, लेकिन करने के समय जितना सोचते हैं उतना करते नहीं हैं और कई फिर करने में लग जाते हैं – सोचते पीछे हैं कि ठीक किया वा नहीं किया? क्या करना है अभी? तो सोचना और करना – दोनों साथ-साथ हो। नहीं तो क्या होता है? सोचते हैं कि यह करना है लेकिन सोच के करेंगे और सोचते सोचते कार्य का समय और परिस्थिति बदल जाती है। फिर कहते हैं करना तो था, सोचा तो था..। जब साइन्स के साधन तीव्र गति के हो रहे हैं, एक सेकेण्ड में क्या नहीं कर लेते हैं! विनाश के साधन तीव्र गति के तरफ जा रहे हैं तो स्थापना के साइलेन्स के शक्तिशाली साधन क्या नहीं कर सकते! अभी तो प्रकृति आप मालिकों का आवाहन कर रही है। आप लोग उनको आर्डर नहीं करते तो प्रकृति कितनी धमाल कर रही है! मालिक तैयार हो जाओ तो प्रकृति आपका स्वागत करे। ऐसे तैयार हो? कि अभी तैयार कर रहे हो? सम्पूर्ण तैयारी की महिमा आपके भक्त लोग अब तक कर रहे हैं। अपनी महिमा को जानते हो? अब चेक करो कि इन सबमें सर्वगुण सम्पन्न भी हो, सम्पूर्ण निर्विकारी भी हो, सम्पूर्ण अहिंसक और मर्यादा पुरुषोत्तम भी हो, 16 कला सम्पन्न भी हो? सभी बातों में फुल है तो समझो मालिक तैयार हैं और इसमें परसेन्टेज है तो मालिक तैयार नहीं। बालक है लेकिन मालिक नहीं बने हैं। तो प्रकृति आप मालिक का स्वागत करेगी। बाप के बालक हैं। वह तो ठीक है। इसमें पास हो। लेकिन इन पांचों ही बातों में सम्पन्न बनना अर्थात् मालिक बनना। प्रकृति को आर्डर करें? अच्छा। तपस्या वर्ष में तो तैयार हो जायेंगे ना? फिर तो आर्डर करें ना? यह तपस्या वर्ष लास्ट चांस है या फिर है और थोड़ा चांस दो। फिर तो नहीं कहेंगे ना! अच्छा।

चारों ओर के सर्व राज्य अधिकारी आत्माओं को, सदा डबल तख्तनशीन विशेष आत्माओं को, सदा सोचना और करना दोनों शक्तियों को समान बनाने वाली वरदानी आत्माओं को, सदा परमात्म प्यार निभाने वाले सच्चे दिल वाले बच्चों को दिलाराम बाप-दादा का यादप्यार और नमस्ते।

17.3.91

सन्तुष्टमणि के श्रेष्ठ आसन पर आसीन होने के लिए प्रसन्नचित्त, निश्चित आत्मा बनो

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले:-

आज बापदादा अपने चारों ओर की सन्तुष्ट मणियों को देख रहे हैं। संगमयुग है ही सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट बनाने का युग। ब्राह्मण जीवन की विशेषता सन्तुष्टता है। सन्तुष्टता ही बड़े ते बड़ा खजाना है। सन्तुष्टता ही ब्राह्मण जीवन के प्योरिटी की पर्सनालिटी है। इस पर्सनालिटी से विशेष आत्मा सहज बन जाते हैं। सन्तुष्टता की पर्सनालिटी नहीं तो विशेष आत्मा कहला नहीं सकते हैं। आजकल दो प्रकार की पर्सनालिटी गाई जाती है – एक शारीरिक पर्सनालिटी, दूसरी पोजीशन की पर्सनालिटी। ब्राह्मण जीवन में जिस ब्राह्मण आत्मा में सन्तुष्टता की महानता है – उनकी सूरत में, उनके चेहरे में भी सन्तुष्टता की पर्सनालिटी दिखाई देती है और श्रेष्ठ स्थिति के पोजीशन की पर्सनालिटी दिखाई देती है। सन्तुष्टता का आधार है बाप द्वारा सर्व प्राप्त हुए प्राप्तियों की सन्तुष्टता अर्थात् भरपूर आत्मा। असन्तुष्टता का कारण अप्राप्ति होती है। सन्तुष्टता का कारण है सर्व प्राप्तियाँ। इसलिए बापदादा ने आप सभी ब्राह्मण बच्चों को ब्राह्मण जन्म होते ही पूरा वर्सा दे दिया ना या किसको थोड़ा, किसको बहुत दिया ? बापदादा सदैव सब बच्चों को यही कहते कि

बाप और वर्से को याद करना है। वर्सा है सर्व प्राप्तियाँ। इसमें सर्व शक्तियाँ भी आ जातीं, गुण भी आ जाते, ज्ञान भी आ जाता है। सर्व शक्तियाँ, सर्व गुण और सम्पूर्ण ज्ञान। सिर्फ ज्ञान नहीं, लेकिन सम्पूर्ण ज्ञान। सिर्फ शक्तियाँ और गुण नहीं लेकिन सर्व गुण और सर्व शक्तियाँ हैं, तो वर्सा सर्व अर्थात् सम्पन्नता का है। कोई कमी नहीं है। हर ब्राह्मण बच्चे को पूरा वर्सा मिलता है, अधूरा नहीं। सर्व गुणों में से दो गुण आपको, दो गुण इसको ऐसे नहीं बांटा है। फुल वर्सा अर्थात् सम्पन्नता, सम्पूर्णता। जब हर एक को पूरा वर्सा मिलता है तो जहाँ सर्व प्राप्ति है वहाँ सन्तुष्टता होगी। बापदादा सर्व ब्राह्मणों के सन्तुष्टता की पर्सनलिटि देख रहे थे कि कहाँ तक यह पर्सनलिटि आई है। ब्राह्मण जीवन में असन्तुष्टता का नाम-निशान नहीं। ब्राह्मण जीवन का मजा है तो इस पर्सनलिटि में है। यही मजे की जीवन है, मौज की जीवन है।

तपस्या का अर्थ ही है सन्तुष्टता की पर्सनलिटि नयनों में, चैन में, चेहरे में, चलन में दिखाई दे। ऐसे सन्तुष्ट मणियों की माला बना रहे थे। कितनी माला बनी होगी? सन्तुष्ट मणि अर्थात् बेदाग मणि। सन्तुष्टता की निशानी है – सन्तुष्ट आत्मा सदा प्रसन्नचित्त स्वयं को भी अनुभव करेगी और दूसरे भी प्रसन्न होंगे। प्रसन्नचित्त स्थिति में प्रश्न चित्त नहीं होता। एक होता है प्रसन्नचित्त, दूसरा है प्रश्न-चित्त। प्रश्न अर्थात् क्वेश्चन। प्रसन्नचित्त ड्रामा के नॉलेजफुल होने के कारण प्रसन्न रहता, प्रश्न नहीं करता। जो भी प्रश्न अपने प्रति या किसके प्रति भी उठता उसका उत्तर स्वयं को पहले आता। पहले भी सुनाया था व्हाट (What) और व्हाई (Why) नहीं, लेकिन डॉट। क्या, क्यों नहीं, फुलस्टॉप बिन्दु। एक सेकेण्ड में विस्तार, एक सेकेण्ड में सार। ऐसा प्रसन्नचित्त सदा निश्चिन्त रहता है। तो चेक करो – ऐसी निशानियाँ मुझ सन्तुष्ट मणि में हैं? बापदादा ने तो सबको टाइटिल दिये हैं – सन्तुष्ट मणि का। तो बापदादा पूछ रहे हैं कि हे सन्तुष्ट मणियो, सन्तुष्ट हो? फिर प्रश्न है – स्वयं से अर्थात् स्वयं के पुरुषार्थ से, स्वयं के संस्कार परिवर्तन के पुरुषार्थ से, स्वयं के पुरुषार्थ की परसेन्टेज में, स्टेज में सदा सन्तुष्ट हो? अच्छा दूसरा प्रश्न – स्वयं के मन्सा, वाचा और कर्म, अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा सेवा में सदा सन्तुष्ट हो? तीनों ही सेवा, सिर्फ एक सेवा नहीं। तीनों ही सेवा में और सदा सन्तुष्ट हो? सोच रहे हैं, अपने को देख रहे हैं कि कहाँ तक सन्तुष्ट हैं? अच्छा, तीसरा प्रश्न – सर्व आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में स्वयं द्वारा वा सर्व द्वारा सदा सन्तुष्ट हो? क्योंकि तपस्या वर्ष में तपस्या का, सफलता का फल यही प्राप्त करना है। स्वयं में, सेवा में और सर्व में सन्तुष्टता। चार घण्टा तो योग किया – बहुत अच्छा, और चार से आठ घण्टा तक भी पहुँच जायेंगे। यह भी बहुत अच्छा। योग का सिद्धि स्वरूप हो। योग विधि है। लेकिन इस विधि से सिद्धि क्या मिली? योग लगाना यह विधि है, योग की प्राप्ति यह सिद्धि है। तो जैसे 8 घण्टे का लक्ष्य रखा है तो कम से कम यह तीन प्रकार की सन्तुष्टता की सिद्धि का स्पष्ट श्रेष्ठ लक्ष्य रखो। कई बच्चे स्वयं को मियाँ मिटठु माफिक भी सन्तुष्ट समझते हैं। ऐसे सन्तुष्ट नहीं बनना। एक है दिल माने, दूसरा है दिमाग माने। दिमाग से अपने को समझते सन्तुष्ट हैं ही, क्या परवाह है। हम तो बेपरवाह हैं। तो दिमाग से स्वयं को सन्तुष्ट समझना – ऐसी सन्तुष्टता नहीं, यथार्थ समझना है। सन्तुष्टता की निशानियाँ स्वयं में अनुभव हो। चित्त सदा प्रसन्न हो, पर्सनलिटि हो। स्वयं को पर्सनलिटि समझें और दूसरे नहीं समझें इसको कहा जाता है – मियाँमिटठू। ऐसे सन्तुष्ट नहीं। लेकिन यथार्थ अनुभव द्वारा सन्तुष्ट आत्मा बनो। सन्तुष्टता अर्थात् दिल-दिमाग सदा आराम में होंगे। सुख-चैन की स्थिति में होंगे। बेचैन नहीं होंगे। सुख चैन होगा। ऐसी सन्तुष्ट मणियाँ सदा बाप के मस्तक में मस्तक मणियों समान चमकती हैं। तो स्वयं को चेक करो। सन्तुष्टता बाप की और सर्व की दुवाएं दिलाती है। सन्तुष्ट आत्मा समय प्रति समय सदा अपने को बाप और सर्व की दुवाओं के विमान में उड़ता हुआ अनुभव करेगा। यह दुवाएं उनका विमान है। सदा अपने को विमान में उड़ता हुआ अनुभव करेगा। दुवा मांगेगा नहीं, लेकिन दुवाएं स्वयं उसके आगे स्वतः ही आयेगी। ऐसे सन्तुष्ट मणि अर्थात् सिद्धि स्वरूप तपस्वी। अल्प काल की सिद्धियाँ नहीं, यह अविनाशी और रूहानी सिद्धियाँ हैं। ऐसी सन्तुष्ट मणियों को देख रहे थे। हरेक अपने आपसे पूछे – मैं कौन?

तपस्या वर्ष का उमंग-उत्साह तो अच्छा है। हर एक यथा शक्ति कर भी रहे हैं। और आगे के लिए भी उत्साह है। यह उत्साह बहुत अच्छा है। अभी तपस्या द्वारा प्राप्तिओं को स्वयं अपने जीवन में और सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में प्रत्यक्ष करो। अपने आपमें अनुभव करते हो लेकिन अनुभव को सिर्फ मन-बुद्धि से अनुभव किया, यहाँ तक नहीं रखो। उनको चलन और चेहरे तक लाओ, सम्बन्ध-सम्पर्क तक लाओ। तब पहले स्वयं में प्रत्यक्ष होंगे, फिर सम्बन्ध में प्रत्यक्ष होंगे फिर विश्व की स्टेज पर प्रत्यक्ष होंगे। तब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा। जैसे आपके यादगार शास्त्रों में कहते हैं – शंकर ने तीसरी आंख खोली और विनाश हो गया। तो शंकर अर्थात् अशरीरी तपस्वी रूप। विकारों रूपी सांप को गले का हार बना दिया। सदा ऊंची स्थिति और ऊंचे आसनधारी। यह तीसरी आंख अर्थात् सम्पूर्णता की आंख, सम्पन्नता की आंख। जब आप तपस्वी सम्पन्न, सम्पूर्ण स्थिति से विश्व परिवर्तन का संकल्प करेंगे तो यह प्रकृति भी सम्पूर्ण हलचल की डांस करेगी। उपद्रव मचाने की डांस करेगी। आप अचल होंगे और वह हलचल में होगी क्योंकि इतने सारे विश्व की सफाई कौन करेगा? मनुष्यात्माएं कर सकती हैं? यह वायु, धरती, समुद्र, जल – इनकी हलचल ही सफाई करेगी। तो ऐसी सम्पूर्णता की स्थिति इस तपस्या से बनानी है। प्रकृति भी आपका संकल्प से आर्डर तब मानेगी जब पहले आपके स्वयं के, सदा के सहयोगी कर्मेन्द्रियाँ मन-बुद्धि-संस्कार आर्डर मानें। अगर स्वयं के, सदा के सहयोगी आर्डर नहीं मानते तो प्रकृति

क्या आर्डर मानेगी? इतनी पॉवरफुल तपस्या की ऊंची स्थिति हो जो सर्व के एक संकल्प, एक समय पर उत्पन्न हो। सेकेण्ड का संकल्प हो – “परिवर्तन”, और प्रकृति हाजिर हो जाये। जैसे विश्व की ब्राह्मण आत्माओं का एक ही टाइम वर्ल्ड पीस का योग करते हो ना। तो सभी का एक समय और एक ही संकल्प यादगार रहता है। ऐसे सर्व के एक संकल्प से प्रकृति हलचल की डांस शुरु कर देगी। इसलिए कहते ही हो – स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन। यह पुरानी दुनिया से नई दुनिया परिवर्तन कैसे होगी? आप सर्व के शक्तिशाली संकल्प से संगठित रूप से सबका एक संकल्प उत्पन्न होगा। समझा क्या करना है? तपस्या इसको कहा जाता है। अच्छा।

बापदादा डबल विदेशी बच्चों को देख सदा हर्षित रहते हैं। ऐसे नहीं कि भारतवासियों को देख हर्षित नहीं होते। अभी डबल विदेशियों का टर्न है इसलिए कहते हैं। भारत पर तो बाप सदा प्रसन्न हैं। तब तो भारत में आये हैं। और आप सबको भी भारतवासी बना दिया है। इस समय आप सभी विदेशी हो या भारतवासी हो। भारतवासी में भी मधुबन वासी। मधुबन वासी बनना अच्छा लगता है। अभी जल्दी-जल्दी सेवा पूरी करो तो मधुबन वासी बन ही जायेंगे। सारे विदेश में सन्देश जल्दी जल्दी देकर पूरा करो। फिर यहाँ आयेंगे तो फिर भेजेंगे नहीं। तब तक स्थान भी बन जायेंगे। देखो मैदान तो लम्बा-चौड़ा (पीस पार्क) पड़ा ही है, वहाँ पहले से प्रबन्ध कर लेंगे फिर आपको तकलीफ नहीं होगी। लेकिन जब ऐसा समय आयेगा उस समय अपनी अटैची पर भी सो जायेंगे। खटिया नहीं लेंगे। वह समय ही और होगा। यह समय और है। अभी तो सेवा का एक ही समय पर, मंसा-वाचा-कर्मणा इकट्ठा संकल्प हो तब है सेवा की तीव्र गति। मन्सा द्वारा पॉवरफुल, वाणी द्वारा नॉलेजफुल, सम्बन्ध-सम्पर्क अर्थात् कर्म द्वारा लवफुल। यह तीनों अनुभूतियाँ एक ही समय पर इकट्ठी हों। इसको कहा जाता है – तीव्र गति की सेवा।

अच्छा तन से ठीक हैं, मन से ठीक हैं? फिर भी दूर-दूर से आते हैं तो बापदादा भी दूर से आये हुए बच्चों को खुश देख खुश होते हैं। फिर भी दूर से आने वाले अच्छे हो। क्योंकि विमान में आते हो। जो इस कल्प में पहली बार आये हैं उन्हीं को बापदादा विशेष यादप्यार दे रहे हैं। फिर भी हिम्मत वाले अच्छे हैं। यहाँ से जाते ही टिकिट का इकट्ठा करते हैं और आ जाते हैं। यह भी एक याद की विधि है। जाना है, जाना है, जाना है....। यहाँ आते हो तो सोचते हो – विदेश जाना है। फिर जाने के साथ आना सोचते हो। ऐसा भी टाइम आना ही है, जो गवर्मेन्ट भी समझेगी कि आबू की शोभा यह ब्राह्मण आत्माएं ही है। अच्छा।

चारों ओर की सर्व महान सन्तुष्ट आत्माओं को, सदा प्रसन्नचित्त निश्चिन्त रहने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा एक ही समय तीन सेवा करने वाले तीव्र गति के सेवाधारी आत्माओं को, सदा श्रेष्ठ स्थिति के आसनधारी तपस्वी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों के साथ अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

प्रथम ग्रुप :- सभी अपने को होली हंस समझते हो? होलीहंस का विशेष कर्म क्या है? (हरेक ने सुनाया) जो विशेषताएं सुनाई वह प्रैक्टिकल में कर्म में आती हैं? क्योंकि सिवाए आप ब्राह्मणों के होलीहंस और कौन हो सकता है? इसलिए फलक से कहो। जैसे बाप सदा ही प्यार हैं, सदा सर्वशक्तियाँ कर्म में लाते हैं, ऐसे ही आप होलीहंस भी सर्वशक्तियाँ प्रैक्टिकल में लाने वाले और सदा पवित्र हैं। थे और सदा रहेंगे। तीनों ही काल याद है ना? बापदादा बच्चों का अनेक बार बजाया हुआ पार्ट देख हर्षित होते हैं। इसलिए मुश्किल नहीं लगता है ना। मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे कभी मुश्किल शब्द स्वप्न में भी नहीं आ सकता। ब्राह्मणों की डिक्शनरी में मुश्किल अक्षर है? कहाँ छोटे अक्षरों में तो नहीं है? माया के भी नॉलेजफुल हो गये हो ना? जहाँ फुल है वहाँ फेल नहीं हो सकते। फेल होने का कारण क्या होता है? जानते हुए भी फेल क्यों होते हो? अगर कोई जानता भी हो और फेल भी होता है तो उसे क्या कहेंगे? कोई भी बात होती है तो फेल होने का कारण है कि कोई न कोई बात फील कर लेते हो। फीलिंग फ्लु हो जाता है। और फ्लु क्या करता है – पता है? कमजोर कर देता है। उससे बात छोटी होती है लेकिन बड़ी बन जाती है तो अभी फुल बनो। फेल नहीं होना है, पास होना है। जो भी बात होती है उसे पास करते चलो तो पास विथ ऑनर हो जायेंगे। तो पास करना है, पास होना है और पास रहना है। जब फलक से कहते हो कि बापदादा से जितना मेरा प्यार है उतना और किसी का नहीं है। तो जब प्यार है तो पास रहना है या दूर रहना है? तो पास रहना है और पास होना है। यू.के. वाले तो बापदादा की सर्व आशाओं को पूर्ण करने वाले हो ना। सबसे नम्बरवन बाप की शुभ आशा कौन सी है? खास यू.के. वालों के लिए कह रहे हैं। बड़े बड़े माइक लाने हैं। जो बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनें और बाप के नजदीक आएँ। अभी यू.के. में, अमेरिका में और भी विदेश के देशों में माइक निकले जरूर है लेकिन एक हैं सहयोगी और दूसरे हैं सहयोगी-समीप वाले। तो ऐसे माइक तैयार करो। वैसे सेवा में वृद्धि अच्छी हो रही है, होती भी रहेगी। अच्छा- रशिया वाले छोटे बच्चे हैं लेकिन लकी हैं। आपका बाप से कितना प्यार है! अच्छा है बापदादा भी बच्चों की हिम्मत पर खुश हैं। अभी मेहनत भूल गई ना। अच्छा।

ग्रुप नं. 2:- बापदादा के समीप आत्माएं हैं – ऐसा अनुभव करते हो? जो समीप आत्माएं होती हैं तो समीप की निशानी क्या होती है? समीपता की निशानी है – समान। तो सदा हर कर्म में अपने को बाप समान अनुभव करते हो? ब्रह्मा बाप का श्रेष्ठ संकल्प

क्या था? जो बाप कहते हैं, वह करना। तो आपका भी संकल्प ऐसा है? हर संकल्प में दृढ़ता है? या किसमें है, किसमें नहीं है? क्योंकि जैसे ब्रह्मा बाप ने दृढ़ संकल्प से हर कार्य में सफलता प्राप्त की, तो दृढ़ता सफलता का आधार बना। ऐसे फालो फादर करो। उनके बोल की विशेषता क्या थी? तो अपने में चेक करो – वह विशेषताएं हमारे में हैं? ऐसे ही कर्म में विशेषता क्या रही? कर्म और योग साथ-साथ रहा? ऐसे कर्म में भी चेक करो? फिर देखो – संकल्प, बोल और कर्म में कितना समीप है? जितना समीप होंगे उतना ही समान होंगे। जैसे ब्रह्मा बाप ने एक बाप, दूसरा न कोई – यह प्रैक्टिकल में कर्म करके दिखाया। ऐसे बाप समान बनने वालों को भी इसी कर्म को फालो करना है। तब कहेंगे बाप समान। इतनी हिम्मत है? कभी दिलशिकस्त तो नहीं बनते? पास्ट इज पास्ट, फ्युचर नहीं करना। फ्युचर के लिए यही ब्रह्मा बाप के समान दृढ़ संकल्प करना कि कभी दिलशिकस्त नहीं बनना है, सदा दिलखुश रहना है। फ्युचर के लिए इतनी हिम्मत है ना? माया हिलाये तो भी नहीं हिलना। अगर मायाजीत बनने का दृढ़ संकल्प होगा तो माया कुछ नहीं करेगी। सदैव यह स्मृति रखो कि कितने भी बड़े रूप से माया आये लेकिन नर्थिंग न्यु। कितने बार विजयी बने हो? तो फिर से बनना बड़ी बात नहीं होगी। अगर माया हिमालय जितने बड़े रूप से आये तो क्या करेंगे? उस समय रास्ता नहीं निकालना, उड़ जाना। सेकेण्ड में उड़ती कला वाले के लिए पहाड़ भी रुई बन जायेगी। तो कितना भी बड़ा पहाड़ का रूप हो, लेकिन डरना नहीं, घबराना नहीं। यह कागज का शेर है, कागज का पहाड़ है। ऐसे पॉवरफुल आत्माएं ब्रह्मा बाप को फालो कर समीप और समान बन जायेंगी। अच्छा।

ग्रुप नं. 3 :- इस ड्रामा के श्रेष्ठ युग संगम की श्रेष्ठ आत्माएं हैं – ऐसे अनुभव करते हो? संगमयुग की महिमा अच्छी तरह से स्मृति में रहती है? क्योंकि संगमयुग को वरदान मिला हुआ है – संगमयुग में ही वरदाता वरदानों से झोली भरते हैं। आप सबकी बुद्धि रूपी झोली वरदानों से भरी हुई है? खाली तो नहीं है? थोड़ी खाली है या इतना भरा हुआ है जो औरों को भी दे सकते हो? क्योंकि वरदानों का खजाना ऐसा है, जो जितना औरों को देंगे, उतना आपमें भरता जायेगा। तो देते जाओ और बढ़ता जाता है। जितना बढ़ाने चाहते हो उतना देते जाओ। देने की विधि आती है ना? क्योंकि जानते हो – यह सब अपना ही परिवार है। आपके ब्रदर्स है ना? अपने परिवार को खाली देख रह नहीं सकते हैं। ऐसा रहम आता है? क्योंकि जैसा बाप, वैसे बच्चे। तो सदैव यह चेक करो कि मैंने मर्सीफुल बाप का बच्चा बन कितनी आत्माओं पर रहम किया है? सिर्फ वाणी से नहीं, मन्सा अपनी वृत्ति से वायुमण्डल द्वारा भी आत्माओं को बाप द्वारा मिली हुई शक्तियाँ दे सका। तो मन्सा सेवा करने आती है? जब थोड़े समय में सारे विश्व की सेवा सम्पन्न करनी है तो तीव्र गति से सेवा करो। जितना स्वयं को सेवा में बिजी रखेंगे उतना स्वयं सहज मायाजीत बन जायेंगे। क्योंकि औरों को मायाजीत बनाने से उन आत्माओं की दुवाएं आपको और सहज आगे बढ़ाती रहेगी। मायाजीत बनना सहज लगता है या कठिन? आप जब कमजोर बन जाते हैं तब माया शक्तिशाली बनती है। आप कमजोर नहीं बनो। बाबा तो सदैव चाहते हैं कि हर एक बच्चा मायाजीत बनें। तो जिससे प्यार होता है, वो जो चाहता है, वही किया जाता है। बाप से तो प्यार है ना? तो करो। जब यह याद रहेगा कि बाप मेरे से यही चाहता है तो स्वतः ही शक्तिशाली हो जायेंगे और मायाजीत बन जायेंगे। माया आती तब है, जब कमजोर बनते हो। इसलिए सदा मास्टर सर्वशक्तिवान बनो। मास्टर सर्वशक्तिवान बनने की विधि है – चलते-फिरते याद की शक्ति और सेवा की शक्ति देने में बिजी रहो। बिजी रहना अर्थात् मायाजीत रहना। रोज अपने मन का टाइमटेबुल बनाओ। मन बिजी होगा तो मनजीत मायाजीत हो ही जायेंगे।

ग्रुप नं. 4 :- सभी अपने को इस समय भी तख्तनशीन आत्माएं अनुभव करते हो? डबल तख्त है या सिंगल? आत्मा का अकालतख्त भी याद है और दिलतख्त भी याद है। अगर अकाल तख्त को भूलते हो तो बॉडी कांशेस में आते हो। फिर परवश हो जाते हो। सदैव यही स्मृति रखो कि मैं इस समय इस शरीर का मालिक हूँ। तो मालिक अपनी रचना के वश कैसे हो सकता है? अगर मालिक अपनी रचना के वश हो गया तो मोहताज हो गया ना! तो अभ्यास करो और कर्म करते हुए बीच-बीच में चेक करो कि मैं मालिकपन की सीट पर सेट हूँ? या नीचे तो नहीं आ जाता? सिर्फ रात को चेक नहीं करो। कर्म करते बीच-बीच में चेक करो। वैसे भी कहते हैं कि कर्म करने से पहले सोचो, फिर करो। ऐसे नहीं कि पहले करो, फिर सोचो। फिर निरन्तर मालिकपन की स्मृति और नशे में रहेंगे। संगमयुग पर बाप आकर मालिकपन की सीट पर सेट करता है। स्वयं भगवान आपको स्थिति की सीट पर बिठाता है। तो बैठना चाहिए ना! अच्छा- ओम् शान्ति।

3.4.91

सर्व हदों से निकल बेहद के वैरागी बनो

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले-

आज कल्प बाद फिर से मिलन मनाने सभी बच्चे अपने साकारी स्वीट होम मधुबन में पहुँच गये हैं। साकारी वतन का स्वीट होम मधुबन ही है। जहाँ बाप और बच्चों का रूहानी मेला लगता है। मिलन मेला होता है। तो सभी बच्चे मिलन मेले में आये हुए हो। यह

बाप और बच्चों का मिलन मेला सिर्फ इस संगमयुग पर और मधुबन में ही होता है। इसलिए सभी भाग कर मधुबन में पहुँचे हो। मधुबन बापदादा का साकार रूप में भी मिलन कराता और साथ-साथ सहज याद द्वारा अव्यक्त मिलन भी कराता है, क्योंकि मधुबन धरनी को रूहानी मिलन की, साकार रूप में मिलन की अनुभूति का वरदान मिला हुआ है। वरदानी धरनी होने के कारण मिलन का अनुभव सहज करते हो। और कोई भी स्थान पर ज्ञान सागर और ज्ञान नदियों का मिलन मेला नहीं होता। सागर और नदियों के मिलन मेले का यह एक ही स्थान है। ऐसे महान वरदानी धरनी पर आये हो – ऐसे समझते हो ?

तपस्या वर्ष में विशेष इस कल्प में पहली बार मिलने वाले बच्चों को गोल्डन चांस मिला है। कितने लकी हो! तपस्या के आदि में ही नये बच्चों को एक्स्ट्रा बल मिला है। तो आदि में ही यह एक्स्ट्रा बल आगे के लिए, आगे बढ़ने में सहयोगी बनेगा। इसलिए नये बच्चों को ड्रामा ने भी आगे बढ़ने का सहयोग दिया है। इसलिए यह उलहना नहीं दे सकेंगे कि हम तो पीछे आये हैं। नहीं, तपस्या वर्ष को भी वरदान मिला हुआ है। तपस्या वर्ष में वरदानी भूमि पर आने का अधिकार मिला है, चांस मिला है। यह एक्स्ट्रा भाग्य कम नहीं है! यह वर्ष का, मधुबन धरनी का और अपने पुरुषार्थ का – तीनों वरदान विशेष आप नये बच्चों को मिले हुए हैं। तो कितने लकी हुए! इतने अविनाशी भाग्य का नशा साथ में रखना। सिर्फ यहाँ तक नशा न रहे, लेकिन अविनाशी बाप है, अविनाशी आप श्रेष्ठ आत्माएं हो, तो भाग्य भी अविनाशी है। अविनाशी भाग्य को अविनाशी रखना। यह सिर्फ सहज अटेन्शन देने की बात है। टेन्शन वाला अटेन्शन नहीं। सहज अटेन्शन हो, और मुश्किल है भी क्या? मेरा बाबा जान लिया, मान लिया। तो जो जान लिया, मान लिया, अनुभव कर लिया, अधिकार प्राप्त हो गया फिर मुश्किल क्या है? सिर्फ एक ही मेरा बाबा – यह अनुभव होता रहे। यही फुल नॉलेज है।

एक “बाबा” शब्द में सारा आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान समाया हुआ है। क्योंकि बीज है ना। बीज में तो सारा झाड़ समाया हुआ होता है ना। विस्तार भूल सकता है लेकिन सार एक बाबा शब्द – यह याद रहना मुश्किल नहीं है। सदा सहज है ना! कभी सहज, कभी मुश्किल नहीं। सदा बाबा मेरा है। कि कभी कभी मेरा है? जब सदा बाबा मेरा है तो याद भी सदा सहज है। कोई मुश्किल बात नहीं। भगवान ने कहा – आप मेरे और आपने कहा – आप मेरे। फिर क्या मुश्किल है? इसलिए विशेष नये बच्चे और आगे बढ़ो। अभी भी आगे बढ़ने का चांस है। अभी फाइनेल समाप्ति का बिगुल नहीं बजा है। इसलिए उड़ो और औरों को भी उड़ाते चलो। इसकी विधि है वेस्ट अर्थात् व्यर्थ को बचाओ। बचत का खाता, जमा का खाता बढ़ाते चलो। क्योंकि 63 जन्म से बचत नहीं की है लेकिन गंवाया है। सभी खाते व्यर्थ गंवा कर खत्म कर दिया है। श्वास का खजाना भी गंवाया, संकल्प का खजाना भी गंवाया, समय का खजाना भी गंवाया, गुणों का खजाना भी गंवाया, शक्तियों का खजाना भी गंवाया, ज्ञान का खजाना भी गंवाया। कितने खाते खाली हो गये! अभी इन सभी खातों को जमा करना है। जमा होने का समय भी अभी है और जमा करने की विधि भी बाप द्वारा सहज मिल रही है। विनाशी खजाने खर्च करने से कम होते हैं, खुटते हैं और यह सब खजाने जितना स्व के प्रति, और औरों के प्रति शुभ वृत्ति से कार्य में लगायेंगे, उतना जमा होता जायेगा, बढ़ता जायेगा। यहाँ खजानों को कार्य में लगाना, यह जमा की विधि है। वहाँ रखना जमा करने की विधि है और यहाँ लगाना जमा करने की विधि है। फर्क है। समय को स्वयं प्रति या औरों प्रति शुभ कार्य में लगाओ तो जमा होता जायेगा। ज्ञान को कार्य में लगाओ। ऐसे गुणों को, शक्तियों को जितना लगायेंगे उतना बढ़ेगा। यह नहीं सोचना – जैसे वह लॉकर में रख देते हैं और समझते हैं बहुत जमा है, ऐसे आप भी सोचो मेरे बुद्धि में ज्ञान बहुत है, गुण भी मेरे में बहुत हैं, शक्तियाँ भी बहुत हैं। लॉकप करके नहीं रखो, यूज करो। समझा। जमा करने की विधि क्या है? कार्य में लगाना। स्वयं प्रति भी यूज करो, नहीं तो लूज हो जायेंगे। कई बच्चे कहते हैं कि सर्व खजाने मेरे अन्दर बहुत समाये हुए हैं। लेकिन समाये हुए की निशानी क्या है? समाये हुए हैं अर्थात् जमा है। तो उसकी निशानी है – स्व प्रति व औरों के प्रति समय पर काम में आये। काम में आये ही नहीं और कहे बहुत जमा है, बहुत जमा है। तो इसको यथार्थ जमा की विधि नहीं कहेंगे। इसलिए अगर यथार्थ विधि नहीं होगी तो समय पर सम्पूर्णता की सिद्धि नहीं मिलेगी। धोखा मिल जायेगा। सिद्धि नहीं मिलेगी।

गुणों को, शक्तियों को कार्य में लगाओ तो बढ़ते जायेंगे। तो बचत की विधि, जमा करने की विधि को अपनाओ। फिर व्यर्थ का खाता स्वतः ही परिवर्तन हो सफल हो जायेगा। जैसे भक्ति मार्ग में यह नियम है कि जितना भी आपके पास स्थूल धन है तो उसके लिये कहते हैं – दान करो, सफल करो तो बढ़ता जायेगा। सफल करने के लिए कितना उमंग-उत्साह बढ़ाते हैं, भक्ति में भी। तो आप भी तपस्या वर्ष में सिर्फ यह नहीं चेक करो कि व्यर्थ कितना गंवाया? व्यर्थ गंवाया, वह अलग बात है। लेकिन यह चेक करो कि सफल कितना किया? जो सारे खजाने सुनाये। गुण भी है बाप की देन। मेरा यह गुण है, मेरी शक्ति है – यह स्वप्न में भी गलती नहीं करना। यह बाप की देन है तो प्रभु देन। परमात्म देन को मेरा मानना – यह महापाप है। कई बार कई बच्चे साधारण भाषा में सोचते भी हैं और बोलते भी हैं कि मेरे इस गुण को यूज नहीं किया जाता, मेरे में यह शक्ति है, मेरी बुद्धि बहुत अच्छी है, इसको यूज नहीं किया जाता है। ‘मेरी’ कहाँ से आई? ‘मेरी’ कहाँ और मैली हुई। भक्ति में भी यह शिक्षा 63 जन्मों से देते रहे हैं कि मेरा नहीं मानो, तेरा मानो। लेकिन फिर भी माना नहीं। तो ज्ञान मार्ग में भी कहना तेरा और मानना मेरा – यह ठगी यहाँ नहीं

चलती। इसलिए प्रभु प्रसाद को अपना मानना – यह अभिमान और अपमान करना है। “बाबा-बाबा” शब्द कहाँ भी भूलो नहीं। बाबा ने शक्ति दी है, बुद्धि दी है, बाबा का कार्य है, बाबा का सेन्टर है, बाबा की सब चीजें हैं। ऐसे नहीं समझो – मेरा सेन्टर है, हमने बनाया है, हमारा अधिकार है। ‘हमारा’ शब्द कहाँ से आया? आपका है क्या? गठरी सम्भाल कर रखी है क्या? कई बच्चे ऐसा नशा दिखाते हैं – हमने सेन्टर का मकान बनाया है तो हमारा अधिकार है। लेकिन बनाया किसका सेन्टर? बाबा का सेन्टर है ना! तो जब बाबा को अर्पण कर दिया तो फिर आपका कहाँ से आया? मेरा कहाँ से आया? जब बुद्धि बदलती है तो कहते हैं – मेरा है। मेरे-मेरे ने ही मैला किया फिर मैला होना है? जब ब्राह्मण बने तो ब्राह्मण जीवन का बाप से पहला वायदा कौन सा है? नयों ने वायदा किया है, या पुरानों ने किया है? नये भी अभी तो पुराने होकर आये हो ना? निश्चय बुद्धि का फार्म भरकर आये हो ना? तो सबका पहला-पहला वायदा है – तन-मन-धन और बुद्धि सब तेरे। यह वायदा सभी ने किया है?

अभी वायदा करने वाले हो तो हाथ उठाओ। जो समझते हैं कि आइवेल के लिए कुछ तो रखना पड़ेगा। सब कुछ बाप को कैस दे देंगे? कुछ तो किनारा रखना पड़ेगा। जो समझते हैं कि यह समझदारी का काम है, वह हाथ उठाओ। कुछ किनारे रखा है? देखना, फिर यह नहीं कहना कि हमको किसने देखा? इतनी भीड़ में किसने देखा? बाप के पास तो टी.वी. बहुत क्लीयर है। उससे छिप नहीं सकते हो। इसलिए सोच, समझ करके थोड़ा रखना हो, भल रखो। पाण्डव क्या समझते हो? थोड़ा रखना चाहिए? अच्छी तरह से सोचो। जिनको रखना है वे अभी हाथ उठा ले, बच जायेंगे। नहीं तो यह समय, यह सभा, यह आपका कांध का हिलाना – यह सब दिखाई देगा। कभी भी मेरापन नहीं रखो। बाप कहा और पाप गया। बाप नहीं कहते तो पाप हो जाता है। पाप वश के हो करके, फिर बुद्धि काम नहीं करती है। कितना भी समझाओ, कहेंगे नहीं, यह तो राइट है। यह तो होना ही है। यह तो करना ही है। बाप को भी रहम पड़ता है। क्योंकि उस समय पाप के वश होते हैं। बाप भूल जाता है तो पाप आ जाता है। और पाप के वश होने के कारण जो बोलते हैं, जो करते हैं वह स्वयं भी नहीं समझते कि हम क्या कर रहे हैं, क्योंकि परवश होते हैं। तो सदा ज्ञान के होश में रहो। पाप के जोश में नहीं आओ। बीच-बीच में यह माया की लहर आती है। आप नये इन बातों से बच करके रहना। मेरा-मेरा में नहीं जाना। थोड़ा पुराने हो जाते हैं तो फिर यह मेरे-मेरे की माया बहुत आती है। मेरा विचार, मेरी बुद्धि ही नहीं है तो मेरा विचार कहाँ से आया? तो समझा, जमा करने की विधि क्या है? कार्य में लगाना। सफल करो, अपने ईश्वरीय संस्कारों को भी सफल करो तो व्यर्थ संस्कार स्वतः ही चले जायेंगे। ईश्वरीय संस्कारों को कार्य में नहीं लगाते हो तो वह लॉकर में रहते और पुराना काम करते रहते। कइयों की यह आदत होती है कि बैंक में या अलमारियों में रखने की। बहुत अच्छे कपड़े होंगे, पैसे होंगे, चीजें होंगी, लेकिन यूज फिर भी पुराने करेंगे। पुरानी वस्तु से उन्हीं को प्यार होता है और अलमारी की चीजें अलमारी में ही रह जायेगी और वह पुराने से ही चला जायेगा। तो ऐसे नहीं करना – पुराने संस्कार यूज करते रहो और ईश्वरीय संस्कार बुद्धि के लॉकर में रखो। नहीं, कार्य में लगाओ, सफल करो। तो यह चार्ट रखो कि सफल कितना किया? सफल करना माना बचाना या बढ़ाना। मंसा से सफल करो, वाणी से सफल करो। सम्बन्ध-सम्पर्क से, कर्म से, अपने श्रेष्ठ संग से, अपने अति शक्तिशाली वृत्ति से सफल करो। ऐसे नहीं कि मेरी वृत्ति तो अच्छी रहती है। लेकिन सफल कितना किया? मेरे संस्कार तो है ही शान्त लेकिन सफल कितना किया? कार्य में लगाया? तो यह विधि अपनाने से सम्पूर्णता की सिद्धि सहज अनुभव करते रहेंगे। सफल करना ही सफलता की चाबी है। समझा – क्या करना है? सिर्फ अपने में ही खुश नहीं होते रहो – मैं तो बहुत अच्छी गुणवान हूँ, मैं बहुत अच्छा भाषण कर सकती हूँ, मैं बहुत अच्छा ज्ञानी हूँ, योग भी मेरा बहुत अच्छा है। लेकिन अच्छा है तो यूज करो ना। उसको सफल करो। सहज विधि है – कार्य में लगाओ और बढ़ाओ। बिना मेहनत के बढ़ता जायेगा और 21 जन्म आराम से खाना। वहाँ मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

विशाल महफिल है (ओम् शान्ति भवन का हाल एकदम फुल भर गया इसलिए कइयों को नीचे मेडिटेशन हाल, छोटे हाल में बैठना पड़ा। हाल छोटा पड़ गया) शास्त्रों में यह आपका जो यादगार है, उसमें भी गायन है – पहले गिलास में पानी डाला, फिर उससे घड़े में डाला, फिर घड़े से तालाब में डाला, तालाब से नदी में डाला। आखरीन कहाँ गया? सागर में। तो यह महफिल पहले हिस्ट्री हाल में लगी, फिर मेडिटेशन हाल में लगी, अभी ओम् शान्ति भवन में लग रही है। अब फिर कहाँ लगेगी? लेकिन इसका मतलब नहीं कि साकार मिलन के बिना अव्यक्त मिलन नहीं मना सकते हो। अव्यक्त मिलन मनाने का अभ्यास समय प्रमाण बढ़ाना ही है और बढ़ाना ही है। यह तो दादियों ने रहमदिल होकर आप सबके ऊपर विशेष रहम किया है, नयों के ऊपर। लेकिन अव्यक्त अनुभव को बढ़ाना – यह समय और कार्य में आयेगा। देखो, नये-नये बच्चों के लिए ही बापदादा विशेष यह साकार में मिलन का पार्ट अब तक बजा रहे हैं। लेकिन यह भी कब तक?

सभी खुशराजी हो, सन्तुष्ट हो? बाहर रहने में भी सन्तुष्ट हो? यह भी ड्रामा में पार्ट है। जब कहते हो सारा आबू हमारा होगा, तो वह कैसे होगा? पहले आप चरण तो रखो। फिर अभी जो धर्मशाला नाम है वह अपना हो जायेगा। देखो, विदेश में अभी ऐसे होने लगा है। चर्च इतने नहीं चलते हैं तो बी.के. को दे दी है। जो ऐसे बड़े-बड़े स्थान है, चल नहीं पाते हैं तो ऑफर करते हैं ना। तो ब्राह्मणों

के चरण पड़ रहे हैं जगह-जगह पर, इसमें भी राज़ है। ब्राह्मणों को रहने का ड्रामा में पार्ट मिला है। तो सारा ही अपना जब हो जायेगा फिर क्या करेंगे? आप ही ऑफर करेंगे आप सम्भालो। हमें भी सम्भालो, आश्रम भी सम्भालो। जिस समय जो पार्ट मिलता है, उसमें राजी रह करके पार्ट बजाओ। अच्छा।

मधुबन निवासी और टीचर्स सभी नीचे सुन रहे हैं। सुनने द्वारा मिल रहे हैं। टीचर्स और मधुबन निवासियों को सेवा का प्रत्यक्षफल सबके सन्तुष्टता की दुआएं मिलती है। यह ब्राह्मण आत्माओं की या बाप की दुआएं एक्स्ट्रा लिफ्ट के रूप में काम में आती हैं। यह ब्राह्मण आत्माओं के दिल की दुआएं कम नहीं है। अच्छा-

चारों ओर के सर्व मिलन मनाने के, ज्ञान रतन धारण करने के चात्रक आत्माओं को आकार रूप में वा साकार रूप में मिलन मेला मनाने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा सर्व खजानों को सफल कर सफलता स्वरूप बनने वाली आत्माओं को, सदा मेरा बाबा और कोई हद का मेरापन अंशमात्र भी न रखने वाले ऐसे बेहद के वैरागी आत्माओं को सदा हर समय विधि द्वारा सम्पूर्णता की सिद्धि प्राप्त करने वाले बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से :- सदैव कोई नई सीन होनी चाहिए ना। यह भी ड्रामा में नई सीन थी जो रिपीट हुई। यह सोचा था कि यह हाल भी छोटा हो जायेगा? सदा एक सीन तो अच्छी लगती नहीं। कभी-कभी की सीन अच्छी लगती है। यह भी एक रूहानी रौनक है ना! इन सभी आत्माओं का संकल्प पूरा होना था, इसलिए यह सीन हो गई। यहाँ से छुट्टी दे दी - भले आओ। तो क्या करेंगे? अभी तो नये और बढ़ने हैं। और पुराने तो पुराने हो गये। जैसे उमंग से आये हैं वैसे अपने को सेट किया है, यह अच्छा किया है। विशाल तो होना ही है। कम तो होना है ही नहीं। जब विश्व कल्याणकारी का टाइल है तो विश्व के आगे यह तो कुछ भी नहीं हैं। वृद्धि भी होनी है और विधि भी नये से नई होनी है। कुछ न कुछ तो विधि होती रहनी है। अभी वृत्ति पावरफुल होगी। तपस्या द्वारा वृत्ति पावरफुल हो जायेगी तो स्वतः ही वृत्ति द्वारा आत्माओं की भी वृत्ति चेंज होगी। अच्छा- आज सब सेवा करते थकते तो नहीं हो ना। मौज में आ रहे हो। मौज ही मौज है। अच्छा।

पार्टियों से :- सदा अपने को एकरस स्थिति में अनुभव करते हो? एकरस स्थिति है या और हद के रस आकर्षित करते हैं? निरन्तर योगी बन गये? सदा पावरफुल योग है या फर्क पड़ता है? निरन्तर अर्थात् अन्तर न हो। ऐसे शक्तिशाली बने हो या बन रहे हो? कितने तक बने हो? 75 तक पहुँचे हो? क्योंकि सदा एकरस का अर्थ ही है एक के साथ सदा जैसे बाप, वैसे मैं, बाप समान। बनना तो बाप समान है। बाप तो शक्ति भरते ही हैं। रोज की मुरली क्या है? शक्ति भरती है ना! लेकिन भरने वाले भरते हैं। सदैव स्मृति रखो कि हम महावीर हैं, शिवशक्तियाँ हैं तो कभी भी निर्बल नहीं होंगे, कमजोर नहीं होंगे। क्योंकि कोई भी विघ्न तब आता है जब कमजोर बनते हैं। अगर कमजोर नहीं बनो तो विघ्न नहीं आ सकता। महावीर को कहते हैं विघ्न विनाशक। तो यह किसका टाइल है? आप सभी विघ्न विनाशक हो या विघ्नों में घबराने वाले हो? कोई भी शक्ति की कमी हुई तो मास्टर सर्व शक्तिवान नहीं कहेंगे। इसलिए सदा याद रखो कि सर्व शक्तियाँ बाप का वर्सा है। वर्सा तो पूरा मिला है या थोड़ा मिला है? तो एक भी शक्ति कम नहीं होनी चाहिए। इस समय सभी मधुबन निवासी हो ना! अभी मधुबन को साथ ले जाना। क्योंकि मधुबन अर्थात् मधुरता। मधुबन आपके साथ होगा तो सदा ही सम्पूर्ण और सदा ही सन्तुष्ट रहेंगे। ऐसे नहीं कहना कि मधुबन में तो बहुत अच्छा था। अभी बदल गये। मधुबन का बाबा भी साथ है। तो मधुबन की विशेषता भी साथ है। तो सदा अपने को मास्टर सर्व शक्तिवान अनुभव करेंगे। सभी तीव्र पुरुषार्थी हो या पुरुषार्थी हो? तीव्र पुरुषार्थी की निशानी क्या होती है? तीव्र पुरुषार्थी सदा उड़ती कला वाला होगा, सदा डबल लाइट होगा। कभी ऊपर, कभी नीचे नहीं, सदा उड़ती कला। जितना-जितना विचित्र बाप से प्यार है तो जिससे प्यार होता है वैसा ही बनना होता है। स्वयं भी विचित्र आत्मा रूप में स्थित होंगे तो उड़ती कला में रहेंगे। अच्छा।

(बापदादा का मधुर याद पत्र डबल विदेशी भाई-बहनों प्रति)

चारों ओर के डबल विदेशी बच्चों को बापदादा दिलवर की दिल से बहुत-बहुत यादप्यार स्वीकार हो।

सर्व बच्चों की मधुबन के रिफ्रेशमेन्ट के उमंग-उत्साह की खुशबू पत्रों द्वारा, रूहरिहान द्वारा बाप के पास पहुँच रही है। बापदादा भी बच्चों का तीव्र पुरुषार्थ देख खुश हो रहे हैं और सदा आगे उड़ाने में साथी है। ईश्वरीय परिवार के भी सहयोग की दुआएं सदा सबके साथ हैं। देखो, मीठे बच्चे इस तपस्या वर्ष में लगन की अग्नि द्वारा सर्व व्यर्थ संकल्प, समय और संस्कारों को समाप्त कर समर्थ-सम्पन्न बनने का जो दृढ़ संकल्प किया है, उनको अपनी हिम्मत और बाप की मदद से पूरा करना ही है और होना ही है। इसके लिए सदा बाप को अपने कम्पेनियन के रूप में साथ रखना और कम्पनी तीव्र पुरुषार्थी फालो फादर ब्राह्मण आत्माओं की करनी है। इसमें ही सहज सफलता अनुभव करते रहेंगे। डबल विदेशी बच्चों पर तो विशेष बाप का प्यार है क्योंकि बच्चे भी बाप के लव में लीन

रहते हैं। उड़ते रहो और उड़ते रहो। अच्छा।

दिलतख्तनशीन और विश्व तख्तनशीन बनने के लिए सुख दो और सुख लो

अव्यक्त बापदादा अपने दिलतख्तनशीन बच्चों प्रति बोले :

आज विश्व के मालिक, अपने बालक सो मालिक बच्चों को देख रहे हैं। सभी बच्चे इस समय भी स्व के मालिक हैं और अनेक जन्म भी विश्व के मालिक हैं। परमात्म-बालक मालिक बन जाते हैं। ब्राह्मण आत्माएं अर्थात् मालिक आत्माएं। इस समय सर्व कर्म-न्द्रियों के मालिक हो, अधीन आत्माएं नहीं हो। अधिकारी अर्थात् मालिक हो। कर्मन्द्रियों के वशीभूत नहीं हो, इसलिए बालक सो मालिक हो। बालकपन का भी ईश्वरीय नशा अनुभव करते हो और स्वराज्य के मालिकपन का नशा भी अनुभव करते हो। डबल नशा है। नशे की निशानी है अविनाशी रूहानी खुशी। सदा अपने को विश्व में खुशानसीब आत्माएं समझते हो? वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य अर्थात् श्रेष्ठ नसीब! खुशानसीब भी हो और सदा खुशी की खुराक खाते और खिलाते हो। साथ-साथ सदा खुशी के झूले में झूलते रहते हो। औरों को भी खुशी का महादान दे खुशानसीब बनाते हो। ऐसे अमूल्य हीरे तुल्य जीवन बनाने वाले हो। बन गये हैं या अभी बनना है? ब्राह्मण जीवन का अर्थ ही है – खुशी में रहना, खुशी की खुराक खाना और खुशी के झूले में रहना। ऐसे ब्राह्मण हो ना? सिवाए खुशी के और जीवन ही क्या है! जीवन ही खुशी है। खुशी नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। खुश रहना ही जीना है।

आज बापदादा सर्व बच्चों का पुण्य का खाता देख रहे थे। क्योंकि आप सभी पुण्य आत्माएं हो। पुण्य का खाता अनेक जन्मों के लिए जमा कर रहे हो। सारे दिन में पुण्य कितना जमा किया? यह स्वयं भी चेक कर सकते हो ना। एक है दान करना, दूसरा है पुण्य करना। दान से भी पुण्य का ज्यादा महत्व है। पुण्य कर्म निस्वार्थ सेवाभाव का कर्म है। पुण्य कर्म दिखावा नहीं होता है, लेकिन दिल से होता है। दान दिखावा भी होता है, दिल से भी होता है। पुण्य कर्म अर्थात् आवश्यकता के समय किसी आत्मा के सहयोगी बनना। अर्थात् काम में आना। पुण्य कर्म करने वाली आत्मा को अनेक आत्माओं के दिल की दुवाएं प्राप्त होती है। सिर्फ मुख से शुक्रिया वा थैक्स नहीं कहते लेकिन दिल की दुवाएं गुप्त प्राप्ति जमा होती जाती हैं। पुण्य आत्मा, परमात्म दुवाएं, आत्माओं की दुवाएं – इस प्राप्त हुए प्रत्यक्षफल से भरपूर होते हैं। पुण्य आत्मा की वृत्ति, दृष्टि औरों को भी दुआयें अनुभव कराती हैं। पुण्य आत्मा के चेहरे पर सदा प्रसन्नता, सन्तुष्टता की झलक दिखाई देती है। पुण्य आत्मा सदा प्राप्त हुए फल के कारण अभिमान और अपमान से परे रहती है। क्योंकि वह भरपूर बादशाह है। अभिमान और अपमान से बेफिकर बादशाह है। पुण्य आत्मा पुण्य की शक्ति द्वारा स्वयं के हर संकल्प, हर समय की हलचल को, हर कर्म को सफल करने वाले होते हैं। पुण्य का खाता जमा होता है। जमा की निशानी है – व्यर्थ की समाप्ति। ऐसी पुण्य आत्मा विश्व के राज्य के तख्तनशीन बनती है। तो अपने खाते को चेक करो कि ऐसे पुण्य आत्मा कहाँ तक बने हैं? अगर पूछेंगे कि सभी पुण्य आत्मा हो? तो सब हाँ जी कहेंगे ना। है भी सभी पुण्य आत्मा। लेकिन नम्बरवार है, कि सब नम्बरवन है? नम्बरवार है ना। सतयुग-त्रेता के विश्व के तख्त पर कितने बैठेंगे? सभी इकट्ठे बैठेंगे? तो नम्बरवार है ना। नम्बर क्यों बनते हैं - कारण? एक विशेष बात बापदादा ने बच्चों की चेक की। और वही बात नम्बरवन बनने में रुकावट डालती है।

अभी तपस्या वर्ष में सभी का लक्ष्य सम्पूर्ण बनने का है या नम्बरवार बनने का है? सम्पूर्ण बनना है ना। आप सभी एक स्लोगन बोलते भी हो और लिखकर लगाते भी हो। वह है – सुख दो और सुख लो। दुःख न दो, न दुःख लो। यह स्लोगन पक्का है। तो रिजल्ट में क्या देखा? दुःख न दो – इसमें तो मैजारिटी का अटेन्शन है। लेकिन आधा स्लोगन ठीक है। देने के लिए सोचते हैं, देना नहीं है। लेकिन लेने के लिए कहते हैं कि उसने दिया इसलिए हुआ। इसने यह कहा, इसने यह कहा, इसलिए यह हुआ। ऐसी जज-मेन्ट देते हो ना। अपना ही वकील बन करके केस में यही बताते हो। तो आधा स्लोगन के ऊपर अटेन्शन ठीक है और भी होना चाहिए अन्डरलाइन। फिर भी आधे स्लोगन पर अटेन्शन है लेकिन और जो आधा स्लोगन है उस पर अटेन्शन नाम मात्र है। उसने दिया लेकिन आपने लिया क्यों? किसने कहा आप लो? बाप की श्रीमत है क्या कि दुःख लो। झोली भरो दुःख से। तो न दुःख दो, न दुःख लो। तभी पुण्य आत्मा बनेंगे, तपस्वी बनेंगे। तपस्वी अर्थात् परिवर्तन तो उनके दुख को भी आप सुख के रूप में स्वीकार करो। परिवर्तन करो तब कहेंगे तपस्वी। ग्लानि को प्रशंसा समझो। तब कहेंगे पुण्य आत्मा। जगत अम्बा माँ ने सदैव सभी बच्चों को यही पाठ पक्का कराया कि गाली देने वाले या दुःख देने वाली आत्मा को भी अपने रहमदिल स्वरूप से, रहम की दृष्टि से देखो। ग्लानि की दृष्टि से नहीं। वह गाली देवे, आप फूल चढ़ाओ। तब कहेंगे पुण्य आत्मा। ग्लानि वाले को दिल से गले लगाओ। बाहर से गले नहीं लगाना। लेकिन मन से। तो पुण्य के खाते जमा होने में विघ्न रूप यही बात बनती है। मुझे दुख लेना भी नहीं है। देना तो है ही नहीं, लेकिन लेना भी नहीं है। जब अच्छी चीज नहीं है तो फिर किचड़ा लेकर जमा क्यों करते हो? जहाँ दुःख लिया, किचड़ा जमा हुआ, तो किचड़े से क्या निकलेंगे? पाप के अंश रूपी जर्म्स। अभी मोटे पाप तो नहीं करते हो ना। अभी पाप का

अंश रह गया है। लेकिन अंश भी नहीं होना चाहिए। कई बच्चे बड़ी मीठी-मीठी बातें सुनाते हैं। रूहरिहान तो सभी करते हैं ना? एक स्लोगन तो सभी को पक्का हो गया है – “चाहते तो नहीं थे, लेकिन हो गया...।” जब आप नहीं चाहते तो और कौन चाहता? जो कहते हो, हो गया! और कोई आत्मा है! होना नहीं चाहिए, लेकिन होता है – यह कौन बोलता है? और कोई आत्मा बोलती है, कि आप बोलते हो? तो तपस्या इन बातों के कारण सिद्ध नहीं कर सकेंगे। जो होना नहीं चाहिए, जो करने नहीं चाहते वह न होना ही, न करना ही पुण्य आत्मा की निशानी है। बापदादा के पास रोज बच्चों की अनेक ऐसी कहानियाँ आती हैं। बोलने में इतनी इन्टरेस्ट वाली कहानियाँ करके बताते जो सुनते रहो। कोई लम्बी कहानी बताने में आदती हैं, कोई छोटी बताते। लेकिन कहानियाँ बहुत बताते हैं। आज इस वर्ष के मिलन की अन्तिम टुब्बी है ना। सभी टुब्बी लगाने आये हो ना। जबकि भक्ति मार्ग में भी डुबकी लगाते हैं तो कोई न कोई संकल्प जरूर करते हैं, चाहे कुछ स्वाहा करते हैं, चाहे कुछ स्वार्थ रखते हैं। दोनों से संकल्प करते हैं। तो तपस्या वर्ष में यह संकल्प करो कि सारा दिन संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, कर्म द्वारा पुण्य आत्मा बन पुण्य करेंगे, और पुण्य की निशानी बताई कि पुण्य का प्रत्यक्षफल है हर आत्मा की दुआएं। हर संकल्प में पुण्य जमा हो। बोल में दुआएं जमा हो। सम्बन्ध-सम्पर्क से दिल से सहयोग की श्रुक्रिया निकले – इसको कहते हैं तपस्या। ऐसी तपस्या विश्व परिवर्तन का आधार बनेगी। ऐसी रिजल्ट पर प्राइज मिलेगी। फिर कहानी नहीं सुनाना कि ऐसा हो गया..! वैसे पहला नम्बर प्राइज सभी टीचर्स को लेना चाहिए और साथ में मधुबन निवासियों को लेना चाहिए। क्योंकि मधुबन की लहर, निमित्त टीचर्स की लहर प्रवृत्ति वालों तक, गॉडली स्टूडेन्ट्स तक सहज पहुँची है। तो आप सब नम्बर आगे तो हो ही जायेंगे। अब देखेंगे कि किस-किस के नाम प्राइज में आते हैं? टीचर्स के आते या मधुबन वालों के या गॉडली स्टूडेन्ट्स के आते हैं? डबल विदेशी भी तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं। बापदादा के पास प्राइज बहुत हैं, जितना चाहे ले सकते हो। प्राइज की कमी नहीं है। भण्डारे भरपूर हैं। अच्छा।

सभी मेले में पहुँच गये हैं। मेला अच्छा लगा कि तकलीफ हुई? बारिश ने भी स्वागत किया, प्रकृति का भी आपसे प्यार है। घबराये तो नहीं ना? ब्रह्मा भोजन तो अच्छा मिला ना। 63 जन्म तो धक्के खाये हैं। अभी तो और ही ठिकाना मिला ना। तीन पैर पृथ्वी तो मिली ना। इतना बड़ा हाल जो बनाया है तो हाल की भी शोभा बढ़ाई ना। हाल को सफल किया ना। किसी को भी तकलीफ तो नहीं हुई ना। लेकिन ऐसे नहीं मेला करते रहना। रचना के साथ साधन भी साथ ही आते हैं। अच्छा।

सर्व बालक सो मालिक श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा हर कदम में पुण्य का खाता जमा करने वाली पुण्य आत्माओं को, सदा दिलत-खतनशीन और विश्व के तख्त अधिकारी विशेष आत्माओं को सदा सुख देने और सुख लेने वाले मास्टर सुख के सागर आत्माओं को, सदा खुशी में रहने वाले और खुशी देने वाले मास्टर दाता बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से :- बापदादा ने देखा कि सभी महारथियों ने दिल से सबको शक्तिशाली बनाने की सेवा बहुत अच्छी की। इसके लिए श्रुक्रिया क्या करें लेकिन खाता बहुत जमा हुआ। बहुत बड़ा खाता जमा हुआ। बापदादा महावीर बच्चों की हिम्मत और उमंग-उल्लास देख पद्मगुणा से भी ज्यादा हर्षित होते हैं। हिम्मत रखी है, संगठन सदा स्नेह के सूत्र में रहा है इसलिए इसकी सफलता है। संगठन मजबूत है ना! छोटी माला मजबूत है। कंगन तो बना है। माला तो नहीं बने, कंगन तो है ना। इसलिए छोटी माला भी पूजी जाती है। बड़ी अच्छी तैयार हो रही है, वह भी हो जायेगी, होनी ही है। सुनाया था ना – बड़ी माला दाने तैयार है लेकिन दाने से दाना मिलने में थोड़ी सी मार्जिन है। लेकिन छोटी माला अच्छी तैयार है। इसी माला के कारण ही सफलता सहज है और सफलता सदा माला के मणकों के गले में पिरोई हुई है। विजयी का तिलक लगा हुआ है। बापदादा खुश है, पद्मगुणा मुबारक है। निमित्त तो आप हैं ना। बाप तो करावनहार है। करने वाला कौन है? करने के लिए निमित्त आप हो, बाप तो बैकबोन है। इसलिए बहुत अच्छी प्रीति की रीति भी निभाई और पालना की रीति भी अच्छी निभाई। अच्छा।

तपस्या का प्रत्यक्ष-फल – खुशी

अव्यक्त बापदादा अपने तपस्वीराज बच्चों प्रति बोले :

आज बापदादा अपने सर्व तपस्वीराज बच्चों को देख रहे हैं। तपस्वी भी हो और राज-अधिकारी भी हो इसलिए तपस्वीराज हो। तपस्या अर्थात् राज्य अधिकारी बनना। तपस्या राजा बनाती है। तो सभी राजा बने हो ना। तपस्या का बल क्या फल देता है? अधीन से अधिकारी अर्थात् राजा बना देता है इसलिए गायन भी है कि तपस्या से राज्य भाग्य प्राप्त होता है। तो भाग्य कितना श्रेष्ठ है! ऐसा भाग्य सारे कल्प में किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकता। इतना बड़ा भाग्य है जो भाग्य विधाता को अपना बना दिया है। एक एक भाग्य अलग मांगने की आवश्यकता नहीं है। भाग्य विधाता से सर्व भाग्य वर्षों में ले लिया है। वर्षा कभी मांगा नहीं जाता है। सर्व भाग्य, भाग्य विधाता ने स्वयं ही दिया है। तपस्या अर्थात् आत्मा कहती है मैं तेरी तू मेरा, इसको ही तपस्या कहा जाता है। इसी तपस्या के बल से भाग्य विधाता को अपना बना दिया है। भाग्य विधाता बाप भी कहते हैं मैं तेरा। तो कितना श्रेष्ठ भाग्य हो गया! भाग्य के साथ साथ स्वराज्य अभी मिला है। भविष्य विश्व का राज्य स्वराज्य का ही आधार है। इसीलिए तपस्वीराज हो। बापदादा को भी अपने हर एक राज्य अधिकारी बच्चे को देख हर्ष होता है। भक्ति में अनेक जन्मों में बापदादा के आगे क्या बोला ? याद है या भूल गये हो ? बार बार अपने को मैं गुलाम, मैं गुलाम ही बोला है। मैं गुलाम तेरा। बाप कहते हैं मेरे बच्चे और गुलाम ! सर्व शक्तिवान के बच्चे और गुलाम शोभता है ! इसलिए बाप ने मैं गुलाम तेरा के बजाए क्या अनुभव कराया ? मैं तेरा। तो गुलाम से राजा बन गये। अभी भी कभी गुलाम तो नहीं बनते हो ? गुलामपन के पुराने संस्कार कभी इमर्ज तो नहीं होते हैं ? माया के गुलाम होते हो ? राजा कभी गुलाम नहीं बन सकता है। गुलामपन छूट गया वा कभी कभी अच्छा लगता है ? तो तपस्या का बल बहुत श्रेष्ठ है और तपस्या क्या करते हो ? तपस्या में मेहनत करते हो ? बापदादा ने सुनाया था कि तपस्या क्या है ? मौज मनाना। तपस्या अर्थात् बहुत सहज नाचना और गाना बस। नाचना गाना सहज होता है वा मुश्किल होता है ? मनोरंजन होता है वा मेहनत होती है ? तो तपस्या में क्या करते हो ? तपस्या का प्रत्यक्षफल है खुशी। तो खुशी में क्या होता है ? नाचना। तपस्या अर्थात् खुशी में नाचना और बाप के और अपने आदि अनादि स्वरूप के गुण गाना। तो यह गीत कितना बड़ा और कितना सहज है। इसमें गला ठीक है वा नहीं ठीक है इसकी भी जरूरत नहीं है। निरन्तर यह गीत गा सकते हो। निरन्तर खुशी में नाचते रहो। तो तपस्या का अर्थ क्या हुआ ? नाचना और गाना कितना सहज है। माथा भारी उसका होता है जो छोटी सी गलती करते हैं। ब्राह्मण जीवन में कभी किसका माथा भारी हो नहीं सकता। हॉस्पिटल बनाने वालों का माथा भारी हुआ ? ट्रस्टी सामने बैठे हैं ना! माथा भारी है, जब करनकरावनहार बाप है तो आपको क्या बोझ है ? यह तो निमित्त बनाकर भाग्य बनाने का साधन बना रहे हो। आपकी जिम्मेवारी क्या है ? बाप के बजाए अपनी जिम्मेवारी समझ लेते हैं तो माथा भारी होता है। बाप सर्व शक्तिवान मेरा साथी है तो क्या भारीपन होगा। छोटी सी गलती कर देते हो, मेरी जिम्मेवारी समझते हो तो माथा भारी होता है। तो ब्राह्मण जीवन ही नाचो गाओ और मौज करो। सेवा चाहे वाचा है चाहे कर्मणा। यह सेवा भी एक खेल है। सेवा कोई और चीज नहीं है। कोई दिमाग के खेल होते हैं, कोई हल्के खेल होते हैं। लेकिन हैं तो खेल ना। दिमाग के खेल में दिमाग भारी होता है क्या। तो यह सब खेल करते हो। तो चाहे कितना भी बड़ा सोचने का काम हो, अटेन्शन देने का काम हो लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा के लिए सब खेल है, ऐसे है ? वा थोड़ा थोड़ा करते करते थक जाते हो ? मैजारटी अथक बनते हो लेकिन कभी कभी थोड़ा थक जाते हो। यही योग का प्रयोग सर्व खजानों को, चाहे समय, चाहे संकल्प, चाहे ज्ञान का खजाना वा स्थूल तन भी अगर योग के प्रयोग की रीति से प्रयोग करो तो हर खजाना बढ़ता रहेगा। इस तपस्या वर्ष में योग का प्रयोग किया है ना। क्या प्रयोग किया है ? इस एक एक खजाने का प्रयोग करो। कैसे प्रयोग करो ? कोई भी खजाने को कम खर्चा और प्राप्ति अधिक। मेहनत कम सफलता ज्यादा इस विधि से प्रयोग करो। जैसे समय को वा संकल्प को उठाओ – यह श्रेष्ठ खजाने हैं। तो संकल्प का खर्च कम हो लेकिन प्राप्ति ज्यादा हो। जो साधारण व्यक्ति दो चार मिनट संकल्प चलाने के बाद, सोचने के बाद सफलता या प्राप्ति कर सकता है वह आप एक दो सेकेण्ड में कर सकते हो। जिसको साकार में भी ब्रह्मा बाप कहते थे कम खर्चा बाला नशीन। खर्च कम करो लेकिन प्राप्ति 100 गुणा हो। इससे क्या होगा ? जो बचत होगी चाहे समय की, चाहे संकल्प की तो बचत को औरों की सेवा में लगा सकेंगे। दान पुण्य कौन कर सकता है ? जिसको धन की बचत होती है। अगर अपने प्रति लगाने जितना ही कमाया और खाया तो दान पुण्य कर नहीं सकेंगे। योग का प्रयोग यही है। कम समय में रिजल्ट ज्यादा, कम संकल्प से अनुभूति ज्यादा हो तब ही हर खजाना औरों के प्रति यूज कर सकेंगे। ऐसे ही वाणी और कर्म, कम

खर्चा और सफलता ज्यादा तब ही कमाल गाई जाती है। बापदादा ने कमाल क्या की? कितने थोड़े समय में क्या से क्या बना दिया? तब तो कहते हो कमाल कर दी। एक का पद्मगुणा प्राप्ति का अनुभव करते हो। तब कहते हो कमाल कर दिया। जैसे बापदादा का खजाना प्राप्ति और अनुभूति ज्यादा कराता है। ऐसे आप सब भी योग का प्रयोग करो। सिर्फ यह गीत नहीं है कि “ बाबा आपने कमाल कर दिया है”। आप भी तो कमाल करने वाले हो। करते भी हो। लेकिन तपस्या के चलते हुए समय में मैजारटी की रिजल्ट क्या देखी?

तपस्या का उमंग उत्साह अच्छा है। अटेन्शन भी है सफलता भी है लेकिन स्वयं प्रति सर्व खजाने यूज ज्यादा करते हो। अपनी अनुभूतियाँ करना यह भी अच्छी बात है। लेकिन तपस्या वर्ष स्वयं प्रति और विश्व सेवा प्रति ही दिया हुआ है। तपस्या के वायब्रे-शन्स विश्व में और तीव्रगति से फैलाओ। जो सुनाया कि योग के प्रयोग को और अनुभव की प्रयोग शाला में प्रयोग की गति को बढ़ाओ। वर्तमान समय सर्व आत्माओं को आवश्यकता है आपके शक्तिशाली वायब्रेशन्स द्वारा वायुमण्डल द्वारा परिवर्तन होने की। इसीलिए प्रयोग को और बढ़ाओ। सहयोगी बच्चे भी बहुत हैं। यह सहयोग ही योग में बदल जायेगा। एक हैं स्नेही सहयोगी और दूसरे हैं सहयोगी योगी। और तीसरे हैं निरन्तर योगी प्रयोगी। अभी अपने से पूछो मैं कौन। लेकिन बापदादा को तीनों ही प्रकार के बच्चे प्रिय हैं। कई बच्चों के वायब्रेशन्स बापदादा के पास पहुंचे हैं। भिन्न भिन्न प्रकार के वायब्रेशन्स हैं। जानते हो कौन सी बात बाप के पास पहुंची है? इशारे से समझने वाले हो ना? इस तपस्या वर्ष में जो कुछ हो रहा है इसका कारण क्या? बड़े बड़े प्रोजेक्ट कर रहे हो इसका कारण क्या? कोई समझते हैं कि यही तपस्या का फल है। कोई समझते हैं तपस्या वर्ष में यह क्यों? दोनों वायब्रेशन्स आते हैं। लेकिन यह समय की तीव्रगति और तपस्या के वायब्रेशन्स से आवश्यकता का पूर्ण होना यह तपस्या के बल का फल है। फल तो खाना पड़ेगा ना। यह ड्रामा दिखाता है कि तपस्या सर्व आवश्यकताओं को समय पर सहज पूर्ण कर सकती है। समझा। क्वेश्चन नहीं उठ सकता कि यह क्यों हो रहे हैं। तपस्या अर्थात् सफलता सहज अनुभूति हो। आगे चलकर असम्भव कैसे सहज सम्भव होता है यह अनुभव ज्यादा से ज्यादा करते रहेंगे। विघ्नों का आना यह भी ड्रामा में आदि से अन्त तक नूँध है। यह विघ्न भी असम्भव से सम्भव की अनुभूति कराते हैं। और आप सभी तो अनुभवी हो ही गये हैं। इसलिए विघ्न भी खेल लगता है। जैसे फुटबाल का खेल करते हो। तो क्या करते हो? बाल आता है तभी तो ठोकर लगाते हो। अगर बाल ही न आये तो ठोकर कैसे लगायेंगे? खेल कैसे होगा? यह भी फुटबाल का खेल है। खेल खेलने में मजा आता है ना या मूँझते हो? कोशिश करते हो ना कि बाल मेरे पांव में आये मैं लगाऊं। यह खेल तो होता रहेगा। नर्धिगन्यु। ड्रामा खेल भी दिखाता है और सम्पन्न सफलता भी दिखाता है। यही ब्राह्मण कुल की रीति रसम है। अच्छा।

इस ग्रुप को बहुत चांस मिले हैं। किसी भी कार्य के निमित्त बनना, किसी भी प्रकार की विधि से निमित्त बनना अर्थात् चांस लेने वाले चांसलर बनना। आज के विश्व में सम्पत्ति वाले तो बहुत हैं लेकिन आपके पास सबसे बड़े ते बड़ी सम्पत्ति कौन सी है जो दुनिया वालों के पास नहीं है? और उसी की आवश्यकता सम्पत्ति वालों को भी है तो गरीब को भी है। वह कौन सी सम्पत्ति है? सबसे बड़े ते बड़ी आवश्यक सम्पत्ति है सिम्पथी। चाहे गरीब हैं चाहे धनवान हैं लेकिन आज सिम्पथी नहीं है। सिम्पथी की सम्पत्ति सबसे बड़े ते बड़ी है। और कुछ भी नहीं दो लेकिन सिम्पथी से सबको सन्तुष्ट कर सकते हो। और आपकी सिम्पथी ईश्वरीय परिवार के नाते से सिम्पथी है। अल्पकाल की सिम्पथी नहीं। पारिवारिक सिम्पथी सबसे बड़े ते बड़ी सिम्पथी है और यह सबको आवश्यक है और आप सबको दे सकते हो। रूहानी सिम्पथी तन मन और धन की भी पूर्ति कर सकती है। अच्छा इस पर फिर सुनायेंगे।

चारों ओर के तपस्वीराज श्रेष्ठ आत्मायें, सदा योग के प्रयोग द्वारा कम खर्च सफलता श्रेष्ठ अनुभव करने वाले, सदा मैं तेरा तू मेरा इस तपस्या में मगन रहने वाले, सदा हर समय तपस्या के द्वारा खुशी में नाचने और बाप और अपने गुण गाने वाले, ऐसे देश विदेश के सर्व स्मृति स्वरूप बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

1- हॉस्पिटल की सेवा के निमित्त भाई बहिनों से :- बहुत अथक सेवा की है ना। अथक सेवाधारी को बापदादा के दिल का स्नेह और हर समय का सहयोग स्वतः ही प्राप्त होता है। तो आप सबने कार्य किया या कोई ने कराया? (बाबा ने कराया) निमित्त आपने किया ना। अगर करेंगे नहीं तो पायेंगे नहीं। इसलिए करने के निमित्त बनना अर्थात् पाना। हर एक ने अपना अपना बहुत अच्छा कार्य किया। बिना सर्व के अंगुली डाले कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता। इसलिए जो भी सभी बैठे हो सभी को अपने अपने कार्य की मुबारक हो। अभी समझते हो ना कि यह कोई बड़ी बात नहीं। ऐसे तो और भी बना सकते हैं या यही बहुत मुश्किल है? सहज हो गया ना। कोई भी मुश्किल अगर आती भी है तो खेल के लिए आती है। समझो खेल कर रहे हैं। कभी भी मुश्किल को मुश्किल नहीं समझो। मनोरंजन समझो तो मुश्किल सहज हो जायेगी। यह निमित्त बनना भी भाग्य की निशानी है। भाग्य आपको खींचकर ले आया। अनेक आत्माओं की दुआयें प्राप्त करने का भाग्य। यह कम बात नहीं है। यह विरले को प्राप्त होता है। जिन्होंने भी हार्ड वर्क किया और समय पर कार्य पूरा किया, सबको पद्मगुणा मुबारक हो। बापदादा वतन में बैठे भी देखता है कि क्या क्या कौन कर रहा

है। चाहे दूसरा कोई देखे या न देखे। लेकिन बापदादा सबको देखते हैं। सबके मन का रिकार्ड और तन का रिकार्ड दोनों ही देखते हैं। (ज्ञान सरोवर, सालगांव के लिए) वहाँ भी सभी ने बहुत अच्छी सेवा की। दिन रात लगकर जंगल को मंगल बनाना यह बहुत बड़ी सेवा है। उन्हीं को भी विशेष मुबारक।

(हॉस्पिटल के दूसरे फेज़ के लिए वरदान) यह भी अनेक आत्माओं के अनेक जन्मों के जीवन को श्रेष्ठ बनाने का फाउन्डेशन हो जायेगा। निमित्त यह पत्थर का फाउन्डेशन लगाते हैं लेकिन अनेक आत्मायें दुआओं के भण्डार से भरपूर हो आपको दुआयें देती रहेंगी। तो यह फाउन्डेशन लगाना अर्थात् दुआओं के पात्र बनना। इसलिए और दिल से उमंग से, तन-मन-धन, मन-वचन-कर्म सबसे बढ़ाते चलो और अपने साथ औरों की जीवन को श्रेष्ठ बनाते चलो। जैसे पहले उमंग उत्साह से किया है उससे भी ज्यादा उमंग उत्साह से यह कार्य सम्पन्न हुआ पड़ा है। सब निमित्त हैं। अच्छा।

2- सदा अपने को होलीहंस समझते हो? होलीहंस का कर्तव्य क्या होता है? होलीहंस अर्थात् जो सदा सत्य और असत्य का निर्णय कर सके। हंस में निर्णय शक्ति तीव्र होती है। जिस निर्णय शक्ति के आधार पर कंकड़ और रतन को अलग कर सकते हैं। रतन को ग्रहण करेगा और कंकड़ को छोड़ देगा। तो होलीहंस अर्थात् जो सदा निर्णय शक्ति में नम्बरवन हो। निगेटिव को छोड़ दे और पाजिटिव को धारण करे। देखते हुए सुनते हुए न देखे न सुने। यह है होलीहंस की विशेषता। तो ऐसे हो या कभी निगेटिव भी देख लेते हो? निगेटिव अर्थात् व्यर्थ बातें, व्यर्थ कर्म न सुने न करें और न बोलें। तो ऐसी शक्ति है जो व्यर्थ को समर्थ में चेंज कर दो। या व्यर्थ चलता है? चाहते नहीं हैं लेकिन चल पड़ता है, ऐसे तो नहीं है? यदि व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने की शक्ति नहीं होगी तो अन्त में व्यर्थ का संस्कार धोखा दे देगा। इसलिए होलीहंस अर्थात् परिवर्तन करना। व्यर्थ को समर्थ में चेंज करने के लिए विशेष क्या अभ्यास चाहिए? कैसे चेंज करेंगे? संकल्प पावरफुल कैसे बनेगा? हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना अगर ऐसी विधि होगी तो परिवर्तन कर लेंगे। अगर किसी के प्रति शुभ भावना होती है तो उसकी उल्टी बात भी सुल्टी लगती है और शुभ भावना नहीं होगी तो सुल्टी बात भी उल्टी लगेगी। इसलिए हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना सदा आवश्यक है। तो यह रहती है या कभी कभी व्यर्थ भावना भी हो जाती है? अपनी शुभ भावना व्यर्थ वाले को भी चेंज कर देती है। वैसे भी गाया हुआ है कि भावना का फल मिलता है। जब भक्तों को भावना का फल मिलता है तो आपको शुभ भावना का फल नहीं मिलेगा? तो व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने का आधार है शुभ भावना, शुभ कामना। कैसा भी हो लेकिन आप शुभ भावना दो। कितना भी गंदा पानी इक्ठ्ठा हो लेकिन अच्छा डालते जायेंगे तो गंदा निकलता जायेगा। अगर कोई आत्मा में व्यर्थ को निकालने की समर्थी नहीं है तो आप अपनी शुभ भावना की समर्थी से उसके व्यर्थ को समर्थ कर दो। परिवर्तन कर दो। इतनी शक्ति है या कभी असर हो जाता है? जैसे बापदादा ने आपके व्यर्थ कर्म को देखकर परिवर्तन कर लिया ना। कैसे किया? शुभ भावना से मेरे बच्चे हैं। तो आपकी शुभ भावना कि मेरा परिवार है, ईश्वरीय परिवार है। कैसा भी है चाहे वह पत्थर है लेकिन आप पत्थर को भी पानी कर दो। ऐसी शुभ भावना और शुभ कामना वाले होलीहंस हो? हंस को सदा स्वच्छ दिखाते हैं। तो स्वच्छ बुद्धि हंस के समान परिवर्तन करेंगे। अपने में धारण नहीं करेंगे। तो संगमयुगी होलीहंस हैं यह स्मृति सदा रखनी है। हंस सदा कहाँ रहते हैं? (सरोवर में) तो आप सभी कहाँ रहते हो? ज्ञान सरोवर में। और कहाँ तो नहीं चले जाते? स्थान भी कितना बढ़िया है सरोवर और स्थिति भी कितनी बढ़िया है। जो सदा ज्ञान सरोवर में रहते हैं उनकी स्थिति समर्थ होगी या व्यर्थ होगी? तो सदा अपनी बुद्धि के स्थान और स्थिति को चेक करो। स्थान से स्थिति बनती है। सदा यह स्मृति रहे कि मैं हूँ ही होलीहंस। जैसे प्रदर्शनी में चित्र रखते हो न बुरा देखो, न बुरा बोलो, न बुरा सुनो? यह चित्र किसके लिए रखते हो? औरों के लिए? तो सारे दिन में चेक करो कि जैसा चित्र है वैसी ही चल रही? क्योंकि अगर कोई व्यर्थ करता है और आपने सुन लिया तो समय किसका गया? देख लेते हो तो सोच किसका चलेगा। आपका चलेगा ना। नुकसान किसका हुआ? उसका या आपका? दोनों का नुकसान हुआ लेकिन आप अपना नुकसान नहीं करो। स्व परिवर्तन से दूसरे का परिवर्तन कर सकते हो। दूसरे का परिवर्तन हो तो मैं परिवर्तन होऊँ। तो न वह बदलेगा न आप बदलेंगे। दोनों रह जायेंगे। तो होलीहंस अर्थात् स्व परिवर्तन द्वारा औरों को परिवर्तन करें। आपकी शुभ भावना और शुभ कामना वाणी से भी ज्यादा काम कर सकती है। किसी के भी सामने जाओ आपकी रूहानी भावना और कामना हो तो वह परिवर्तन अवश्य होगा। अच्छा।

मधुबन निवासियों से

मधुबन निवासी चैतन्य दर्शनीय मूर्तियाँ हो। मधुबन में सब क्या देखने आते हैं? क्या मकान देखने आते हैं? मधुबन निवासियों को देखने आते हैं। तो मधुबन निवासी चलते फिरते चैतन्य दर्शनीय मूर्त हो। चलते फिरते आपका दर्शन होता रहता है। ऐसे हर कर्म करते अपने आपको दर्शनीय मूर्त समझकर चलते हो? या कभी साधारण भी हो जाते हो? मन्दिर में देखा है हर कर्म का दर्शन होता है? अभी भगवान सो रहा है अभी नहा रहा है, अभी खा रहा है, अभी श्रृंगार कर रहा है। सबका दर्शन होता है। इससे क्या सिद्ध होता है? कि हर कर्म करते दर्शनीय मूर्त। इसलिए हर कर्म का दर्शन होता है। तो ऐसे दर्शनीय मूर्तियों का कितना महत्व है।

मधुबन वालों ने कितनी दुआओं का स्टॉक जमा किया है? हिसाब है? अच्छा दुआयें सिर्फ लेते हो या देते भी हो? जो भी कर्म करो दुआयें लो और दुआयें दो। जब भी कोई श्रेष्ठ कर्म करता है तो सबके मुख से दुआयें निकलती हैं। हर कर्म में दुआयें दो और दुआयें लो तो सभी के मुख से निकलेगा कि कमाल है, बहुत अच्छे हैं। वाह! ऐसे उमंग उत्साह के बोल निकलेंगे। ऐसे कर्म यादगार बन जाते हैं। तो दुआयें लेने वा देने में बिजी हो या सिर्फ कर्मणा में बिजी हो? कोई भी काम करो लेकिन खुशी लो और खुशी दो। दुआयें लो दुआयें दो। जब अभी संगम पर दुआयें लेंगे और देंगे तब आपके जड़ चित्र द्वारा भी दुआ मिलती रहेगी। अभी जमा करते हो तभी मिलती है। अच्छा सभी खुश रहते हो? जो स्वयं खुश रहता है उससे अन्य स्वतः ही खुश होते हैं। तो सबसे बढ़िया काम है खुश रहना और खुश करना। सेवा का भाग्य तो है ही है, मौज भी है और सेवा भी है। मधुबन का अर्थ ही है मौज। मधुबन में रोज फंक्शन होते हैं। (ज्ञान सरोवर के लिए)

जैसा लक्ष्य रखेंगे वैसा होना कोई बड़ी बात नहीं है। इतने सब ब्राह्मण आत्माओं के सहयोग की अंगुली जहाँ है वहाँ पहाड़ क्या रहेगा। इसलिए जैसा लक्ष्य वैसा होता है और होता ही रहेगा। अच्छा- ओम शान्ति

सफल तपस्वी अर्थात् प्योरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी वाले

आज चारों ओर के तपस्वी बच्चों की याद बापदादा के पास पहुँच रही है। कोई साकार में सम्मुख याद का रिटर्न मिलन मना रहे हैं कोई बच्चे आकारी रूप में याद और मिलन का अनुभव कर रहे हैं। बापदादा देनों ही रूप के बच्चों को देख रहे हैं। आज अमृतवेले बापदादा बच्चों की तपस्या का प्रत्यक्ष स्वरूप देख रहे थे। हर एक बच्चा अपने पुरुषार्थ प्रमाण तपस्या कर रहे हैं। लक्ष्य भी है और उमंग भी है। तपस्वी सभी हैं क्योंकि ब्राह्मण जीवन की विशेषता ही तपस्या है। तपस्या अर्थात् एक के लगन में मग्न रहना। सफल तपस्वी बहुत थोड़े हैं। पुरुषार्थी तपस्वी बहुत हैं। सफल तपस्वी की निशानी उनके सूरत और सीरत में प्योरिटी की पर्सनैलिटी और प्योरिटी की रॉयल्टी सदा स्पष्ट अनुभव होगी। तपस्या का अर्थ ही है मन-वचन-कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क में अपवित्रता का अंश मात्र भी विनाश होना। नाम- निशान समाप्त होना। जब अपवित्रता समाप्त हो जाती है तो इस समाप्ति को ही सम्पन्न स्थिति कहा जाता है। सफल तपस्वी अर्थात् सदा-स्वतः पवित्रता की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी, हर बोल और कर्म से, दृष्टि और वृत्ति से अनुभव हो। प्योरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् संकल्प में भी कोई भी विकार टच न हो। जैसे ब्राह्मण जीवन में शारीरिक आकर्षण व शारीरिक टचिंग अपवित्रता मानते हो, ऐसे मन-बुद्धि में किसी विकार के संकल्प मात्र की आकर्षण व टचिंग, इसको भी अपवित्रता कहा जायेगा। पवित्रता की पर्सनैलिटी वाले, रॉयल्टी वाले मन-बुद्धि से भी इस बुराई को टच नहीं करते। क्योंकि सफल तपस्वी अर्थात् सम्पूर्ण वैष्णव। वैष्णव कभी बुरी चीज को टच नहीं करते हैं। तो उन्हीं का है स्थूल, आप ब्राह्मण वैष्णव आत्माओं का है सूक्ष्म। बुराई को टच न करना यही तपस्या है। धारण करना अर्थात् ग्रहण करना। ये तो बहुत मोटी बात है। लेकिन संकल्प में भी टच नहीं करना। इसको ही कहा जाता है सच्चे वैष्णव।

सिर्फ याद के समय याद में रहना इसको तपस्या नहीं कहा जाता। तपस्या अर्थात् प्योरिटी के पर्सनैलिटी और रॉयल्टी का स्वयं भी अनुभव करना और औरों को भी अनुभव कराना। सफल तपस्वी का अर्थ ही है विशेष महान आत्मा बनना। विशेष आत्माओं वा महान आत्माओं को देश की वा विश्व की पर्सनैलिटीज़ कहते हैं। पवित्रता की पर्सनैलिटी अर्थात् हर कर्म में महानता और विशेषता। पर्सनैलिटी अर्थात् सदा स्वयं की और औरों की सेवा में सदा बिज़ी रहना अर्थात् अपनी इनर्जी, समय, संकल्प वेस्ट नहीं गँवाना, सफल करना। इसको कहेंगे पर्सनैलिटी वाले। पर्सनैलिटी वाले कभी भी छोटी-छोटी बातों में अपने मन-बुद्धि को बिज़ी नहीं रखते हैं। तो अपवित्रता की बातें आप श्रेष्ठ आत्माओं के आगे छोटी हैं या बड़ी हैं? इसलिए तपस्वी अर्थात् ऐसी बातों को सुनते हुए नहीं सुनें, देखते हुए नहीं देखें। ऐसा अभ्यास किया है? ऐसी तपस्या की है? वा यही सोचते हो चाहते तो नहीं हैं, लेकिन दिखाई दे देता है, सुनाई दे देता है? जैसे कोई चीज़ से आपका कनेक्शन ही नहीं है, उन चीज़ों को देखते हुए नहीं देखते हो ना। जैसे रास्ते पर जाते हो, कहीं कुछ दिखाई देता है परन्तु आपके मतलब की कोई बात नहीं है, तो देखते हुए नहीं देखेंगे ना। साइड सीन समझ कर पार कर लेंगे ना? ऐसे जो बातें सुनते हो, देखते हो, आपके काम की नहीं हैं, तो सुनते हुए नहीं सुनो, देखते हुए न देखो। अगर मन-बुद्धि में धारण किया, कि ये ऐसे हैं, ये वैसे हैं... इसको कहा जायेगा व्यर्थ बुराई को टच किया अर्थात् सच्चा वैष्णवपन सम्पूर्ण रूप से नहीं है। प्योरिटी के पर्सनैलिटी में परसेन्टेज कम अर्थात् तपस्या की परसेन्टेज कम। तो समझा तपस्या क्या है?

इसी विधि से अपने आपको चेक करो- तपस्या वर्ष में तपस्या का प्रत्यक्ष स्वरूप प्योरिटी की पर्सनैलिटी अनुभव करते हो? पर्सनैलिटी कभी छिप नहीं सकती। प्रत्यक्ष दिखाई जरूर देती है। जैसे साकार ब्रह्मा बाप को देखा- प्योरिटी की पर्सनैलिटी कितनी स्पष्ट अनुभव करते थे। ये तपस्या के अनुभव की निशानी अब आप द्वारा औरों को अनुभव हो। सूरत और सीरत देनों द्वारा अनुभव करा सकते हो। अभी भी कई लोग अनुभव करते भी हैं। लेकिन इस अनुभव को और स्वयं द्वारा औरों में फैलाओ। आज पर्सनैलिटी का

सुनाया। फिर रॉयल्टी का सुनायेंगे।

सभी मिलन मनाने आये हैं। तो बापदादा भी मिलन मनाने के लिए आप जैसे व्यक्ति शरीर में आते हैं। समान बनना पड़ता है ना। आप साकार में हो तो बाप को भी साकार तन का आधार लेना पड़ता है। वैसे आपको व्यक्ति से अव्यक्त बनना है या अव्यक्त को व्यक्ति बनना है? कायदा क्या कहता है? अव्यक्त बनना है ना? तो फिर अव्यक्त को व्यक्ति में क्यों लाते हो? जब आपको भी अव्यक्त ही बनना है तो अव्यक्त को तो अव्यक्त ही रहने दो ना। अव्यक्त मिलन के अनुभव को बढ़ाते चलो। अव्यक्त भी ड्रामा अनुसार व्यक्ति में आने के लिए बांधे हुए हैं लेकिन समय प्रमाण सरकमस्टांस प्रमाण अव्यक्त मिलन का अनुभव बहुत काम में आने वाला है। इसलिए इस अनुभव को इतना स्पष्ट और सहज करते जाओ, जो समय पर यह अव्यक्त मिलन साकार समान ही अनुभव हो। समझा – उस समय ऐसे नहीं कहना कि हमको तो अव्यक्त से व्यक्ति में मिलने की आदत है। जैसा समय वैसे मिलन मना सकते हो। समझा!

जो भी जहाँ से भी आये हो इस समय सभी मधुबन निवासी हो। या अपने को महाराष्ट्र निवासी, उड़ीसा निवासी... समझते हो? ओरिजनल तो मधुबन निवासी हो। यह सेवा अर्थ भिन्न-भिन्न स्थान पर गये हो, ब्राह्मण अर्थात् मधुबन निवासी। सेवा स्थान पर गये हो इसीलिए सेवा स्थान को मेरा यही स्थान है – यह कभी भी नहीं समझना। कई बच्चे ऐसे कहते हैं, इसको चेंज करो तो कहते हैं नहीं, हमको पंजाब में वा उड़ीसा में ही भेजो। तो ओरिजनल पंजाब, उड़ीसा के हो वा मधुबन के हो। फिर क्यों कहते हो हम पंजाब के हैं तो पंजाब में ही भेजो, गुजरात के हैं तो गुजरात में ही भेजो? चेंज होने में तैयार हो? टीचर्स सभी तैयार हो? किसी को कहाँ भी चेंज करें, तैयार हैं? देखो, दादी सभी को सर्टीफिकेट ना का दे रही है। अच्छा यह भी अप्रैल में करेंगे। जो चेंज होने के लिए तैयार हों वही मिलने आवें। सेन्टर पर जाकर सोचेंगे यदि नहीं रहेंगे कि इसका क्या होगा, मेरा क्या होगा..? थोड़ा बहुत कुछ किनारा भी करेंगी। बापदादा से तपस्या की प्राइज़ लेने चाहते हो और बापदादा को तपस्या की प्राइज़ देने भी चाहते हो, या सिर्फ लेने चाहते हो? सभी सेन्टर से सरेन्डर होकर आना। नये मकान में आसक्ति है क्या? मेहनत करके बनाया है ना, जहाँ मेरापन है वहाँ तपस्या किसको कहा जायेगा? तपस्या अर्थात् तेरा और तपस्या भंग होना माना मेरा। समझा – ये तो सब छोटी2 टीचर्स हैं कहेंगी हर्जा नहीं यहाँ से वहाँ हो जायेंगी। बड़ों को थोड़ा सोचना पड़ता। अच्छा – जो सेन्टर पर आने वाले हैं वो भी सोचते होंगे हमारी टीचर चली जायेगी, आप सभी भी एवररेडी हो? कोई भी कहाँ भी चली जाये। वा कहेंगे हमको तो यही टीचर चाहिए? जो समझते हैं कि कोई भी टीचर मिले उसमें राज़ी हैं वह हाथ उठावें। कोई भी टीचर मिले बापदादा जिम्मेवार है, दादी दीदी जिम्मेवार है, वह हाथ उठावें। अभी ये टी.वी. में तो निकाला है ना। सभी के फोटो टी.वी. में निकाल लो फिर देखेंगे। अन्तिम पेपर का क्वेश्चन ही यह आना है – नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप। तो अन्तिम पेपर के लिए तो सभी तैयार होना ही है। रिहर्सल करेंगे ना, ज़ोन हेड को भी चेंज करेंगे। पाण्डवों को भी चेंज करेंगे। आपका है ही क्या? बापदादा ने दिया और बापदादा ने लिया। अच्छा- सभी एवर-रेडी हैं इसलिए अभी सिर्फ हाथ उठाने की मुबारक हो।

चारों ओर के सफल तपस्वी आत्माओं को, सदा प्योरिटी के पर्सनैलिटी में रहने वाली, सदा प्योरिटी के रॉयल्टी में रहने वाली, सदा सच्चे सम्पूर्ण वैष्णव आत्मायें, सदा समय प्रमाण स्वयं को परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक, ऐसे सदा योगी, सहज योगी, स्वतः योगी, महान आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से मुलाकात

1- सभी तपस्वी आत्माएं हैं – ऐसे अनुभव करते हो? तपस्या अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई। ऐसे है या दूसरा कोई है अभी भी कोई है? कोई व्यक्ति या कोई वैभव? एक के सिवाए और कोई नहीं या थोड़ा2 लगाव है? निमित्त बनकर सेवा करना वह और बात है लेकिन लगाव जहाँ भी होगा, चाहे व्यक्ति में, चाहे वैभव में, तो लगाव की निशानी है, वहाँ बुद्धि जरूर जायेगी। मन भागेगा जरूर। तो चेक करो कि सारे दिन में मन और बुद्धि कहाँ-कहाँ भागती है? सिवाए बाप और सेवा के और कहाँ तो मन-बुद्धि नहीं जाती? अगर जाती है तो लगाव है। अगर व्यवहार भी करते हो, जो भी करते हो, वो भी ट्रस्टी बनकर। मेरा नहीं, तेरा। मेरा काम है, मुझे ही देखना पड़ता है.. मेरी जिम्मेवारी है.. ऐसे कहते हो कभी? क्या करें, मेरी जिम्मेवारी है ना, निभाना पड़ता है ना, करना पड़ता है ना, कहते हो कभी? या तेरा तेरे अर्पण, मेरा कहाँ से आया? तो यह बोल भी नहीं बोल सकते हो? मुझे ही देखना पड़ता है, मुझे ही करना पड़ता है, मेरा ही है, निभाना ही पड़ेगा...। मेरा कहा और बोझ हुआ। बाप का है, बाप करेगा, मैं निमित्त हूँ तो हल्के। बोझ उठाने की आदत तो नहीं है? 63 जन्म बोझ उठाया ना। कड़्यों की आदत होती है बोझ उठाने की। बोझ उठाने बिना रह नहीं सकते। आदत से मजबूर हो जाते हैं। मेरा मानना माना बोझ उठाना। समझा। थोड़ा सा किनारा करके रखा है, समय पर काम में आयेगा?। पाण्डवों ने थोड़ा बैंक बैलेन्स, थोड़ा जेब खर्च रखा है? जरा भी मेरापन नहीं। मेरा माना मैला। जहाँ मेरापन होगा ना वहाँ विकारों का मैलापन जरूर होगा। तेरा है तो क्या होगा? तैरते रहेंगे, डूबेंगे नहीं। तैरने में तो मजा आता है ना! तो तपस्या अर्थात् तेरा, मेरा नहीं। अच्छा- ये इस्टर्न ज़ोन है। सूर्य उदय होता है ना। तो इस्टर्न ज़ोन वालों के पास बाप के साथ का यादगार सूर्य

सदा ही चमकता है ना। सभी तपस्या में सफलता को प्राप्त कर रहे हो ना। तपस्या में सन्तुष्ट हो? अपने चार्ट से सन्तुष्ट हो? या अभी होना है? यह भी एक लिफ्ट की गिफ्ट है। गिफ्ट जो होती है उसमें खर्चा नहीं करना पड़ता, खरीदने की मेहनत नहीं करनी पड़ती। एक तो है अपना पुरुषार्थ और दूसरा है विशेष बाप द्वारा गिफ्ट मिलना। तो तपस्या वर्ष एक गिफ्ट है, सहज अनुभूति की गिफ्ट। जितना जो करना चाहे कर सकता है। मेहनत कम, निमित्त मात्र और प्राप्ति ज्यादा कर सकते हैं। अभी भी समय है, वर्ष पूरा नहीं हुआ है। अभी भी जो लेने चाहो ले सकते हो। इसलिए सफलता का सूर्य इस्ट में जगाओ। सदा सभी खुश हैं या कभी-कभी कुछ बातें होती तो नाखुश भी होते हो? खुशी बढ़ती जाती है, कम तो नहीं होती है? मायाजीत हो या माया रंग दिखा देती है? वह कितना भी रंग दिखाये, मैं मायापति हूँ। माया रचना है, मैं मास्टर रचयिता हूँ। तो खेल देखो लेकिन खेल में हार नहीं खाओ। कितना भी माया अनेक प्रकार का खेल दिखाये, आप देखने वाले मनोरंजन समझकर देखो। देखते-देखते हार नहीं जाओ। साक्षी होकर के, न्यारे होकर के देखते चलो। सभी तपस्या में आगे बढ़ने वाले, गिफ्ट लेने वाले हो? सेवा अच्छी हो रही है? स्वयं के पुरुषार्थ में उड़ रहे हैं और सेवा में भी उड़ रहे हैं। सभी फर्स्ट हैं। सदा फर्स्ट रहना, सेकेण्ड में नहीं आना। फर्स्ट रहेंगे तो सूर्यवंशी बनेंगे, सेकेण्ड बनें तो चन्द्रवंशी। फर्स्ट नम्बर मायाजीत होंगे। कोई समस्या नहीं, कोई प्रॉब्लम नहीं, कोई क्वेश्चन नहीं, कोई कम-जोरी नहीं। फर्स्ट नम्बर अर्थात् फास्ट पुरुषार्थ। जिसका फास्ट पुरुषार्थ है वो पीछे नहीं हो सकता। सदा साक्षी और सदा बाप के साथी – यही याद रखना।

2- सदा अपने को सहजयोगी, सहज ज्ञानी समझते हो? सहज है या मेहनत है? जब माया बड़े रूप में आती है तो मुश्किल नहीं लगता? मधुबन में बैठे हो तो सहज है, वहाँ प्रवृत्ति में रहते जब माया आती है फिर मुश्किल लगता है? कभी-कभी क्यों लगता है, उसका कारण? मार्ग कभी मुश्किल, कभी सहज है – ऐसे नहीं कहेंगे। मार्ग सदा सहज है, लेकिन आप कमजोर हो जाते हो इसी-लिए सहज भी मुश्किल लगता है। कमजोर के लिए कोई छोटा सा भी कार्य भी मुश्किल लगता है। अपनी कमजोरी मुश्किल बना देती है, बाकी मुश्किल है नहीं। कमजोर क्यों होते हैं? क्योंकि कोई न कोई विकारों के संग दोष में आ जाते हैं। सत का संग किनारे हो जाता है और दूसरा संग दोष लग जाता है। इसलिए भक्ति में भी कहते हैं कि सदा सतसंग में रहो। सतसंग अर्थात् सत बाप के संग में रहना। तो आप सदा सतसंग में रहते हो या और संग में भी चक्कर लगाते हो? सतसंग की कितनी महिमा है! और आप सबके लिए सत बाप का संग अति सहज है। क्योंकि समीप का सम्बन्ध है। सबसे समीप सम्बन्ध है बाप और बच्चे का। यह सम्बन्ध सहज भी है और साथ-साथ प्राप्ति कराने वाला भी है। तो आप सभी सदा सतसंग में रहने वाले सहज योगी, सहज ज्ञानी है। सदैव यह सोचो कि हम औरों की भी मुश्किल को सहज करने वाले हैं। जो दूसरों की मुश्किल को सहज करने वाला होता वह स्वयं मुश्किल में नहीं आ सकता। अच्छा सेवा में क्वालिटी है या क्वालिटी है? क्वालिटी वालों की निशानी क्या होती है?

क्वालिटी वाली आत्मा की निशानी है – वह आते ही अपनापन महसूस करेगी। उसको ये स्मृति स्पष्ट होगी कि मैं इसी परिवार का था और पहुँच गया हूँ। अपनेपन से निश्चय में या पुरुषार्थ में देरी नहीं लगेगी। वह अपने परिवार को परख लेगा, अपने बाप को पहचान लेगा। तो अपनेपन का अनुभव होना ये पुरुषार्थ में क्वालिटी की निशानी है। सिर्फ नाम या धन में क्वालिटी नहीं, उसको सिर्फ क्वालिटी नहीं कहा जाता है, लेकिन पुरुषार्थ की भी क्वालिटी उसमें हो और जिसका अटल निश्चय पक्का रहता है, उसका प्रभाव स्वतः ही औरों पर पड़ता है। अपनापन होने के कारण उसको सब सहज अनुभव होगा। इसलिए तीव्र अर्थात् फास्ट जायेगा। जहाँ अपनापन होता है वहाँ कोई भी काम मुश्किल नहीं लगता है। तो ऐसी क्वालिटी वाली आत्माएँ और ज्यादा से ज्यादा निकालो। समझा। आप सब तो क्वालिटी वाली आत्माएं हो ना। वृद्धि को प्राप्त कर रहे हो और आगे भी करते रहेंगे। पहले स्व के पुरुषार्थ में वृद्धि, फिर सेवा में। तो देनों बातों में सदा ही वृद्धि को प्राप्त करते, उड़ते चलो। अच्छा। माताओं को बहुत खुशी है या कभी-कभी दुःख की लहर भी आ जाती है? कुछ भी हो जाये, दुःख की लहर तो नहीं आती है? संकल्प में भी दुःख की महसूसता नहीं हो। सुखदाता के बच्चे हो ना। सुखदाता के बच्चों के पास दुःख की लेशमात्र भी नहीं आ सकती। स्वप्न में भी नहीं आ सकती। ऐसे सुखदायी आत्मा हो? क्या भी हो जाये दुःख नहीं हो सकता। सुख में रहने वाले और सुख देने वाले। दुःख की दुनिया को छोड़ दिया।

3- डबल विदेशी बताओ - आपका इस आबू पर्वत पर कौन सा यादगार है? अच्छा भारतवासी सुनाओ आपका यादगार कौन सा है? अच्छा - भारतवासियों का यादगार अचलगढ़ है और डबल विदेशियों का यादगार दिलवाला है? या देनों ही यादगार देनों के हैं? अचलगढ़ कौन बन सकता है? जिसने दिलाराम को अपना बना लिया, वही अचल बन सकता है। इसलिए देनों ही यादगार बहुत कायदे प्रमाण बने हुए हैं। अगर दिलवाला बाप को अपना नहीं बनाया तो अचल की बजाए हलचल होती है। कोई भी चीज में हलचल होती रहे तो वह टूट जायेगी और जो अचल होगी वो सदा कायम रहेगी। तो सदैव ये स्मृति में रखो कि हम दिलवाला बाप को दिल देने वाली अचल आत्माएँ हैं। ये मेरा यादगार है – हरेक अनुभव करे। ऐसे नहीं - ये ब्रह्मा बाप का या महारथियों का है। नहीं, मेरा यादगार है। देखो ड्रामानुसार अपने यादगार स्थान पर ही पहुँच गये। नहीं तो पाकिस्तान से आबू में आना – यह तो स्वप्न

में भी नहीं आ सकता था। लेकिन ड्रामा में यादगार यहीं था तो कैसे पहुँच गये हैं। अपने ही यादगार को देख हर्षित होते रहते हो। अचल रहना - कोई मुश्किल बात नहीं है। कोई भी चीज को हिलाते रहो तो मेहनत भी और मुश्किल भी। सीधा रख दो तो वह सहज है। ऐसे ही मन-बुद्धि द्वारा हलचल में आना कितना मुश्किल होता है और मन बुद्धि एकाग्र हो जाती है तो कितना सहज होता है। अभी हलचल में आना पसन्द ही नहीं करेंगे। अच्छा नहीं लगेगा। आधाकल्प हलचल में आते थक गये। तन की भी हलचल, मन की भी हलचल, धन की भी हलचल। तन से भी भटकते रहे। कभी किस मन्दिर में। कभी किस यात्रा पर, तो कभी किस यात्रा पर और मन परेशानियों में, हलचल में आते रहा और धन में तो देखो- कभी लखपति तो कभी कखपति। तो अनेक जन्मों की हलचल का अनुभव होने के कारण अभी अचल अवस्था अति प्रिय लगती है। इसीलिए दूसरों के ऊपर रहम आता है। शुभ भावना, शुभ कामना उत्पन्न होती है कि ये भी अचल हो जाये। अचल स्थिति वालों का विशेष गुण होगा - रहमदिल। सदा हर एक आत्मा के प्रति दातापन की भावना। ऐसे मास्टर दाता बने हो कि दूसरे को देखकर घृणा आती है? रहम आता है, दया भाव आता है, दातापन की स्मृति आती है? या क्यों क्या उत्पन्न है? आप सबका विशेष टाइल है - विश्व कल्याणकारी। जो विश्व कल्याणकारी है उसको हर आत्मा के प्रति कल्याण की भावना होगी। उसके अन्दर स्वतः ही किसी आत्मा के प्रति भी घृणा भाव, द्वेष भाव, ईर्ष्या भाव या ग्लानि का भाव कभी उत्पन्न नहीं होगा। इसको कहा जाता है विश्व कल्याणकारी आत्मा। तो ऐसे हो? या कभी-कभी दूसरे भाव भी आ जाते हैं? बस, सदा कल्याण का भाव हो।

सत्यता की सभ्यता ही रीयल रॉयल्टी है

अव्यक्त बापदादा अपने रीयल और रॉयल बच्चों प्रति बोले :

आज बापदादा अपने श्रेष्ठ परिवार अर्थात् अपने रॉयल फैमली को देख रहे हैं। सारे कल्प में सबसे रॉयल आप श्रेष्ठ आत्माएं ही हो। अनादि आत्मिक स्वरूप में भी सबसे श्रेष्ठ रॉयल आत्मायें हो और आदि स्वरूप देव आत्माओं के रूप में भी रॉयल राज्य अधिकारी रॉयल फैमली हो। पूज्य रूप में भी आप देव आत्माओं की कितनी रॉयल्टी से पूजा होती रहती है और किसी भी अन्य धर्म आत्मा वा राजनीतिक आत्माओं की ऐसी रॉयल पूजा नहीं होती। तो तीनों रूपों में – अनादि, आदि और पूज्य स्वरूप ऐसे रॉयल और कोई भी नहीं हैं। क्योंकि आप आत्माओं की प्योरिटी की ही रॉयल्टी है। ऐसे सम्पूर्ण पवित्र और कोई भी आत्मा सारे कल्प में न ही बनी है, न बनेगी। यह प्योरिटी की ही विशेषता है। इसलिए सिर्फ देव आत्माओं के आगे ही यह महिमा गाते हैं कि आप सम्पूर्ण निर्विकारी हो, और किसी भी धर्म आत्माओं की महिमा में ऐसी महिमा नहीं गाई जाती है। सिर्फ देव आत्माओं के श्रेष्ठ कीर्ति अर्थात् श्रेष्ठ पवित्रता की ही कीर्तन होता है। और कोई भी धर्म में कीर्तन नहीं होता है। साजों और बाजों से कीर्तन का रिवाज देव आत्माओं में ही है वा संगमयुग के शक्ति स्वरूप में है। यह सम्पूर्ण पवित्रता के विधि की सिद्धि है। इसलिए आप जैसी रूहानी रॉयल्टी और किसी आत्मा की नहीं है। तो चेक करो- ऐसे प्योरिटी की रॉयल्टी कहाँ तक आई है? रूहानी रॉयल्टी की सबसे श्रेष्ठ निशानी है – रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सत्यता। जैसे आत्मा का अनादि स्वरूप सत है। सत अर्थात् अविनाशी और सत्य है। जैसे बाप की महिमा विशेष यही गाते रहते हैं – सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। सत्य ही शिव है वा गॉड इज ट्रुथ (God is truth) कहा जाता है। तो बाप की महिमा सत्य अर्थात् सत्यता की है। ऐसे रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी – सत्यता जरा भी बनावटी या मिलावटी न हो। चाहे बोल में, चाहे कर्म में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में मिलावट या बनावट नहीं हो। जिसको साधारण भाषा में बापदादा कहते हैं – सच्चाई। रॉयल आत्माओं की वृत्ति, दृष्टि बोल और चलन सब एक सत्य होगी। ऐसे नहीं कि वृत्ति में एक बात हो और बोल में दूसरा बनावटी भाव हो। इसको रॉयल्टी वा रीयल्टी नहीं कहा जाता है।

आजकल बापदादा बच्चों की लीला देखते भी हैं और सुनते भी हैं। कई बच्चे बात को मिलाने और बनाने में बहुत होशियार हैं। क्योंकि द्वापर से मिलावट और बनावट की कथायें बहुत सुनी हैं। तो इस ब्राह्मण जीवन में भी वह संस्कार इमर्ज कर लेते हैं। ऐसी अच्छे रूप से बात बना लेते हैं जो झूठ को बिल्कुल सम्पूर्ण सत्य बना देते हैं और सत्य को झूठ सिद्ध कर देते हैं। इसको कहा जाता है – अन्दर एक, बाहर दूसरा। तो क्या यह रीयल्टी है? रॉयल्टी है? नहीं है ना। तो ऐसे पवित्रता की रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी। यह रॉयल्टी की निशानी है। अगर यह निशानी नहीं है तो समझो प्योरिटी की रॉयल्टी नहीं आई है वा परसेन्टेज में आई है, सम्पूर्ण नहीं है।

रीयल्टी की दूसरी निशानी बापदादा सदा सुनाते रहते हैं – सच तो बिठो नच। सच्ची आत्मायें सदा खुशी में नाचती रहेंगी। कभी खुशी कम, कभी खुशी ज्यादा, ऐसा नहीं होगा। दिन प्रतिदिन, हर समय और खुशी बढ़ती रहेगी। रीयल्टी की निशानी है – सदा खुशी में नाचना। नैन चैन कहते हो ना, रीयल्टी का अर्थ भी है चित से भी और नैन चैन से भी सदा हर्षित। सिर्फ बाहर से हर्षितमुख नहीं, लेकिन चित्त में भी हर्षित। हर्षित चित्त हर्षित मुख, दोनों हर्षित हों। कई बार ऐसे भी होता है कि अन्दर चित्त में खुशी नहीं होती

लेकिन बाहरमुख में समय प्रमाण खुशनुमा बन करके दिखाते हैं। इसको अल्प काल का हर्षितमुख कहेंगे, लेकिन हर्षित चित्त, हर्षितमुख अविनाशी हो। तो पवित्रता की रीयल्टी रॉयल्टी अर्थात् अविनाशी चित्त और मुख हर्षित हों। चेक करो – दूसरे को चेक करने नहीं लग जाना, अपने को चेक करना है। ऐसी रॉयल आत्मा बापदादा को और सर्व ब्राह्मण परिवार को अति प्यारी होती है। रीयल प्यारी आत्मा की विशेषता क्या होती है? क्योंकि आजकल के रीति-रसम प्रमाण जो बहुत प्यारा लगता है तो प्यारे के तरफ न चाहते हुए भी आकर्षित हो जाते हैं। जिसको आप लोग अपनी भाषा में अटैचमेन्ट कहते हो। क्योंकि प्यारा है तो अटैचमेन्ट तो होगी ना। लेकिन रीयल और रॉयल प्यार की निशानी है – वो जितना ही प्यारा होगा उतना ही न्यारा भी होगा। इसलिए वह न स्वयं एक्स्ट्रा अटैचमेन्ट में आयेगा, न दूसरा उसकी अटैचमेन्ट में आयेगा। इसको कहा जाता है रीयल प्यार, सम्पूर्ण प्यार। वह हर्षित रहेगा, आकर्षित भी होगा परन्तु हृद की आकर्षण करने वाला नहीं। तो रीयल और रॉयल की निशानी क्या हुई? अति प्यारा और अति न्यारा।

रॉयल्टी की और विशेषता है उस आत्मा में कभी किसी भी प्रकार के, चाहे स्थूल, चाहे सूक्ष्म, मांगने के संस्कार नहीं होंगे। क्योंकि रॉयल आत्मा सदा सम्पन्न भरपूर रहती है। एक भरपूरता बाहर की होती है स्थूल वस्तुओं से, स्थूल साधनों से भरपूरता। और दूसरी होती है मन की भरपूरता। जो मन से भरपूर रहता है उसके पास स्थूल वस्तु या साधन नहीं भी हो फिर भी मन भरपूर होने के कारण वो कभी अपने में कमी महसूस नहीं करेगा। ना में भी हँ का अनुभव करेगा। और जिसका मन भरपूर नहीं होता वह आत्मा बाहर से कितनी भी वस्तु और साधन से भरपूर होते भी वह कभी भी अपने को भरपूर नहीं समझेगा। ऐसी आत्मा सदा इच्छा के कारण 'चाहिए चाहिए'का गीत गाती रहेगी। हर बात में ये होना चाहिए, ये करना चाहिए, ये मिलना चाहिए, ये बदलना चाहिए... हर समय यही गीत गाते रहेंगे। और मन से भरपूर आत्मा सदा यही गीत गाती रहेगी सब पा लिया, प्राप्त हो गया, ये होना चाहिए, ये करना चाहिए, ये चाहिए चाहिए भी रॉयल मांगने के संस्कार हैं। बेहद की सेवा-प्रति सोचना कि ये होना चाहिए, ये करना चाहिए, वह अलग बात है लेकिन स्व की हृद के प्राप्त अर्थ चाहिए चाहिए ये रॉयल मांगना है। नाम चाहिए, मान चाहिए, शान चाहिए, प्यार चाहिए, पूछना चाहिए – ये सब हृद की बातें हैं। रॉयल आत्मा में मांगने का अंश मात्र भी संस्कार नहीं होता है। समझा – रॉयल्टी क्या होती है?

तपस्या के चार्ट में यह सब चेक करना, ऐसे नहीं, मैंने किसी को गाली नहीं दी, क्रोध नहीं किया, नहीं, यह सब बातें चेक करना। फिर प्राइज लेना। तपस्या का अर्थ ही है – सम्पूर्ण पवित्र बनना। तो पवित्रता की पर्सनैलिटी, पवित्रता की रॉयल्टी कहाँ तक प्रैक्टिकल में रही है यह चेक करना है। इसको कहेंगे तपस्वीराज। समझा – रॉयल्टी क्या है?

रॉयल आत्मा का चेहरा और चलन दोनों ही सत्यता की सभ्यता अनुभव करायेंगे। वैसे भी रॉयल आत्माओं को सभ्यता की देवी कहा जाता है। उनका बोलना, देखना, चलना, खान-पीना, उठना-बैठना, हर कर्म में सभ्यता सत्यता स्वतः ही दिखाई देगी। ऐसे नहीं कि मैं तो सत्य को सिद्ध कर रहा हूँ और सभ्यता हो ही नहीं। कई बच्चे कहते हैं वैसे क्रोध नहीं आता है, लेकिन कोई झूठ बोलता है तो क्रोध आ जाता है। उसने झूठ बोला, आपने क्रोध से बोला तो दोनों में राइट कौन? सत्यता को सिद्ध करने वाला सदा सभ्यता वाला होगा। कई चतुराई करते हैं, कहेंगे हम क्रोध नहीं करते हैं, हमारा आवाज ही बड़ा है, आवाज ही ऐसा तेज है। साइन्स के साधनों से आवाज को कम और ज्यादा कर सकते हैं ना तो क्या साइलेन्स के पॉवर से अपने आवाज की गति को धीमी या तेज नहीं कर सकते हो? इससे तो ये टेप रिकार्ड और ये माइक अच्छा है जो आवाज कम ज्यादा तो कर सकते हो। तो ये चेक करो कि सत्यता के साथ सभ्यता भी है? अगर सभ्यता नहीं तो सत्यता नहीं। तो प्योरिटी की रॉयल्टी सदा प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे। ऐसे नहीं, अन्दर में तो रॉयल्टी है, बाहर देखने में नहीं आती। अगर अन्दर है तो बाहर में जरूर दिखाई देगी। सत्यता की रॉयल्टी को कोई छिपा नहीं सकता। इसमें गुप्त नहीं रहना है। कई कहते हैं गुप्त पुरुषार्थी हैं इसीलिए गुप्त रहते हैं। लेकिन जैसे सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता, सत्यता के सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता। न कोई कारण छिपा सकता है, न कोई व्यक्ति। सत्य सदा ही सत्य है। सत्यता की शक्ति सबसे महान है। सत्यता सिद्ध करने से सिद्ध नहीं होती। सत्यता की शक्ति को स्वतः ही सिद्ध होने की सिद्धि प्राप्त होती है। सत्यता को अगर कोई सिद्ध करने चाहता है तो वह सिद्ध जिद्द हो जाता है। इसलिए सत्यता स्वयं ही सिद्ध होती ही है। उसको सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। समझा। तपस्या वर्ष में क्या दिखाना है? प्योरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी। अच्छा!

देश-विदेश के तरफ से सभी बच्चों के पत्र, यादप्यार पुरुषार्थ के, सेवा के समाचार और दिल की रूहरिहान सब बापदादा के पास पहुँच रही है, पहुँच गई है। बापदादा सभी बच्चों को नाम सहित याद प्यार दे रहे हैं। हर एक समझे पहले हमारी याद। क्योंकि बापदादा यादप्यार का रेसपॉन्ड अव्यक्त रूप से तो उसी घड़ी दे ही देते हैं। लेकिन फिर भी साकार विधि से स्वयं भी साकार में पत्र लिखते हैं या यादप्यार भेजते तो बापदादा भी साकार विधि प्रमाण साकार रूप में भी रिटर्न यादप्यार दे रहे हैं। बापदादा जानते हैं कि चारों ओर उमंग-उत्साह तपस्या का और मन्सा वायब्रेशन द्वारा सेवा का, अच्छा है और रहेगा। अभी और भी आगे गुह्य राजयुक्त

बातों को सामने रख पुरुषार्थ को, सेवा को महीन और महान बनाते चलो। सभी बच्चों को, जो सम्मुख बैठे हैं वा आकार स्वरूप से बाप के सम्मुख हैं, ऐसे सर्व सम्मुख अर्थात् सदा साथ रहने वाले नयनों में, मुख में, मन में सदा बच्चों के बाप हैं और बाप के बच्चे हैं।

ऐसे सदा याद में समाये हुए श्रेष्ठ आत्मायें, सदा प्योरिटी के रीयल्टी और रॉयल्टी में रहने वाली आत्माएं, सदा मन से सम्पन्न भर-पूर रहने वाली आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से मुलाकात

गुप-1 : पदमापदम भाग्यवान आत्मायें अनुभव करते हो! इतना श्रेष्ठ भाग्य सारे कल्प में किसी भी आत्मा का नहीं है। चाहे कितने भी नामीग्रामी आत्मायें हों, लेकिन आपके भाग्य के आगे उन्हीं का भाग्य क्या है? वह है अल्पकाल का भाग्य और ब्राह्मण आत्माओं का है – अविनाशी भाग्य। सिर्फ इस एक जन्म का नहीं है, जन्म-जन्म का है। बाप का बनना अर्थात् भाग्य का वर्सा अधिकार में मिलना। तो अधिकार तो मिल गया ना। बच्चा अर्थात् अधिकार, वर्सा। अधिकार का नशा है कि उतरता चढ़ता है? आधाकल्प तो नीचे ही उतरे, अभी क्या करना है? चलना है, चढ़ना है या उड़ना है? उड़ने वाली चीज बीच में कभी रुकती नहीं। रुकेंगे तो नीचे आयेंगे। थोड़े से समय में भी रुकेंगे फिर उड़ेंगे तो मंजिल पर कैसे पहुँचेंगे? इसलिए उड़ते रहो। लेकिन सदा उड़ेगा कौन? जो हल्का होगा। तो हल्के हो ना? या तन का, मन का, सम्बन्ध का बोझ है? अगर बोझ नहीं है तो रुकते क्यों हैं? जो बोझ वाली चीज है वो नीचे आती है और जो हल्की होती है वह सदा ऊपर रहती है। आप सब तो डबल लाइट हो ना?

तो सदा अपने भाग्य को स्मृति में रखने से भाग्य विधाता बाप स्वतः ही याद आयेगा। भाग्य विधाता को याद करना अर्थात् भाग्य को याद करना और भाग्य को याद करना अर्थात् भाग्य विधाता को याद करना। दोनों का सम्बन्ध है। कोई भी एक को याद करो तो दोनों याद आ जाते हैं। तो चलते-फिरते वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य! जो संकल्प में भी न था लेकिन साकार स्वरूप में प्राप्त कर रहे हैं। इतना सहज भाग्य और प्राप्त कितना सहज हो गया! किसी भी महान आत्मा के पास जाते हैं तो हृद की प्राप्ति के लिए – चाहे बच्चा चाहिए, चाहे धन चाहिए, चाहे तन की तन्दरुस्ती चाहिए, तो एक प्राप्ति के लिए भी कितनी मेहनत करते हैं और आपको क्या करना पड़ा? मेहनत करनी पड़ी? या आंख खुली, तीसरा नेत्र खुला और देखा भाग्य का नज़ारा। घर बैठे परिचय मिल गया। आप लोगों को ढूँढना नहीं पड़ा। कोई हृद के खान से भी हृद का खज़ाना लेना हो तो कितनी भागदौड़ करनी पड़ती है। ये तो सहज ही आपको घर बैठे हाथ में मिल गया। एक बाप एक परिवार। अनेकता खत्म हो गई और सभी एक हो गये। अपना बाप, अपना परिवार। अपना लगता है ना। चाहे कितना भी दूर हो लेकिन स्नेह समीप ले आता है। स्नेह नहीं तो साथ रहते भी दूर लगता है। तो ईश्वरीय स्नेह वाले परिवार में आ गये। इसलिए सदा याद रखो - ओहो मेरा श्रेष्ठ भाग्य! भाग्य विधाता द्वारा श्रेष्ठ भाग्य पा लिया। जब बाप ने अपना बना लिया तो और क्या चाहिए? अच्छा बन गये ना तो इच्छा खत्म हो गई। अच्छा नहीं बनते तो इच्छा रहती। इच्छायें सब सम्पन्न हो गईं। बाप मिला सब कुछ मिला। तो तृप्त आत्मा सदा रूहानी नशे में रहती है। जो भरपूर आत्मा होती है तो उसके नशे को देखो - कहे, नहीं कहे, लेकिन उसका नशा स्वतः दिखाई पड़ता है। तो आपका रूहानी नशा कितना बड़ा है! तो आप क्या याद रखेंगे! वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य। यह याद रहेगा कि बाम्बे जायेंगे तो भूल जायेगा? बाम्बे में जितना माया का फोर्स है उतना आपमें रूहानी फोर्स है। कहते हैं ना बाम्बे माया नगरी है। आप क्या कहेंगे? हमारे लिए बाप की नगरी है। अच्छा।

गुप-2 : अपने को ब्राह्मण संसार का समझते हो। ब्राह्मण संसार ही हमारा संसार है, बाप ही हमारा संसार है - ऐसे अनुभव करते हो कि और भी कोई संसार है। बाप और छोटा सा परिवार यही संसार है। जब ऐसा अनुभव करेंगे तब न्यारे और प्यारे बनेंगे। अपना संसार ही न्यारा है। अपनी दृष्टि-वृत्ति सब न्यारी है। ब्राह्मणों की वृत्ति में क्या रहता है? किसी को भी देखते हो तो आत्मिक वृत्ति से, आत्मिक दृष्टि से मिलते हो। जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि। अगर वृत्ति और दृष्टि में आत्मिक दृष्टि है तो सृष्टि कैसी लगेगी? आत्माओं की सृष्टि कितनी बढ़िया होगी? शरीर को देखते भी आत्मा को देखेंगे। शरीर तो साधन है। लेकिन इस साधन में विशेषता आत्मा की है ना। आत्मा निकल जाती है तो शरीर के साधन की क्या वैल्यु है! आत्मा नहीं है तो देखने से भी डर लगता है। तो विशेषता तो आत्मा की है। प्यारी भी आत्मा लगती है। तो ब्राह्मणों के संसार में स्वतः चलते फिरते आत्मिक दृष्टि, आत्मिक वृत्ति है इसलिए कोई दुःख का नाम-निशान नहीं। क्योंकि दुःख होता है शरीर भान से। अगर शरीर भान को भूलकर आत्मिक स्वरूप में रहते हैं तो सदा सुख ही सुख है। सुखदायी-सुखमय जीवन। क्योंकि बाप को कहते ही हैं – सुखदाता। तो सुखदाता द्वारा सर्व सुखों का वर्सा मिल गया। माँ बाप कहा और वर्सा मिला। तो सुख की शैया पर सोने वाले। चाहे स्थूल में बिस्तर पर सोते हो, लेकिन मन किस पर सोता है? चलते-फिरते क्या लगता है? सुख ही सुख है। संसार ही सुखमय है सुख ही सुख दिखाई देगा ना। दुःखधाम को छोड़ दिया। अभी भी दुःखधाम में रहते हो या कभी-कभी चक्कर लगाने जाते हो? दुःखधाम से किनारा कर दिया। संगम पर आ गये है ना। अभी संगमयुगी हो या कलियुगी हो? स्वप्न में भी दुःखधाम में नहीं जा सकते। नया जीवन है ना। युग भी बदल गया, जीवन भी बदल गया। अभी संगमयुगी श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मायें हैं – इसी नशे में सदा रहो। सुखमय संसार में रहने वाले

सुख स्वरूप आत्मायें। दुःख तो 63 जन्म देख लिया। अभी संगम पर अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने वाले हैं। यह बाहर का सुख नहीं है, अतीन्द्रिय सुख है। विनाशी सुख तो कलियुगी आत्माओं को भी है। लेकिन आपको अतीन्द्रिय सुख है। अगर इन्द्रियों का सुख है तो इन्द्रियाँ तो खुद ही विनाशी हैं तो सुख भी विनाशी होगा ना? कभी भी ये संकल्प में नहीं आ सकता कि फलाने ने मुझे बहुत दुःख दे दिया। फलाना बहुत दुःखी करता है ये संकल्प भी नहीं कर सकते। अगर किसी ने दुःख दिया तो आपने लिया क्यों? देने वाले ने दिया, और आपने नहीं लिया, तो किसके पास रहा? आपको तो नहीं मिला ना, तो लेते क्यों हो? जो कहते हो मेरे को बहुत दुःखी किया। ये बहुत दुःख देने वाला है – ब्राह्मणों के ये बोल नहीं। ऐसे बोल कभी बोलते हो? मातायें कभी बोलती हो – बहु ने बहुत दुःख दिया, तंग किया। बहु कहे - सासु ने बहुत दुःख दिया, ननद ने बहुत दुःख दिया। ऐसे तो नहीं कहती हो, भाषा परिवर्तन हो गई है। लेने वाले लेंगे नहीं तो कहाँ से आपके पास आया? बापदादा ने क्या पक्का कराया था – न दुःख दो, न दुःख लो। हम तो किसको दुःख देते नहीं, यह अधूरा हुआ। दुःख लेते भी नहीं। तो जब न देंगे, न लेंगे, तब अतीन्द्रिय सुख में रहेंगे। देने वाला कोई किचड़ा देवे तो ले लेंगे? दुःख अच्छा है या बुरा? जब बुरी चीज है तो लेते क्यों हो? वो दे देता है मजबूरी से इसीलिए ले लेते हो? अगर कोई किचड़ा फेंक कर भी जाये तो आप क्या करेंगे? फेंक देंगे या रख देंगे, जमा करके? अगर जबरदस्ती कोई दे भी देता है तो खत्म कर दो, रखते क्यों हो, धारण क्यों करते हो? ब्राह्मण अर्थात् सदा सुखी? सदा सुख देने वाले। ब्राह्मणों का काम है - सुख देना और सुख लेना। तो सदा सुख के झूले में झूलते रहो। बाप कहते हैं - सदा बाप के साथ झुले में झूलते रहो। यही भक्ति का फल है।

सदा रॉयल फैमिली वाले हो ना। रॉयल फैमली वाले सदा गलीचों में चलते, मिट्टी में नहीं। तो झूले में झूलो। नीचे आना अर्थात् मिट्टी में आना। यह देह भी मिट्टी है ना। तो देह भान में नीचे आना अर्थात् मिट्टी में पांव रखना। तो जब गलती से भी मिट्टी में पांव रखते हो उस समय अपने से पूछो कि हम रॉयल बाप के बच्चे और मिट्टी में पांव कैसे रखा? माँ बाप के जो लाडले बच्चे होते हैं तो कोशिश करते हैं सदा गोदी में खेलता रहे। नीचे नहीं रखेंगे। तो आप भी लाडले हो। जब बाप ने इतना सिकीलधा लाडला बना दिया तो लाडले होकर चलो ना, साधारण नहीं बनो। अच्छा।

हर कर्म में ऑनेस्टी (Honesty) का प्रयोग करना ही तपस्या है

अव्यक्त बापदादा अपने ऑनेस्ट बच्चों प्रति बोले :

आज बापदादा चारों ओर के सर्व तपस्वी कुमार और तपस्वी कुमारियों में तपस्या की विशेष निशानी देख रहे हैं। तपस्वी आत्मा की विशेषतायें पहले भी सुनाई है। आज और विशेषता सुना रहे हैं। तपस्वी आत्मा अर्थात् सदा ऑनेस्ट आत्मा। ऑनेस्टी ही तपस्वी की विशेषता है। ऑनेस्ट आत्मा अर्थात् हर कर्म में, श्रीमत में चलने में आनेस्ट होगी। ऑनेस्ट अर्थात् वफादार और इमानदार। श्रीमत पर चलने के ऑनेस्ट अर्थात् वफादार। ऑनेस्ट आत्मा स्वतः ही हर कदम श्रीमत के इशारे प्रमाण उठाती है। उनका हर कदम आटोमेटिक श्रीमत के इशारे पर ही चलता है। जैसे साइन्स की शक्ति द्वारा कई चीजें इशारे से आटोमेटिक चलती हैं, चलाना नहीं पड़ता, चाहे लाइट द्वारा, चाहे वायब्रेशन द्वारा स्विच ऑन किया और चलता रहता है। लेकिन साइन्स की शक्ति विनाशी होने के कारण अल्पकाल के लिए चलती है। अविनाशी बाप के साइलेन्स की शक्ति द्वारा इस ब्राह्मण जीवन में सदा और स्वतः ही सहज चलते रहते हैं। ब्राह्मण जन्म मिलते ही दिव्य बुद्धि में बापदादा ने श्रीमत भर दी। ऑनेस्ट आत्मा उसी श्रीमत के इशारे से नेचुरल सहज चलती रहती है। तो ऑनेस्ट की पहली निशानी – हर सेकण्ड हर कदम श्री मत पर एक्यूरेट चलना। चलते सभी हैं लेकिन चलने में भी अनेक प्रकार की भिन्नता हो जाती है। कोई सहज और तीव्रगति से चलते हैं। क्योंकि उस आत्मा को श्रीमत स्पष्ट सदा स्मृति में रहने के कारण समर्थ है। यह है नम्बरवन ऑनेस्टी। नम्बरवन आत्मा को सोचना नहीं पड़ता कि यह श्रीमत है या नहीं, यह राइट है या रांग है, क्योंकि स्पष्ट है। दूसरी आत्माओं को स्पष्ट न होने के कारण कई बार सोचना पड़ता है। इसलिए तीव्र गति से मध्यम गति हो जाती है। साथ2 कोई सोचता है, कोई थकता है। चलते सभी हैं लेकिन सोचने और थकने वाले सेकेण्ड नम्बर हो जाते हैं। थकते क्यों हैं? चलते-चलते श्रीमत के इशारों में मनमत परमत मिक्स कर देते हैं, इसलिए स्पष्ट और सीधे रास्ते से भटक टेढ़े बांके रास्ते में चले जाते हैं। रिजल्ट में फिर भी वापस लौटना ही पड़ता है। क्योंकि मंज़िल का रास्ता एक ही स्पष्ट सीधा और सहज है। सीधे को टेढ़ा बना देते हैं। तो आप सोचो टेढ़ा चलने वाला कहाँ तक चलेगा, किस स्पीड से चलेगा? और परिणाम क्या होगा? थकना और निराश होकर लौटना। इसलिए सेकेण्ड नम्बर हो जाता है। अनेक सेकेण्ड गँवाया, अनेक श्वास गँवाया, सर्व शक्तियाँ गँवाया, इसलिए सेकेण्ड नम्बर हो गया। सिर्फ इसमें नहीं खुश हो जाना कि हम तो चल रहे हैं। लेकिन अपनी चाल और गति दोनों को चेक करो। तो समझा, ऑनेस्टी किसको कहा जाता है?

ऑनेस्ट आत्मा की और निशानी है – वह कभी किसी भी खज़ाने को वेस्ट नहीं करेगा। सिर्फ स्थूल धन वा खज़ाने की बात नहीं है

लेकिन और भी अनेक खजाने आपको मिले हैं। ऑनेस्ट संगमयुग के समय के खजाने को एक सेकेण्ड भी वेस्ट नहीं करेगा। क्योंकि संगमयुग का एक सेकेण्ड, वर्ष से भी ज्यादा है। जैसे गरीब आत्मा का स्थूल धन आठ आना आठ सौ के बराबर है। क्योंकि आठ आने में सच्चे दिल की भावना आठ सौ से ज्यादा है। ऐसे संगमयुग का समय एक सेकेण्ड इतना बड़ा है। क्योंकि एक सेकेण्ड में पशों जितना जमा होता है। सेकेण्ड गँवाया अर्थात् पशों जितनी कमाई का समय गँवाया। ऐसे ही संकल्प का खजाना, ज्ञान धन का खजाना, सर्व शक्तियों, सर्व गुणों का खजाना वेस्ट नहीं करेंगे। अगर सर्व शक्तियों, सर्व गुणों व ज्ञान को स्व-प्रति वा सेवा-प्रति काम में नहीं लगाया तो इसको भी वेस्ट कहा जायेगा। दाता ने दिया और लेने वाले ने धारण नहीं किया, तो वेस्ट हुआ ना! जो ऑनेस्ट होता है वह सिर्फ धन को प्राप्त कर रख नहीं देता। ऑनेस्ट की निशानी है खजाने को बढ़ाना। बढ़ाने का साधन ही है कार्य में लगाना। अगर ज्ञान-धन को भी समय प्रमाण सर्व आत्माओं के प्रति या स्व की उन्नति के प्रति यूज नहीं करते हो तो खजाना कभी भी बढ़ेगा नहीं। ऑनेस्ट मैनेजर या डायरेक्टर उसको ही कहा जाता है जो कोई भी कार्य में प्रॉफिट करके दिखाये। प्रगति करके दिखाये। ऐसे ही संकल्प के खजाने को, गुणों को, शक्तियों को कार्य में लगाकर प्रॉफिट करने वाले हैं या वेस्ट करने वाले हैं? ऑनेस्ट की निशानी है – वेस्ट नहीं करना, प्रॉफिट करना। अपना तन, मन और स्थूल धन – यह तीनों ही बाप का दिया हुआ खजाना है। आप सबने तन, मन, धन वा वस्तु, जो भी थी वो अर्पण कर दी। संकल्प किया कि सब कुछ तेरा, ऐसा नहीं थोड़ा धन मेरा थोड़ा बाप का, थोड़ा धन किनारे रखें, जेबखर्च रखा है, थोड़ा2 आईवेल के लिए किनारे करके रखा है। आईवेल के लिए किनारे कर रखना यह समझदारी है। जितना ही मेरा होगा उतना ही जहाँ मेरा2 होता वहाँ बहुत बातें हेराफेरी होती हैं। क्योंकि उसको छिपाना पड़ता है ना! भक्ति मार्ग वाले भी समझते हैं- ये मेरे मेरे का फेरा है। इसलिए जब सब कुछ तेरा कह दिया तो कोई भी तन, मन या धन, वस्तु, सिर्फ धन नहीं लेकिन वस्तु भी धन है। वस्तु बनती किससे है? धन से ही बनती है ना, तो कोई भी वस्तु, कोई भी स्थूल धन, कोई भी मन से संकल्प और तन से व्यर्थ कर्म करना या व्यर्थ समय गँवाना तन द्वारा, यह भी वेस्ट में गिना जायेगा। तो ऑनेस्ट तन को भी व्यर्थ के तरफ नहीं लगाते। संकल्प को भी वेस्ट में नहीं लगाते। जहाँ भी रहते हो, चाहे प्रवृत्ति वाले हैं, चाहे सेन्टर वाले हैं, चाहे मधुबन वाले हैं, सबका तन-मन-धन बाप का है वा प्रवृत्ति वाले समझते हैं कि हम समर्पण तो है नहीं तो मेरा ही है। नहीं। यह तो बाप की अमानत है। तो ऑनेस्टी अर्थात् अमानत में कभी भी ख्यानत नहीं करें। वेस्ट करना अर्थात् अमानत में ख्यानत करना। ऑनेस्ट की निशानी वह अमानत में कभी भी ख्यानत कर नहीं सकता। छोटी सी वस्तु को भी वेस्ट नहीं करेगा। कई बार अपने बुद्धि के अलबेलेपन के कारण वा शरीर द्वारा कार्य में अलबेलेपन के कारण छोटी-छोटी वस्तु वेस्ट भी हो जाती है। फिर यह सोचते हैं कि मैंने यह जानबूझ कर नहीं किया, तो हो गया अर्थात् अलबेलापन। चाहे बुद्धि का हो, चाहे शरीर के मेहनत का अलबेलापन हो, दोनों प्रकार का अलबेलापन वेस्ट कर देता है। तो वेस्ट नहीं करना है। एक से दस गुना बढ़ाना है, न कि वेस्ट करना है। जिसको बापदादा सदा एक सलोगन में कहते हैं – कम खर्चा बाला नशीन। ये है बढ़ाना और वो है गँवाना। ऑनेस्ट अर्थात् तन मन और धन को सदा सफल करने वाला। यह है ऑनेस्ट आत्मा की निशानी। तो तपस्वी अर्थात् यह सब ऑनेस्टी की विशेषतायें हर कर्म में प्रयोग में आवे। ऐसे नहीं कि समाया हुआ तो सब हैं, जानते भी सब हैं। लेकिन नहीं, तपस्या, योग का अर्थ ही है प्रयोग में लाना। अगर इन विशेषताओं को प्रयोग में नहीं लाते तो प्रयोगी नहीं, तो योगी भी नहीं। यह सब खजाने बापदादा ने प्रयोग करने के लिए दिये हैं। और जितना प्रयोगी बनेंगे, तो प्रयोगी की निशानी है प्रगति। अगर प्रगति नहीं होती है तो प्रयोगी नहीं। कई आत्मायें ऐसे अपने अन्दर समझती भी हैं कि न आगे बढ़ रहे हैं, न पीछे हट रहे हैं। जैसे हैं, वैसे ही हैं। और कई ऐसे भी कहते हैं कि शुरु में बहुत अच्छे थे, बहुत नशा था अभी नशा कम हो गया है। तो प्रगति हुई या क्या हुआ? उड़ती कला हुई या ठहरती कला हुई तो प्रयोगी बने। ऑनेस्टी का अर्थ ही है प्रगति करने वाला प्रयोगी। ऐसे प्रयोगी बने हो या अन्दर समाकर रखते हो-खजाना अन्दर ही रहे? ऐसे ऑनेस्ट हो?

जो ऑनेस्ट होता है उसके ऊपर बाप का, परिवार का स्वतः ही दिल का प्यार और विश्वास होता है। विश्वास के कारण फुल अधि-कार उसको दे देते हैं। ऑनेस्ट आत्मा को स्वतः ही बाप का वा परिवार का प्यार अनुभव होगा। बड़ों का, चाहे छोटों का, चाहे समान वालों का, विश्वासपात्र अनुभव होगा। ऐसे प्यार के पात्र वा विश्वास के पात्र कहाँ तक बने हैं? यह भी चेक करो। ऐसे चलाओ नहीं कि इसके कारण मेरे में विश्वास नहीं है, तो मैं विश्वासपात्र कैसे बनूँ, अपने को पात्र बनाओ। कई बार ऐसे कहते हैं कि मैं तो अच्छा हूँ लेकिन मेरे में विश्वास नहीं है। फिर उसके कारण लम्बे चौड़े सुनाते हैं। वह तो अनेक कारण बताते भी हैं और कई कारण बनते भी हैं। लेकिन ऑनेस्टी दिल की, दिमाग की भी ऑनेस्टी चाहिए। नहीं तो दिमाग से नीचे ऊपर बहुत करते हैं। तो दिल की भी ऑनेस्टी दिमाग की भी ऑनेस्टी। अगर सब प्रकार की ऑनेस्टी है तो ऑनेस्टी अविश्वास वाले को आज नहीं तो कल विश्वास में ला ही लेगी। जैसे कहावत है सत्य की नांव डूबती नहीं है लेकिन डगमग होती है। तो विश्वास की नांव सत्यता है, ऑनेस्टी है तो डगमग होगी लेकिन अविश्वासपात्र बनना अर्थात् डूबेगी नहीं। इसलिए सत्यता की हिम्मत से विश्वासपात्र बन सकते हो। पहले सुनाया था ना कि सत्य को सिद्ध नहीं किया जाता है। सत्य स्वयं में ही सिद्ध है। सिद्ध नहीं करो लेकिन सिद्ध स्वरूप बन जाओ। तो समय के गति

के प्रमाण अभी तपस्या के कदम को सहज और तीव्र गति से आगे बढ़ाओ। समझा- तपस्या वर्ष में क्या करना है? अभी भी कुछ समय तो पड़ा है। इन सब विधियों को स्वयं में धारण कर सिद्धि स्वरूप बनो। अच्छा-

सर्व ऑनैस्ट आत्माओं को, सदा सर्व खजानों को कार्य में लाते आगे बढ़ाने वाली आत्माओं को, सदा तन-मन-धन को यथार्थ विधि से कार्य में लगाने वाली आत्माओं को, सदा अपने को विश्वास और प्यार के पात्र बनाने वाली आत्माओं को, सदा वेस्ट को बेस्ट में परिवर्तन करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, देश-विदेश में दूर बैठे हुए भी समीप सम्मुख बैठी हुई आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से मुलाकात

गुप नम्बर 1- अपने को सदा मास्टर सर्वशक्तिवान श्रेष्ठ आत्मायें हैं अनुभव करते हो? क्योंकि सर्वशक्तियाँ बाप का खजाना है और खजाना बच्चों का अधिकार है, बर्थ राइट है। तो बर्थ राइट को कार्य में लाना – यह तो बच्चों का कर्तव्य है। और खजाना होता ही किसलिए है? आपके पास स्थूल खजाना भी है, तो किसलिए है? खर्च करने के लिए, कि बैंक में रखने के लिए? बैंक में भी इसीलिए रखते हैं कि ऐसे समय पर कार्य में लगा सकें। काम में लगाने का ही लक्ष्य होता है ना। तो सर्वशक्तियाँ भी जन्म सिद्ध अधिकार हैं ना। जिस चीज पर अधिकार होता है तो उसको स्नेह के सम्बन्ध से, अधिकार से चलाते हैं। एक अधिकार होता है ऑर्डर करना और दूसरा होता है स्नेह का। अधिकार वाले को तो जैसे भी चलाओ वैसे वह चलेगा। सर्वशक्तियाँ अधिकार में होनी चाहिएं। ऐसे नहीं – चार है दो नहीं है, सात है एक नहीं है। अगर एक भी शक्ति कम है तो समय पर धोखा मिल जायेगा। सर्व शक्तियाँ अधिकार में होंगी तभी विजयी बन नम्बर वन में आ सकेंगे। तो चेक करो सर्व शक्तियाँ कहाँ तक अधिकार में चलती हैं। हर शक्ति समय पर काम में आती है या आधा सेकेण्ड के बाद कार्य में आती है। सेकेण्ड के बाद भी हुआ तो सेकेण्ड में फेल तो कहेंगे ना। अगर पेपर में फाइनल मार्क्स में दो मार्क भी कम है तो फेल कहेंगे ना। तो फेल वाला फुल तो नहीं हुआ ना? तो हर परिस्थिति में अधिकार से शक्ति से यूज करो, हर गुण को यूज करो। जिस परिस्थिति में धैर्यता चाहिए तो धैर्यता के गुण को यूज करो। ऐसा नहीं थोड़ा सा धैर्य कम हो गया। नहीं। अगर कोई दुश्मन वार करता है और एक सेकेण्ड भी कोई पीछे हो गया तो विजय किसकी हुई? इसीलिए ये दोनों चेकिंग करो। ऐसे नहीं सर्वशक्तियाँ तो हैं लेकिन समय पर यूज नहीं कर सकते। कोई बढ़िया चीज दे और उसको कार्य में लगाने नहीं आये तो उसके लिए वह बढ़िया चीज भी क्या होगी? काम की तो नहीं रही ना। तो सर्वशक्तियाँ यूज करने का बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। यदि बहुतकाल से कोई बच्चा आपकी आज्ञा पर नहीं चलता तो समय पर क्या करेगा? धोखा ही देगा ना। तो यह सर्वशक्तियाँ भी आपकी रचना है। रचना को बहुत काल से कार्य में लगाने का अभ्यास करो। हर परिस्थिति से अनुभवी तो हो गये ना। अनुभवी कभी दुबारा धोखा नहीं खाते। तो हर समय स्मृति से तीव्र गति से आगे बढ़ते चलो। सभी तपस्या की रेस में अच्छी तरह से चल रहे हो ना। सभी प्राइज लेंगे ना। सदा खुशी खुशी से सहज उड़ते चलो। मुश्किल है नहीं, मुश्किल बनाओ नहीं। कमजोरी मुश्किल बनाती है। सदा मुश्किल को सहज करते उड़ते रहो। अच्छा।

गुप नं. 3- सभी अपने को स्वदर्शन चक्रधारी श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? सिर्फ स्व का दर्शन किया तो सृष्टि चक्र का स्वतः ही हो जायेगा। आत्मा को जाना तो आत्मा के चक्र को सहज ही जान गये। वैसे तो 5000 वर्ष का विस्तार है। लेकिन आप सबके बुद्धि में विस्तार का सार आ गया। सार क्या है? कल और आज- कल क्या थे, आज क्या है और कल क्या बनेंगे। इसमें सारा चक्र आ गया ना। कल और आज का अन्तर देखो कितना बड़ा है! कल कहाँ थे और आज कहाँ हैं, रात और दिन का अन्तर है। तो जब विस्तार का सार आ गया तो सार को याद करना सहज होता है ना। कल और आज का अन्तर देखते कितनी खुशी होती है! बेहद की खुशी है? ऐसे नहीं आज थोड़ी खुशी कम हो गई, थोड़ा सा उदास हो गये। उदास कौन होता है? जो माया का दास बनता है। क्या करें, कैसे करें, ये क्वेश्चन आना माना उदास होना। जब भी क्यों का क्वेश्चन आता है – क्यों हुआ, क्यों किया तो इससे सिद्ध है कि चक्र का ज्ञान पूरा नहीं है। अगर ड्रामा के राजा को जान जाये तो क्यों क्या का क्वेश्चन उठ नहीं सकता। जब स्वयं भी कल्याणकारी और समय भी कल्याणकारी है तो यह क्या.. का क्वेश्चन उठ सकता है? तो ड्रामा का ज्ञान और ड्रामा में भी समय का ज्ञान इसकी कमी है तो क्यों और क्या का क्वेश्चन उठता है। तो कभी उठता है कि क्या यह मेरा ही हिसाब है.. मेरा ही कड़ा हिसाब है दूसरे का नहीं... कितना भी कड़ा हो लेकिन योग की अग्नि के आगे कितना भी कड़ा हिसाब क्या है! कितना भी लोहा कड़ा हो लेकिन तेज आग के आगे मोम बन जाता है। कितनी भी कड़ी परीक्षा हो, हिसाब किताब हो, कड़ा बन्धन हो लेकिन योग अग्नि के आगे कोई बात कड़ी नहीं, सब सहज है। कई आत्मायें कहती हैं – मेरे ही शरीर का हिसाब है और किसका नहीं.. मेरे को ही ऐसा परिवार मिला है.. मेरे को ही ऐसा काम मिला है.. ऐसे साथी मिले हैं.. लेकिन जो हो रहा है वह बहुत अच्छा। यह कड़ा हिसाब शक्तिशाली बना देता है। सहन शक्ति को बढ़ा देता है। तेज आग के आगे कोई भी चीज परिवर्तन न हो – यह हो ही नहीं सकता। तो यह कभी नहीं कहना - कड़ा हिसाब है। कमजोरी ही सहज को मुश्किल बना देती है। ईश्वरीय शक्ति का बहुत बड़ा महत्व है। तो सदा स्व को देखो, स्वदर्शन चक्रधारी बनो। और बातों में जाना, औरों को देखना माना गिरना और बाप को देखना,

बाप का सुनना अर्थात् उड़ना। स्वदर्शन चक्रधारी हो या परदर्शन चक्रधारी हो? यह प्रकृति भी पर है, स्व नहीं है। अगर प्रकृति की तरफ भी देखते हैं तो परदर्शनधारी हो गये। बॉडी कॉन्शासनेस होना माना परदर्शन और आत्म अभिमानी होना माना स्वदर्शन। परदर्शन के चक्र में आधाकल्प भटकते रहे ना। संगमयुग है स्वदर्शन करने का युग। सदा स्व के तरफ देखने वाले सहज आगे बढ़ते हैं। अच्छा।

बापदादा ने सभी बच्चों को क्रिसमस दिन की इन एडवांस मुबारक दी

दुनिया वाले क्रिसमस का दिन मनाते हैं, उसको कहते हैं – बड़ा दिन। वह तो है हृद के चक्कर के हिसाब से लेकिन आप सबका बड़ा युग संगमयुग चल रहा है। आयु के हिसाब से सबसे छोटा सा युग है लेकिन प्राप्तियों के हिसाब से सबसे बड़े से बड़ा युग संगमयुग है। तो संगमयुग अर्थात् बड़े से बड़े युग की भी मुबारक हो। उन्हीं को तो एक दिन के लिए क्रिसमस फादर आकर गिफ्ट देते हैं लेकिन आपको सदा के लिए गॉड फादर गोल्डन वर्ल्ड की गिफ्ट देते हैं। जो एक दिन नहीं, थोड़े समय के लिए गिफ्ट नहीं है लेकिन अनेक जन्मों की जन्म-जन्म की गिफ्ट है। तो कितना बड़ा दिन हो गया! वा बड़ा युग हो गया! बड़े से बड़े युग का हर दिन बड़ा दिन है। और मनाते कौन है? बड़े से बड़े बाप के बड़े से बड़े बच्चे, बड़े दिल से, बड़े युग का, बड़ा दिन सदा मनाते रहे हैं। वर्ष के हिसाब से तो एक दिन का उत्सव मनाने का दिन है। कल्प के हिसाब से आप सबके लिए बड़ा युग मनाने का भाग्य है। यह सबसे बड़े से बड़ा उत्सव है। हर दिन उत्सव का दिन है। तो बड़ा युग हो गया ना! क्रिसमस के दिन वो नाचेंगे-गायेंगे-खायेंगे। लेकिन उन्हीं का नाचना, उन्हीं का गाना, उन्हीं का मनाना और आप सबका मनाना कितना रात-दिन का अन्तर है! इसलिए बड़े युग में बड़े दिन की मुबारक और वर्ष के हिसाब से क्रिसमस के दिन की मुबारक। सभी डबल विदेशी अपने-अपने प्रति क्रिसमस की वा नये वर्ष की मुबारक बाप द्वारा स्वीकार करें। बच्चे ग्रीटिंग्स के कार्ड भेजते हैं और बापदादा ग्रीटिंग्स कार्ड के रिटर्न में श्रेष्ठ भाग्य का रिकॉर्ड नूँध रहा है। इसलिए सभी कार्ड भेजने वालों को पद्मगुणा रिटर्न में मुबारक हो। सभी अपने-अपने नाम से याद-प्यार स्वीकार करें। भारत वाले और विदेश वाले दोनों को मुबारक।

दादी जी से - बाप की सृष्टि में भी आप हैं और दृष्टि में भी आप हैं। अपनी सखी जनक को यादप्यार भेजो। यही कहना कि शरीर और सेवा दोनों को सम्भालने का बैलेन्स रखे। अटेंशन रखना क्योंकि आगे भी समय नाजुक आयेगा। शरीर नाजुक होते जायेंगे और सेवा अधिक होती जायेगी। अभी शरीर से बहुत काम लेना है। अच्छा। ओम् शान्ति।

यथार्थ चार्ट का अर्थ है - प्रगति और परिवर्तन

नव वर्ष पर अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले :

आज बापदादा अपने विश्व नव-निर्माता बच्चों को देख रहे हैं। आज के दिन नये वर्ष के आरम्भ को दुनिया में चारों ओर मनाते हैं। लेकिन वो मनाते हैं नया वर्ष और आप ब्राह्मण आत्माएं नये संगमयुग में हर दिन को नया समझ मनाते रहते हो। वो एक दिन मनाते हैं और आप हर दिन को नया अनुभव करते हो। वो हृद के वर्ष का चक्र है और ये बेहद सृष्टि चक्र का नया संगमयुग है। संगमयुग सारे युगों में सर्व प्रकार की नवीनता लाने का युग है। आप सभी अनुभव करते हो कि संगमयुगी ब्राह्मण जीवन नया जीवन है। नई नॉलेज द्वारा नई वृत्ति, नई दृष्टि और नई सृष्टि में आ गये हो। दिन-रात, हर समय, हर सेकेण्ड नया लगता है। सम्बन्ध भी कितने नये बन गये! पुराने सम्बन्ध और ब्राह्मण सम्बन्ध में कितना अन्तर है! पुराने सम्बन्धों की लिस्ट स्मृति में लाओ कितनी लम्बी है! लेकिन संगमयुगी नये युग के नये सम्बन्ध कितने हैं? लम्बी लिस्ट है क्या? बापदादा और भाई-बहन और कितने निस्वार्थ प्यार के सम्बन्ध हैं! वह है अनेक स्वार्थ के सम्बन्ध। तो नया युग, छोटा सा नया ब्राह्मण संसार ही अति प्यारा है।

दुनिया वाले एक दिन एक दो को मुबारक देते हैं और आप क्या करते हो? बापदादा क्या करते हैं? हर सेकेण्ड, हर समय, हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना की मुबारक देते हैं। जब भी किसी को, किसी भी उत्सव के दिन की मुबारक देते हैं तो क्या कहते हैं? खुश रहो, सुखी रहो, शक्तिशाली रहो, तन्दरुस्त रहो। तो आप हर समय क्या सेवा करते हो? आत्माओं को नई जीवन देते हो। आप सबको भी बापदादा ने नई जीवन दी है ना! और इस नई जीवन में यह सभी मुबारकें सदा के लिए मिल ही जाती हैं। आप जैसे खुशनसीब, खुशी के खज़ानों से सम्पन्न, सदा सुखी और कोई हो सकता है! इस नवीनता की विशेषता आपके देवताई जीवन में भी नहीं है। तो हर समय स्वतः ही बापदादा द्वारा मुबारक, बधाइयाँ वा ग्रीटिंग्स मिलती ही रहती हैं। दुनिया वाले नाचेंगे, गायेंगे और कुछ खायेंगे। और आप क्या करते हो? हर सेकेण्ड नाचते और गाते रहते हो और हर रोज ब्रह्मा भोजन खाते रहते हो। लोग तो खास पार्टीज़ अरेंज करते हैं और आपकी सदा ही संगठन की पार्टीज़ होती रहती हैं। पार्टीज़ में मिलन होता है ना। आप ब्राह्मणों की अमृतवेले से पार्टी शुरु हो जाती है। पहले बापदादा से मनाते हो, एक में अनेक सम्बन्ध और स्वरूपों से मनाते हो। फिर आपस में ब्राह्मण जब क्लास करते हो तो संगठन में मिलन मनाते हो ना, और मुरली सुनते-सुनते नाचते हो, गाते हो। और हर

समय उत्साह भरे जीवन में उड़ते रहते हो। ब्राह्मण जीवन का श्वास ही है उत्साह। अगर उत्साह कम होता है तो ब्राह्मण जीवन के जीने का मजा नहीं होता है। जैसे शरीर में भी श्वास की गति यथार्थ चलती है तो अच्छी तन्दरुस्ती मानी जाती है। अगर कभी बहुत तेज गति से चले, कभी स्लो हो जाये तो तन्दरुस्ती नहीं मानी जायेगी ना। ब्राह्मण जीवन अर्थात् उत्साह, निराशा नहीं। जब सर्व आशाएं पूर्ण करने वाले बाप के बन गये तो निराशा कहाँ से आई? आपका आक्युपेशन ही है निराशावादी को आशावादी बनाना। यही सेवा है ना! यह तो दुनिया के हृद के चक्कर अनुसार आप भी दिन को महत्व दे रहे हो लेकिन वास्तव में आप सब ब्राह्मण आत्माओं का संगमयुग ही नवीनता का युग है। नई दुनिया भी इस समय बनाते हो। नई दुनिया का ज्ञान इस समय ही आप आत्माओं को है। वहाँ नई दुनिया में नये-पुराने का नॉलेज नहीं होगा। नये युग में नई दुनिया स्थापन कर रहे हो।

सभी ने तपस्या वर्ष में तपस्या द्वारा अपने में अलौकिक नवीनता लाई है? कि वही पुरानी चाल है? पुरानी चाल कौन सी है? योग अच्छा है, अनुभव भी अच्छे होते हैं, आगे भी बढ़ रहे हैं, धारणा में भी बहुत फर्क है, अटेन्शन भी बहुत अच्छा है, सेवा में भी वृद्धि अच्छी है.. लेकिन, लेकिन का पूंछ लग जाता है। कभी-कभी, ऐसा हो जाता है। यह कभी कभी का पूंछ कब तक समाप्त करेंगे? तपस्या वर्ष में यही नवीनता लाओ। पुरुषार्थ वा सेवा के सफलता की, सन्तुष्टता की परसेन्टेज कभी बहुत ऊंची, कभी नीची- इसमें सदा श्रेष्ठ परसेन्टेज की नवीनता लाओ। जैसे आजकल के डॉक्टर्स ज्यादा क्या चेक करते हैं? सबसे ज्यादा आजकल ब्लड प्रेशर बहुत चेक करते हैं। अगर ब्लड का प्रेशर कभी बहुत ऊंचा हो, कभी नीचा चला जाये तो क्या होगा? तो बापदादा पुरुषार्थ का प्रेशर देखते हैं, बहुत अच्छा जाता है, लेकिन कभी कभी जम्प मारता है। यह कभी कभी का शब्द समाप्त करो। अभी तो सभी इनाम लेने की तैयारी कर रहे हो ना? इस सारी सभा में ऐसे कौन हैं जो समझते हैं कि हम इनाम के पात्र बने हैं? कभी कभी वाले इनाम लेंगे?

इनाम लेने के पहले यह विशेषता देखो कि इन 6 मास के अन्दर तीन प्रकार की सन्तुष्टता प्राप्त की है? पहला- स्वयं अपना साक्षी बन चेक करो- स्व के चार्ट से, स्वयं सच्चे मन, सच्चे दिल से सन्तुष्ट हैं?

दूसरा- जिस विधि-पूर्वक बापदादा याद के परसेन्ट को चाहते हैं, उस विधि-पूर्वक मन-वचन-कर्म और सम्पर्क में सम्पूर्ण चार्ट रहा? अर्थात् बाप भी सन्तुष्ट हो।

तीसरा- ब्राह्मण परिवार हमारे श्रेष्ठ योगी जीवन से सन्तुष्ट रहा? तो तीनों प्रकार की सन्तुष्टता अनुभव करना अर्थात् प्राइज़ के योग्य बनना। विधि-पूर्वक आज्ञाकारी बन चार्ट रखने की आज्ञा पालन की? तो ऐसे आज्ञाकारी को भी मार्क्स मिलती है। लेकिन सम्पूर्ण पास मार्क्स उनको मिलती है जो आज्ञाकारी बन चार्ट रखने के साथ2 पुरुषार्थ की विधि और वृद्धि की भी मार्क्स लें। जिन्होंने इस नियम का पालन किया है, जो एक्यूरेट रीति से चार्ट लिखा है, वह भी बापदादा द्वारा, ब्राह्मण परिवार द्वारा बधाइयाँ लेने के पात्र हैं। लेकिन इनाम लेने योग्य सर्व के सन्तुष्टता की बधाइयाँ लेने वाला पात्र है। यथार्थ तपस्या की निशानी है कर्म, सम्बन्ध और संस्कार – तीनों में नवीनता की विशेषता स्वयं भी अनुभव हो और औरों को भी अनुभव हो। यथार्थ चार्ट का अर्थ है हर सब्जेक्ट में प्रगति अनुभव हो, परिवर्तन अनुभव हो। परिस्थितियाँ व्यक्ति द्वारा या प्रकृति द्वारा या माया द्वारा आना यह ब्राह्मण जीवन में आना ही है। लेकिन स्व-स्थिति की शक्ति ने परिस्थिति के प्रभाव को ऐसे ही समाप्त किया जैसे एक मनोरंजन की सीन सामने आई और गई। संकल्प में परिस्थिति के हलचल की अनुभूति न हो। याद की यात्रा सहज भी हो और शक्तिशाली भी हो। पावरफुल याद एक समय पर डबल अनुभव कराती है। एक तरफ याद अग्नि बन भस्म करने का काम करती है, परिवर्तन करने का काम करती है और दूसरे तरफ खुशी और हल्केपन का अनुभव कराती है। ऐसे विधि-पूर्वक शक्तिशाली याद को ही यथार्थ याद कहा जाता है। फिर भी बापदादा बच्चों के उमंग और लगन को देख खुश होते हैं। मैजारिटी को लक्ष्य अच्छा स्मृति में रहा है। स्मृति में अच्छे नम्बर लिये हैं। स्मृति के साथ समर्थी, उसमें नम्बरवार हैं। स्मृति और समर्थी, दोनों साथ2 रहना – इसको कहेंगे नम्बरवन प्राइज़ के योग्य। स्मृति सदा हो और समर्थी कभी कभी वा परसेन्टेज में रहना – इसको नम्बरवार की लिस्ट में कहेंगे। समझा। एक्यूरेट चार्ट रखने वालों के भी नामों की माला बनेगी। अभी भी बहुत नहीं तो थोड़ा समय तो रहा है, इस थोड़े समय में भी विधि-पूर्वक पुरुषार्थ की वृद्धि कर अपने मन-बुद्धि-कर्म और सम्बन्ध को सदा अचल-अडोल बनाया तो इस थोड़े समय के अचल-अडोल स्थिति का पुरुषार्थ आगे चलकर बहुत काम में आयेगा और सफलता की खुशी स्वयं भी अनुभव करेंगे और औरों द्वारा भी सन्तुष्टता की दुआएं प्राप्त करते रहेंगे। इसलिए ऐसे नहीं समझना कि समय बीत गया, लेकिन अभी भी वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ बना सकते हो।

अभी भी विशेष स्मृति मास एक्स्ट्रा वरदान प्राप्त करने का मास है। जैसे तपस्या वर्ष का चांस मिला ऐसे स्मृति मास का विशेष चांस है। इस मास के 30 दिन भी अगर सहज, स्वतः, शक्तिशाली, विजयी आत्मा का अनुभव किया, तो यह भी सदा के लिए नेचुरल संस्कार बनाने की गिफ्ट प्राप्त कर सकते हो। कुछ भी आवे, कुछ भी हो जाये, परिस्थिति रूपी बड़े ते बड़ा पहाड़ भी आ जाये, संस्कार टक्कर खाने के बादल भी आ जायें, प्रकृति भी पेपर ले, लेकिन अंगद समान मन-बुद्धि रूपी पांव को हिलाना नहीं,

अचल रहना। बीती में अगर कोई हलचल भी हुई हो उसको संकल्प में भी स्मृति में नहीं लाना। फुल स्टॉप लगाना। वर्तमान को बाप समान श्रेष्ठ, सहज बनाना और भविष्य को सदा सफलता के अधिकार से देखना। इस विधि से सिद्धि को प्राप्त करना। कल से नहीं, अभी से करना। स्मृति मास के थोड़े समय को बहुत काल का संस्कार बनाओ। यह विशेष वरदान विधि-पूर्वक प्राप्त करना। वरदान का अर्थ यह नहीं कि अलबेले बनो। अलबेला नहीं बनना, लेकिन सहज पुरुषार्थी बनना। अच्छा-

अच्छा- कुमारियों का संगठन बैठा है। आगे बैठने का चांस मिला क्यों मिला है? सदा आगे रहना है इसलिए यह आगे बैठने का चांस मिला है। समझा! पका हुआ फल बनके निकलना, कच्चा नहीं गिर जाना। सभी पढ़ाई पूरी कर सेन्टर पर जायेंगी या घर में जायेंगी? अगर मां बाप कहे आओ तो क्या करेंगी? अगर अपनी हिम्मत है तो कोई किसको रोक नहीं सकता है। थोड़ा2 आकर्षण होगा तो रोकने वाले रोकेंगे।

अच्छा- नव वर्ष मनाने के लिए सभी भागकर आ गये। नया वर्ष मनाना अर्थात् हर समय को नया बनाना। हर समय अपने में रूहानी नवीनता को लाना है।

अच्छा- चारों ओर के सभी स्नेही और सहयोगी बच्चे भी आज के दिन के महत्व को जान विशेष दिल से या पत्रों से या कार्डों द्वारा विशेष याद कर रहे हैं और बापदादा के पास पोस्ट करने के पहले ही पहुँच जाता है। लिखने के पहले ही पहुँच जाता है। संकल्प किया और पहुँच गया। इसलिए कई बच्चों के सहयोगियों के कार्ड पीछे पहुँचेंगे लेकिन बापदादा पहले से ही सभी को नये युग में नये दिन मनाने की मुबारक दे रहे हैं। जैसे कोई विशेष प्रोग्राम होता है ना तो आजकल के लोग क्या करते हैं? अपना टी.वी. खोलकर बैठ जाते हैं। तो सभी रूहानी बच्चे अपने बुद्धि का दूरदर्शन का स्विच ऑन करके बैठे हैं। बापदादा चारों ओर के मुबारक-पात्र बच्चों को हर सेकेण्ड की मुबारक की दुआएं रेसपॉन्ड में दे रहे हैं। हर समय की याद और प्यार यही दुआएं बच्चों के दिल की उमंग-उत्साह को बढ़ाती रहती हैं। तो सदा स्वयं को सहज पुरुषार्थी और सदा पुरुषार्थी, सदा विधि से वृद्धि को प्राप्त करने वाले योग्य आत्माएं बनाए उड़ते रहो।

ऐसे सदा वर्तमान को बाप समान बनाने वाले और भविष्य को सफलता स्वरूप बनाने वाले श्रेष्ठ बधाइयों के पात्र आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टीयों से मुलाकात

ग्रुप नं. 1- भारत देश की महानता किसके कारण है? आप लोगों के कारण है। क्योंकि देश महान बनता है महान आत्माओं द्वारा। तो भारत की सर्व महान आत्माओं में से महान कौन? आप हैं कि दूसरे हैं? इतनी महान आत्मायें हैं जो अब चक्कर के समाप्ति में भी भारत महान, आप महान आत्माओं के कारण गाया जाता है। और कोई भी देश में इतनी महान आत्माओं का गायन या पूजन नहीं होता। चाहे कितने भी नामीग्रामी धर्मात्माएं हो गई हों या राजनेतायें होकर गये हों वा आजकल के जमाने के हिसाब से वैज्ञानिक भी नामीग्रामी हैं लेकिन किसी भी देश में उस देश की इतनी महान आत्माओं के मन्दिर हों, यादगार हों, पूजन हो, गायन हो – वह कहाँ भी नहीं होगा। चाहे विज्ञान में विदेश बहुत आगे है लेकिन गायन और पूजन में नहीं है। वैज्ञानिकों का या राजनीतिज्ञों का गायन भी होता है लेकिन उस गायन और देवात्माओं के गायन में कितना अन्तर है! ऐसा गायन वहाँ नहीं होता। तो इतनी भारत की महानता बढ़ाने वाले हम महान आत्मायें हैं – यह नशा कितना श्रेष्ठ है! यहाँ गली- गली में मन्दिर देखेंगे। तो इतना नशा सदा स्मृति में रखो। सुनाया ना आज कि कभी-कभी का भी शब्द समाप्त करो। अगर कभी-कभी बहुत अच्छे और कभी-कभी हलचल, तो आपके यादगार का पूजन भी कभी-कभी होगा। कई मन्दिरों में हर समय पूजन होता है, हर दिन होता है और कहाँ-कहाँ जब कोई तिथि- तारीख आती है तब होता है। तो कभी-कभी हो गया ना। लेकिन किसका सदा होता है, किसका कभी-कभी, क्यों होता है? क्योंकि इस समय के पुरुषार्थ में जो कभी-कभी लाता है उसका पूजन भी कभी-कभी होता है। जितना यहाँ विधिपूर्वक अपना श्रेष्ठ जीवन बनाते हैं उतना ही विधिपूर्वक पूजा होती है। तो मैं कौन? यह हरेक स्वयं से पूछे। अगर दूसरा कोई आपको कहेगा कि आपका पुरुषार्थ तेज नहीं लगता तो मानेंगे? या उसको इस बात से हटाने की कोशिश करेंगे। लेकिन अपने आपको तो जो हो जैसे हो वैसे जान सकते हो। इसलिए सदा अपने विधिपूर्वक पुरुषार्थ में लगे रहो। ऐसा नहीं कहे – पुरुषार्थ तो है ही। पुरुषार्थ का प्रत्यक्ष स्वरूप अनुभव हो, दिखाई दे। ऐसे महान हो! भारत की महिमा को सुनते क्या सोचते हो? यह किसकी महिमा हो रही है? ऐसे महान अनेक बार बने हो तब तो गायन होता है। अब उसको रिपीट कर रहे हैं। बने थे और बनना ही है। सिर्फ रिपीट करना है। तो सहज है ना। चाहे सम्पर्क में आते हो, चाहे स्व के प्रति कर्म करते हो, दोनों में सहज हो। भारीपन न हो। जो मुश्किल काम होता है वह भारी होता है। भारी के कारण ही मुश्किल होता है और जहाँ सहज होगा वहाँ हल्कापन होगा। तो डबल लाइट हो या सिंगल लाइट? चाहे व्यवहार हो, चाहे परमार्थ हो, व्यवहार में भी सहज, परमार्थ माना अपना पुरुषार्थ उसमें भी सहज। लौकिक में भी सहज, अलौकिक में भी सहज, बोझ नहीं। ऐसे हो या प्रवृत्ति का थोड़ा बोझ है? अगर मेरी प्रवृत्ति समझते हो तो बोझ है। मेरा-मेरा माना बोझ और तेरा-तेरा अर्थात् हल्का। संगमयुग है ही खुशियों का युग। तो जब खुशी में कोई भी होता है तो मन हल्का होता है।

कोई अल्पकाल की खुशी में भी होंगे तो उस समय हल्कापन होगा। अगर भारीपन होगा तो खुशी में नहीं रहेगा। आर्टिफिशल खुशी की और बात है। तो सदा खुशी में रहने वाले हो ना। यह स्मृति रखो कि हमारे जैसा महान न कोई बना है, न बनेगा! वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य!

ग्रुप नं. 2- अपने को सदा सर्व खजानों से सम्पन्न आत्माएं अनुभव करते हो? कितने खजाने मिले हैं? खजानों को अच्छी तरह से सम्भालना आता है या कभी-कभी अन्दर से निकल जाता है? क्योंकि आप आत्माएं भी बाप द्वारा नालेजफुल बनने के कारण बहुत होशियार हो लेकिन माया भी कम नहीं है। वो भी शक्तिशाली बन सामना करती है। तो सर्व खजाने सदा भरपूर रहे और दूसरा जिस समय जिस खजाने की आवश्यकता हो उस समय वो खजाना कार्य में लगा सको। खजाना है लेकिन टाइम पर अगर कार्य में नहीं लगा सके तो होते हुए भी क्या करेंगे? जो समय पर हर खजाने को काम में लगाता है उसका खजाना सदा और बढ़ता जाता है। तो चेक करो कि खजाना बढ़ता जाता है कि सिर्फ यही सोच करके खुश हो कि बहुत खजाने हैं। फिर ऐसे कभी नहीं कहो कि चाहते तो नहीं थे लेकिन हो गया। ज्ञानी की विशेषता है – पहले सोचे फिर कर्म करे। ज्ञानी- योगी तू आत्मा को समय प्रमाण टच होता है और वह फिर कैच करके प्रैक्टिकल में लाता है। एक सेकेण्ड भी पीछे सोचा तो ज्ञानी तू आत्मा नहीं कहेंगे।

ग्रुप नं. 3- सदा बाप की ब्लैसिंग स्वतः ही प्राप्त होती रहे – उसकी विधि क्या है? ब्लैसिंग प्राप्त करने के लिए हर समय, हर कर्म में बैलेन्स रखो। जिस समय कर्म और योग दोनों का बैलेन्स होता है तो क्या अनुभव होता है? ब्लैसिंग मिलती है ना। ऐसे ही याद और सेवा दोनों का बैलेन्स है तो सेवा में सफलता की ब्लैसिंग मिलती है। अगर याद साधारण है और सेवा बहुत करते हैं तो ब्लैसिंग कम होने से सफलता कम मिलती है। तो हर समय अपने कर्म-योग का बैलेन्स चेक करो। दुनिया वाले तो यह समझते हैं कि कर्म ही सब कुछ है लेकिन बापदादा कहते हैं कि कर्म अलग नहीं, कर्म और योग दोनों साथ-साथ हैं। ऐसे कर्मयोगी कैसा भी कर्म होगा उसमें सहज सफलता प्राप्त करेंगे। चाहे स्थूल कर्म करते हो, चाहे अलौकिक करते हो। क्योंकि योग का अर्थ ही है मन-बुद्धि की एकाग्रता। तो जहाँ एकाग्रता होगी वहाँ कार्य की सफलता बंधी हुई है। अगर मन और बुद्धि एकाग्र नहीं हैं अर्थात् कर्म में योग नहीं है तो कर्म करने में मेहनत भी ज्यादा, समय भी ज्यादा और सफलता बहुत कम। कर्मयोगी आत्मा को सर्व प्रकार की मदद स्वतः ही बाप द्वारा मिलती है। ऐसे कभी नहीं सोचो कि इस काम में बहुत बिज्जी थे इसलिए योग भूल गया। ऐसे टाइम पर ही योग आवश्यक है। अगर कोई बीमार कहे कि बीमारी बहुत बड़ी है इसीलिए दवाई नहीं ले सकता तो क्या कहेंगे? बीमारी के समय दवाई चाहिए ना। तो जब कर्म में ऐसे बिज्जी हो, मुश्किल काम हो उस समय योग, मुश्किल कर्म को सहज करेगा। तो ऐसे नहीं सोचना कि यह काम पूरा करेंगे फिर योग लगायेंगे। कर्म के साथ-साथ योग को सदा साथ रखो। दिन- प्रतिदिन समस्यायें, सरकम-स्टांश और टाइम होने हैं, ऐसे समय पर कर्म और योग का बैलेन्स नहीं होगा तो बुद्धि जजमेन्ट ठीक नहीं कर सकती। इसलिए योग और कर्म के बैलेन्स द्वारा अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ। समझा। फिर ऐसे नहीं कहना कि यह तो मालूम ही नहीं था – ऐसे भी होता है। यह पहले पता होता तो मैं योग ज्यादा कर लेता। लेकिन अभी से यह अभ्यास करो। जिस आत्मा को बापदादा की बैलेन्स के कारण ब्लैसिंग प्राप्त होती है उसकी निशानी क्या होगी? जो सदा ही बाप की ब्लैसिंग का अनुभव करते रहते हैं उसके संकल्प में भी कभी - यह क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह आश्चर्य की निशानी नहीं होगी। क्या होगा – यह क्वेश्चन भी नहीं उठेगा। सदैव इस निश्चय में पक्का होगा कि जो हो रहा है उसमें कल्याण छिपा हुआ है। क्योंकि कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी बाप है और आप सबका काम भी विश्व कल्याण का है, कल्याण ही समाया हुआ है। बाहर से कितना भी कोई कर्म हलचल का दिखाई दे लेकिन उस हलचल में भी कोई गुप्त कल्याण समाया हुआ होता है और बाप के श्रीमत तरफ, बाप के सम्बन्ध तरफ अटेन्शन खिंचवाने का कल्याण होता है। ब्राह्मण लाइफ में क्या नहीं हो सकता? अकल्याण नहीं हो सकता। इतना निश्चय है या थोड़ा बहुत आयेगा तो हिल जायेंगे? समस्यायें आयें तो मिक्की माउस का खेल तो नहीं करेंगे? मिक्की माउस का खेल देखो भले लेकिन करना नहीं।

तो नये वर्ष का यही वरदान याद रखना है कि सदा बैलेन्स से हर घड़ी ब्लैसिंग लेते हुए उड़ते रहना है और उड़ते रहना है। उड़ती कला वाले हैं, नीचे ऊपर होने वाले नहीं। साइड सीन देखने के लिए नीचे नहीं आना। नीचे आयेंगे ना तो फँस जायेंगे। इसलिए सदा उड़ते रहना। अच्छा।

नया वर्ष प्रारम्भ होते ही रात्रि 12 बजने के तुरन्त बाद बापदादा ने सर्व बच्चों को मुबारक दी

नया वर्ष अर्थात् सदा मुबारक लेने और देने का वर्ष। मास्टर दाता बन हर आत्मा को कोई न कोई शक्ति, गुण, शुभ-भावना, शुभ-कामना देने वाले दाता बनना। लेने का संकल्प नहीं करना। ले और फिर दे उसको दुआएं नहीं कहा जायेगा, उसको बिजनेस कहा जायेगा। तो आप दाता के बच्चे मास्टर दाता हैं, कोई दे, न दे लेकिन आपको देना ही है। अगर कोई ऐसी चीज़ भी आपको दे जो आपको पसन्द नहीं आवे तो क्या करेंगे? उसको स्वीकार नहीं करो यानी अपने पास नहीं रखो। लेकिन उसको दो ज़रूर। ऐसे नहीं उसने कंकड़ दिया तो मैं क्या दूँ? कंकड़ को छोड़ दो लेकिन आप रत्न दे दो। क्योंकि आप रत्नागर बाप के बच्चे हो। तो दुआएं देना और दुआएं लेना – यही विशेष लक्ष्य इस नये वर्ष का हर समय जीवन में लाना है। जैसे गीत गाया ना – पुराने संस्कारों को

विदाई दी, तो आप सबने विदाई दे दी ? अच्छी तरह से उसको टाटा कर दिया या फिर आ जायेंगे ? अच्छा- विदाई की बधाई। जब भी कोई बात आये तो यह वायदा याद करना। मैंने बॉय बॉय कर लिया तो फिर कैसे हाथ मिला सकते हैं। उसको दूर से ही शुभ-भावना शुभ-कामना की दृष्टि दे दो।

ग्रुप नं. 4- सभी फास्ट जाकर फर्स्ट आने वाले हो ना ? नम्बरवन जाने वाली आत्माओं की विशेषता क्या होगी ? जो बाप की विशेष श्रीमत है कि व्यर्थ को देखते हुए भी नहीं देखो, व्यर्थ बातें सुनते हुए भी नहीं सुनो – इस विधि वाला फास्ट और फर्स्ट सिद्धि को प्राप्त कर लेता है। तो ऐसे प्रैक्टिकल धारणा अनुभव होती है या थोड़ा-थोड़ा कभी सुन लेते हो ? कभी देख लेते हो ? तीव्र पुरु-षार्थी के सामने सदा मंजिल होती है। वो यहाँ- वहाँ कभी नहीं देखेगा। सदा मंजिल की ओर देखेगा। फालो किसको करना है ? ब्रह्मा बाप को। क्योंकि ब्रह्मा बाप साकार कर्मयोगी का सिम्बल है। कोई कितना भी बिजी हो लेकिन ब्रह्मा बाप से ज्यादा बिजी और कोई हो ही नहीं सकता। कितनी भी जिम्मेवारी हो लेकिन ब्रह्मा बाप जितनी जिम्मेवारी कोई के ऊपर नहीं है। इसलिए कोई भी कितना भी बिजी हो, कितनी भी जिम्मेवारी हो, लेकिन ब्रह्मा बाप जितना नहीं। तो ब्रह्मा बाप कर्मयोगी कैसे बने ? ब्रह्मा बाप ने अपने को करनहार समझकर कर्म किया, करावनहार नहीं समझा। करावनहार बाप को समझने से जिम्मेवारी बाप की हो जाती है और स्वयं सदा कितने भी कार्य करे, कैसा भी कार्य करे - हल्के रहेंगे। तो आप सबने अपनी बुद्धि की तार बापदादा को दे दी है या कभी-कभी अपने हाथ में ले लेते हो ? चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है और आप निमित्त कर्म क्या करते हो ? डांस कर रहे हो। कितना भी बड़ा कार्य हो लेकिन ऐसे समझो जैसे नचाने वाला नचा रहा है और हम नाच रहे हैं तो थकेंगे नहीं। कन्फ्यूज नहीं होंगे। एवरहेप्पी रहेंगे। इसलिए बापदादा सदा कहते हैं कि सदा नाचो और गाओ। क्योंकि ब्राह्मण जीवन में कोई बोझ नहीं है। ब्राह्मण जीवन अति श्रेष्ठ है। लौकिक जॉब भी करते हो तो डायरेक्शन प्रमाण करते हो, बोझ नहीं है। क्योंकि बाप डायरे-क्शन के साथ-साथ एक्स्ट्रा मदद भी देते हैं। अच्छा - ओम् शान्ति।